विक्रम संवत 2079 ■ आश्विन (क्वॉर)/कार्तिक मास (08) ■ 01 अक्टूबर 2022 ■ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

सभी पाठकों को दीपावली की शुभकामनाएँ

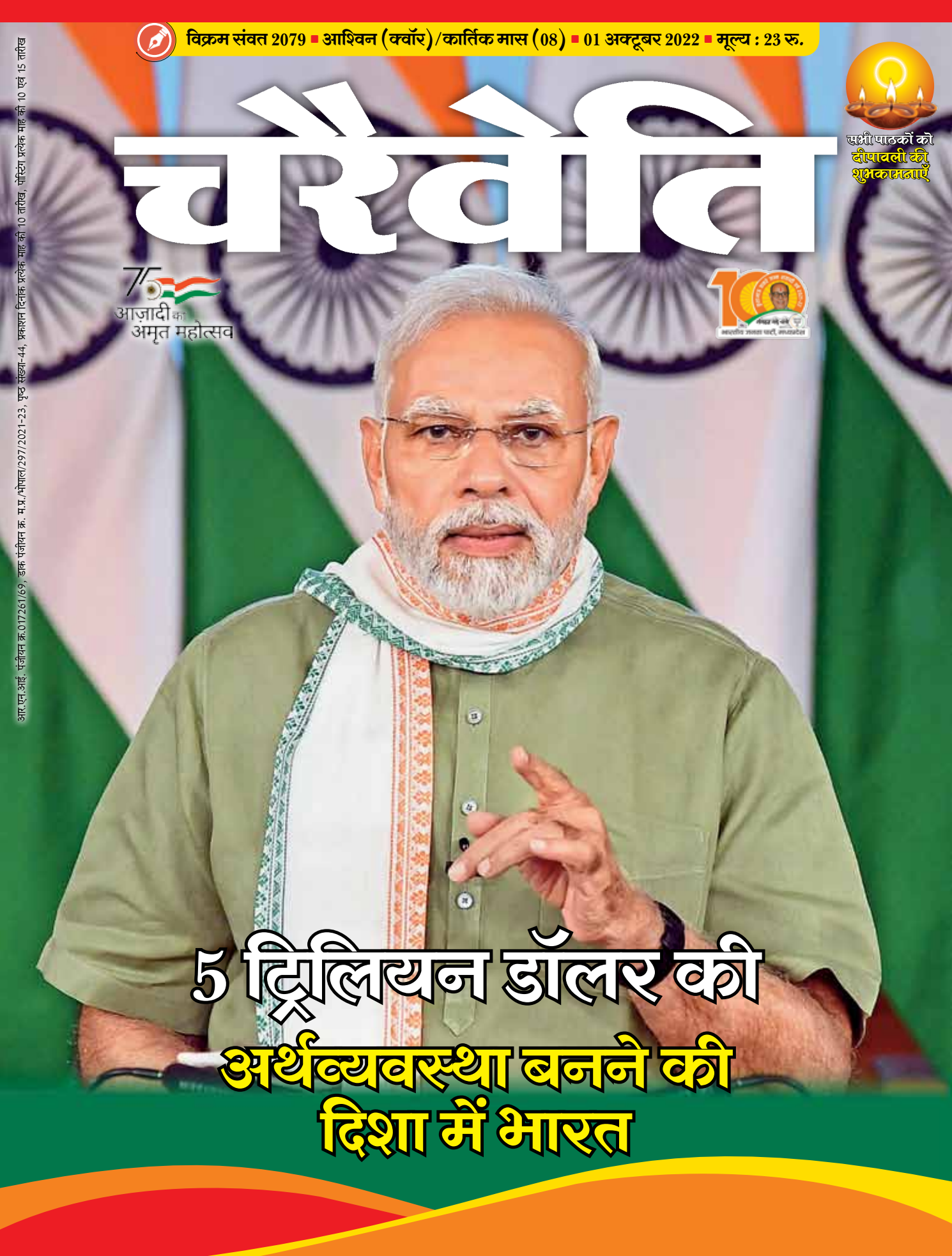

5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में भारत

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्म दिवस के अवसर पर सेवा पखवाड़ा अभियान की शुरुआत की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री आदि शंकर जन्मभूमि क्षेत्रम, कोच्चि,में पूजा-अर्चना की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सिख प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने कोट्टायम (केरल) के पनचिक्कडु दक्षिण मूकाम्बिका मंदिर में पूजा-अर्चना की।

▶ केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने तेलंगाना में 75वें हैदराबाद मुक्ति दिवस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

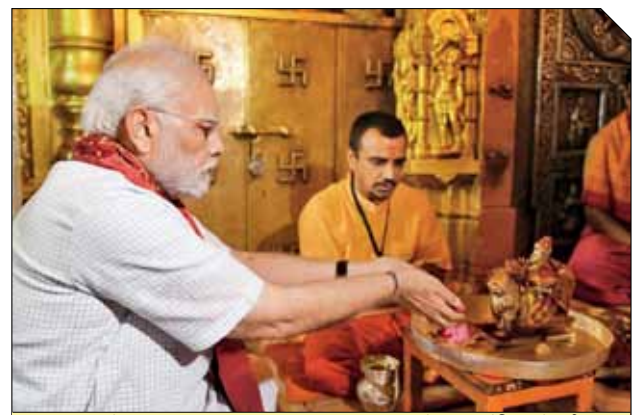

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गुजरात के अंबाजी मंदिर में दर्शन और पूजा-अर्चना की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अहमदाबाद में 36वें राष्ट्रीय खेलों का उद्घाटन किया।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

▪ इकोलॉजी और इकोनॉमी साथ-साथ

कवर स्टोरी ▶ 05-07

▪ 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में भारत...

05

10

20

▪ **जन संवाद से जन भागीदारी :** 08-09
भागीदारी, लोकतंत्र की आधारशिला

▪ **आलेख : शिव प्रकाश** 10-11
जन आकांक्षाओं को पूर्ण करते - प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ...

▪ **आलेख : विष्णुदत्त शर्मा** 12-13
मोदी जी- नये भारत निर्माण के विश्वकर्मा

▪ **कर्तव्य व विश्वास का अमृत :** 14-15
आजादी के अमृतकाल में चीतों का पुनर्वास

▪ **आत्म निर्भर भारत का निर्माण :** 16-18
पंचायत से राष्ट्रपति भवन तक नारी शक्ति का परचम

▪ **शासन व्यवस्था में नए प्रतिमान :** 19
प्रधानमंत्री के संकल्पों को साकार करना है - मुख्यमंत्री श्री चौहान

▪ **अद्भुत इतिहास :** 20
तनोट माँ सभी की रक्षा करती हैं ...

▪ **वैश्विक शक्ति भारत :** 21
पारंपरिक चिकित्सा का भारत ग्लोबल सेंटर

▪ **नए भारत की प्राण प्रतिष्ठा :** 22-24
देश गुलामी की मानसिकता से मुक्त हो रहा है- नरेन्द्र मोदी

▪ **आत्म निर्भर व सशक्त भारत :** 25-27
नए भविष्य का सूर्योदय INS विक्रांत

▪ **भाजपा पर जनता की मोहर :** 28
ऐतिहासिक जीत कार्यकर्ताओं की मेहनत का परिणाम...

▪ **मन की बात :** 29-35
अनुशासन और संयम से सिद्धि की प्राप्ति

▪ **जयंती :** 36-40
» त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति राजमाता विजया राजे सिंधिया
» बारडोली सत्याग्रह की सफलता पर महिलाओं ने सरदार...
» आत्म शुद्धि के बिना अहिंसा का पालन असंभव : गांधीजी
» डॉ. अब्दुल कलाम भारत को महाशक्ति बनाने के लिए हमेशा...

▪ **विचार-प्रवाह :** 41-42
समाज और विचारधारा

मुख्य व्रत-त्यौहार

2. सरस्वती आवान्ह, निशा पूजा 3. दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत 4. दुर्गा नवमी, जवारे विसर्जन 5. विजयादशमी, दशहरा 6. पापांकुशा एकादशी व्रत 7. प्रदोष व्रत 9. शरद पूर्णिमा,कोजागरी व्रत, स्नानदान व्रत पूर्णिमा 13. करवा चौथ, गणेश चतुर्थी व्रत 15. स्कन्द षष्ठी व्रत 17. अहोई अष्टमी व्रत 21. रमा एकादशी, गोवत्स द्वादशी 22. धनतेरस, प्रदोष व्रत 23. रूप (नरक) चतुर्दशी, शिव चतुर्दशी व्रत, छोटी दीपावली 24. दीपावली, केदार गौरी व्रत 25. स्ना. दा. श्रा. अमावस, सूर्यग्रहण 26. अन्नकूट, गोवर्धन, बलि पूजा, गौ क्रीड़ा, चन्द्रदर्शन 27. भाई दोज, यम द्वितीया 28. विनायकी चतुर्थी व्रत 30. पांडव पंचमी, डाला छठ

मुख्य जयंती-दिवस

1. रायबहादुर डॉ. हीरालाल जयंती 2. गांधी जयंती, लालबहादुर शास्त्री जयंती 5. वीरांगना रानी दुर्गावती जयंती 9. म. अजमीढ़, म. दमघोष जयंती, टेकचंद म. समाधि, वीर सीताराम कंवर बलि. एवं असाटी दिवस, सिंगाजी मेला, करम परब 13. विश्व दृष्टि दिवस 25. हिंगोट युद्ध 26. गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती 30. गुरू गोविन्द सिंह पुण्यतिथि 31. सरदार पटेल, संत जलाराम वापा जयंती

वर्ष-54, अंक : 08, भोपाल, अक्टूबर 2022

हमारे प्रेणास्रोत
पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

बिना किसी उद्देश्य या दिशा के जिये गये नीरस जीवन का कोई मतलब नहीं है। जीवन में कुछ बड़ा प्राप्त करने के लिए आपको अपना सर्वस्व दांव पर लगा देना चाहिए और अपने विश्वास के बल पर छलांग लगानी चाहिए।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- पच्चीस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

इकोलॉजी और इकोनॉमी साथ-साथ

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में पूरा विश्व देख रहा है और समझ भी रहा है कि आज भारत के आदर्श अपने हैं, आयाम अपने हैं। आज भारत के संकल्प अपने हैं, लक्ष्य अपने हैं, आज भारत के पथ अपने हैं और प्रतीक भी अपने हैं। इसीलिए गुलामी का प्रतीक राजपथ का अस्तित्व समाप्त होकर कर्तव्य पथ बना है।

नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ती लगी है। सारे भारतवासियों को पूरा भरोसा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गुलामी की मानसिकता के त्याग की यह शुरूआत है अन्त नहीं है।

17 जनवरी को भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन के दिन मध्यप्रदेश के श्योपुर के कूनो में चीतों का आगमन हुआ। मध्यप्रदेश के लिए यह गर्व का विषय रहा की विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपना जन्मदिवस मध्यप्रदेश की धरा पर कूनो और श्योपुर में मनाया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के अभिनव प्रयास से कई वर्षों पहले जैव विविधता की जो पुरानी कड़ी टूट गई थी, पूरी तरह से खत्म हो गई थी, उसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के एतिहासिक निर्णय से उनके जन्म दिवस पर एक बार फिर से जोड़ने का अवसर मिला है। भारत माता की इस पुण्य धरा पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रयासों से चीता फिर से लौट आया है और इन आठ चीतों के साथ जो भविष्य में और बढ़ेंगे भारत की प्रकृति से प्रेम करने वाली सामूहिक चेतना भी पूरी ताकत के साथ जाग उठी है। यह चीते हम भारतवासियों को प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारियों का और भी ज्यादा बोध करायेंगे।

आजादी के अमृतकाल में चीतों का भारत आना देश को नई ऊर्जा का नया संदेश दे रहा है। आजादी के अमृतकाल में कर्तव्य और विश्वास का अमृत हमारी विरासत को, हमारी धरोहर को जीवित कर रहा है और अब भारत की प्राचीन धरोहर चीतों को भी भारत की धरती पर फिर से बसाने का काम हो रहा है। चीतों का मध्य प्रदेश के कूनो अभ्यारण में आना मध्य प्रदेश के लिए भी गौरव व गर्व का विषय है पर इस के साथ-साथ चीतों की रक्षा करना हम सारे देशवासियों की विशेषकर मध्य प्रदेश वासियों की बड़ी जिम्मेवारी है। इन चीतों को यहां पर लाने के लिए बड़ी मेहनत की गई। इसके लिए एक विस्तृत चीता एक्शन प्लान तैयार किया गया। भारत के साथ-साथ साऊथ अफ्रीका और नामीबिया के वैज्ञानिकों ने गहन शोध किया और मिल के काम किया और तब इसके बाद मध्य प्रदेश के कूनो नेशनल पार्क को इन चीतों के पुनर्वास के लिए चुना गया। जिसका परिणाम सबके सामने है कि भारत में चीतों का पहला घर मध्य प्रदेश बना। कूनो नेशनल पार्क में चीतों के आ जाने से इस क्षेत्र में विकास और समृद्धि के रास्ते और ज्यादा खुलेंगे। आज का भारत पूरी दुनिया को यह संदेश दे रहा है कि इकोलॉजी और इकोनॉमी साथ-साथ चल सकती है।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिल्ली में इंडिया गेट के पास राष्ट्र नायक नेताजी श्री सुभाष चन्द्र बोस की विशाल प्रतिमा की स्थापना की। पूरे देश में नई ऊर्जा का संचार हुआ। गुलामी के प्रतीक राजपथ का नाम कर्तव्य पथ करके प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र की सरकार ने एक नये इतिहास का सृजन किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 130 करोड़ से ज्यादा देशवासियों को गुलामी की एक और पहचान से मुक्ति मिल गई। राजपथ अब कर्तव्य पथ हो गया। इसी तरह राष्ट्र नायक नेता जी की प्रतिमा को स्थापित करना अभूतपूर्व है। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की जनता ने आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर अपने लिए पंच प्रणों का विजन रखा है। इन पंच प्रणों में विकास के बहुत बड़े लक्ष्यों का संकल्प है, कर्तव्यों की प्रेरणा है। इसमें भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गुलामी की मानसिकता के त्याग का आव्हान है। अपनी विरासत पर गर्व का बोध है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में पूरा विश्व देख रहा है और समझ भी रहा है कि आज भारत के आदर्श अपने हैं, आयाम अपने हैं। आज भारत के संकल्प अपने हैं, लक्ष्य अपने हैं, आज भारत के पथ अपने हैं और प्रतीक भी अपने हैं। इसीलिए गुलामी के प्रतीक राजपथ का अस्तित्व समाप्त होकर कर्तव्य पथ बना है। नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ती लगी है। सारे भारतवासियों को पूरा भरोसा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गुलामी की मानसिकता के त्याग की यह शुरूआत है अन्त नहीं है। यह निरंतर चलने वाली प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में यात्रा है। इसीलिए देश के प्रधानमंत्री जहां रहते हैं उस जगह का नाम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने बदल कर रेसकोर्स रोड से लोक कल्याण मार्ग कर दिया। आई.एन.एस. विक्रांत जिसने देश को नये विश्वास से भर दिया, देश में एक नया भरोसा पैदा कर दिया, उसी के लोकार्पण के समय भारत की नौ सेना ने गुलामी के निशान को हटा कर छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रतीक को धारण कर लिया।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व और दूर-दृष्टि के कारण यह सारे बदलाव प्रतीकों तक सीमित नहीं हैं। यह सारे के सारे बदलाव देश की नीतियों का भी हिस्सा बन चुके हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रयासों और संकल्पों से देश अंग्रेजों के जमाने से चले आ रहे कई सारे गैर जरूरी कानूनों को या तो खत्म कर चुका है या बदल चुका है। इसी तरह भारतीय बजट, जो विगत कई वर्षों से ब्रिटिश संसद के समय का अनुसरण कर रहा था उसका भी समय और तारीख बदला गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से अब विदेशी भाषा की मजबूरी से देश की युवा पीढ़ी को आजाद किया जा रहा है। आज देश का विचार और व्यवहार गुलामी की मानसिकता से मुक्त हो रहा है। यह मुक्ति प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हमें विकसित भारत के लक्ष्य तक ले कर जायेगी। जल्दी ही भारत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था वाला देश होगा। धरातल पर यह दिखने भी लगा है। जब भारत ने हाल ही में ब्रिटेन को पीछे छोड़ कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने का गौरव प्राप्त किया। मध्यप्रदेश में हाल ही सम्पन्न हुए नगरीय निकाय चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने एक बार फिर ऐतिहासिक विजय को प्राप्त किया है। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में भारत

ज्ञानेन्द्र नाथ बरतरिया

15 अगस्त 2019 को अपना छठा स्वतंत्रता दिवस भाषण देते हुए प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विश्वास व्यक्त किया कि भारत 2024 में 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था होगा। ब्लूमबर्ग के नवीनतम आकलन के अनुसार मार्च 2022 के अंत में भारत यूनाइटेड किंगडम को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। ब्लूमबर्ग का यह निष्कर्ष आईएमएफ डाटाबेस और विनिमय दरों के दीर्घकालिक आंकड़ों पर आधारित है। क्या यह माना जाए कि भारत दुनिया की शीर्ष अर्थव्यवस्था की कतार में शामिल हो गया है? तथ्य यह है कि सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़ों में तुलना के पहले कई सारे संशोधन किए जाते हैं और अंतिम डेटा सामने आने में 2-3 वर्ष लग जाते हैं। अच्छी खबर यह है कि आईएमएफ के नवीनतम अनुमानों के अनुसार भारत एशिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, और अगले 5 वर्षों में इसके जर्मनी को पछाड़ने की संभावना है। 2021 में, भारत की जीडीपी 3.18 ट्रिलियन डॉलर थी, जो यूके के 3.19 ट्रिलियन डॉलर से एक पायदान नीचे थी। इस तरह कुल मिलाकर निष्कर्ष इतना तो स्पष्ट है कि भारतीय अर्थव्यवस्था अन्य अर्थव्यवस्थाओं के बीच का अंतर बड़ी तेजी से पाट रही है। ब्रिटेन में उत्पादन वृद्धि की गति धीमी हो रही है। ब्रेक्सिट से उपजी अनिश्चितता, कोविड से संबंधित व्यवधानों और चल रहे यूक्रेन-रूस युद्ध के कारण भी भारत की अर्थव्यवस्था में हो रही वृद्धि तुलनात्मक ढंग से आगे जा रही है। आईएमएफ ने एक बार भविष्यवाणी की थी कि भारत 2028-2029 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था नहीं बन सकता है। लेकिन फिर उसने अपने पूर्वानुमान पर फिर से विचार किया और संशोधित आकलन के अनुसार, भारत 2026-2027 तक 5 ट्रिलियन

भारत 2024 में 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था होगा। ब्लूमबर्ग के नवीनतम आकलन के अनुसार मार्च 2022 के अंत में भारत यूनाइटेड किंगडम को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। ब्लूमबर्ग का यह निष्कर्ष आईएमएफ डाटाबेस और विनिमय दरों के दीर्घकालिक आंकड़ों पर आधारित है।

2021 में, भारत की जीडीपी 3.18 ट्रिलियन डॉलर थी, जो यूके के 3.19 ट्रिलियन डॉलर से एक पायदान नीचे थी। इस तरह कुल मिलाकर निष्कर्ष इतना तो स्पष्ट है कि भारतीय अर्थव्यवस्था अन्य अर्थव्यवस्थाओं के बीच का अंतर बड़ी तेजी से पाट रही है।

20 दिसम्बर 2019 को नई दिल्ली में एसोचैम के 100 साल पूरे होने के अवसर पर एक समारोह में बोलते हुए प्रधान मंत्री श्री मोदी जी ने कहा कि भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार ने देश को एक (ऐसा) ठोस आधार (उपलब्ध करा) दिया है, जिससे वह 2024 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था होने के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

उन्होंने कहा - "देश ने पिछले पांच वर्षों में खुद को इतना मजबूत बनाया है कि हम इस तरह के लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं और उन्हें हासिल भी कर सकते हैं।"

डॉलर की अर्थव्यवस्था हो जाएगा। माने हम 2026-27 तक 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच सकते हैं। अगर अभी हम 3.3 ट्रिलियन डॉलर पर हैं, तो यह लक्ष्य इतना कठिन भी नहीं है। यदि आप केवल डॉलर के संदर्भ में 10 प्रतिशत नाममात्र जीडीपी वृद्धि मान लें, तो आप 2033-34 तक 10 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच सकते हैं। कैसे? 20 दिसम्बर 2019 को नई दिल्ली में एसोचैम के 100 साल पूरे होने के अवसर पर एक समारोह में बोलते हुए प्रधान मंत्री श्री मोदी जी ने कहा कि भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार ने देश को एक (ऐसा) ठोस आधार (उपलब्ध करा) दिया है, जिससे वह 2024 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था होने के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके। उन्होंने कहा - ''देश ने पिछले पांच वर्षों में खुद को इतना मजबूत बनाया है कि हम इस तरह के लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं और उन्हें हासिल भी कर सकते हैं।'' इससे पहले जुलाई 2019 में आर्थिक सर्वेक्षण ने भारत की 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का खाका प्रस्तुत किया था। वास्तव में आर्थिक सर्वेक्षण 2019 में इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर उपलब्ध है। भारत को अगले पांच वर्षों में 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए बचत, निवेश और निर्यात के ''गुणात्मक चक्र'' की ओर बढ़ना होगा। भारत अगर 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है,तो भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। इसका एक मुख्य जोर सेवा क्षेत्र के योगदान पर होगा, जिससे 3 ट्रिलियन डॉलर के योगदान की अपेक्षा की गई है। मैन्युफैक्चरिंग को 1 ट्रिलियन डॉलर और कृषि को 1 ट्रिलियन डॉलर तक बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। वास्तव में 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था एक राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का आकार है, जिसे वार्षिक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) द्वारा मापा जाता है। जीडीपी किसी अर्थव्यवस्था का एक वर्ष के भीतर सकल घरेलू उत्पाद होता है। इसमें उस अर्थव्यवस्था में उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का कुल मौद्रिक मूल्य होता है।

जीडीपी देशों (की अर्थव्यवस्थाओं) के बीच यह तय करने का एक तरीका है कि कौन की अर्थव्यवस्था बड़ी है और बाकी किस अर्थव्यवस्था का कितना आकार है। 2014 में, भारत की जीडीपी 1.85 ट्रिलियन डॉलर थी। 2018 में, यह 2.7 ट्रिलियन डॉलर है, और भारत दुनिया की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी, जो अब पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हो चुकी है। लेकिन अगर हम विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के साथ तुलना करते हैं, तो इसका अर्थ यह नहीं होता है कि भारतीय दुनिया के छठे या पांचवे सबसे अमीर लोग हैं। उसके लिए हमें प्रति व्यक्ति जीडीपी की तुलना को समझना होगा, जो एक अलग ही मापदंड है। देश की जीडीपी और देश की ''प्रति व्यक्ति जीडीपी'' में किसे कितना महत्व दिया जाए, यह बहस का बिन्दु हो सकता है। हालांकि सत्य यह है कि न तो जीडीपी और न ही प्रति व्यक्ति जीडीपी किसी देश की या समाज की अर्थ व्यवस्था का सही दृश्य प्रस्तुत कर सकते हैं, लेकिन यह भी सच है कि इनके अलावा जो भी मानदंड हैं, वे और भी सीमित और संकुचित हैं। फिर भी प्रति व्यक्ति आय को संबंधित देश में समृद्धि के स्तर की अधिक सटीक तस्वीर माना जाता है। उदाहरण के लिए, जब भारत और यूके की जीडीपी लगभग समान है, तब भी यूके के एक निवासी की औसत आय 2018 में एक औसत भारतीय की आय का 21 गुना थी। लेकिन वास्तव में यह विवाद का विषय नहीं है। किसी जीवंत अर्थव्यवस्था के लिए आगे की ओर कदम बढ़ाने का एक ही अर्थ होता है कि वह हर दिशा में अपने पैर पसारेगी। महत्वपूर्ण यह है कि वह अपने विकास के लिए किस मार्ग का चयन करती है।

जिस देश ने सिर्फ जीडीपी को लक्ष्य माना, और आय के वितरण, उसके पर्यावरणीय प्रभावों से लेकर मानवीय विकास तक के तमाम पहलुओं की अनदेखी की, वह देश एक-दो पीढ़ी बाद ही अपने विकास पर शर्म करने के लिए बाध्य हो जाता है। कई अर्थव्यवस्थाएं अतीत की लूट के आधार पर ''विकसित'' अर्थव्यवस्था बनी हुई हैं। जाहिर है कि यह रास्ता भारत की चिति से मेल खा ही नहीं सकता है। इस संदर्भ में, 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत द्वारा की गई पहल का सिंहावलोकन करना आवश्यक है। सरकार अर्थव्यवस्था को द्रुतगामी बनाने के लिए कई कदम उठा रही है। इसका सबसे पहला चरण है अर्थव्यवस्था में सुधार करना और प्रक्रियाओं का सरलीकरण करना। अगर कराधान क्षेत्र में आयकर, जीएसटी, सीमा शुल्क में करदाताओं के जीवन को सहज बनाने के लिए किए गए उपायों की बात करें, तो आईटी रिटर्न की प्रीफिलिंग, विजया दशमी 2019 से फेसलेस स्क्रूटनी, जीएसटी रिटर्न में कमी और फॉर्म का सरलीकरण किया गया और जीएसटी की रिफंड प्रक्रिया को सरल बनाया गया। करदाताओं से व्यवहार में जोखिम आधारित दृष्टिकोण शुरु किया गया। दूसरा और महत्वपूर्ण पक्ष है श्रम कानूनों का जिसमें श्रमिकों और उद्यमियों- दोनों के हितों को विकास परक रखने का संतुलन आवश्यक है। काम पर रखने में लचीलापन उपलब्ध कराने के लिए निश्चित अवधि के रोजगार का प्रावधान किया गया। ईएसआईसी का अंशदान 6.5 प्रतिशत से घटाकर 4 प्रतिशत किया गया। वेब-आधारित और क्षेत्राधिकार-मुक्त निरीक्षण, जिससे पूरी व्यवस्था में एक पारदर्शिता सुनिश्चित हुई। निरीक्षण रिपोर्ट 48 घंटे के भीतर अपलोड किया जाना अनिवार्य किया गया है। आदतन दुष्टों से निपटने के लिए अपराधों की कंपाउंडिंग की गई। स्टार्ट-अप के लिए स्व-प्रमाणन की व्यवस्था की गई। भारत में उद्योगों के लिए पर्यावरण मंजूरी किसी चुनौती से कम नहीं थी। अब

सरकार आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए खपत बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। सरकार देश की अर्थव्यवस्था को छह वर्ष के निचले स्तरों से बाहर निकाल कर विश्व के उच्चतम स्तर तक लाने में सफल रही है।

इस दिशा में किए गए उपायों में कंपनियों के जोखिम-वापसी में सुधार के लिए कॉर्पोरेट कर में कटौती भी शामिल है। वास्तव में 2019 के आर्थिक सर्वेक्षण में ही निवेश बढ़ाने पर जोर देते हुए भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की जा चुकी है। खपत बढ़ाने के लिए सरकार ने एनबीएफसी और एचएफसी की मदद के लिए कदम उठाए हैं।

सरकार ने एमएसएमई के लिए वायु और जल निकासी की एकल मंजूरी, और एमएसएमई द्वारा कारखाना स्थापित करने के लिए एकल सहमति की व्यवस्था की है। कारपोरेट क्षेत्र में किए गए सुधार बहुत व्यापक हैं। अब कंपनी की शुरुआत करने के लिए मात्र 1 दिन लगता है। नाम आरक्षण और निगमन के लिए केंद्रीय पंजीकरण केंद्र बनाए गए हैं। एकीकृत निगमन प्रपत्र है,16 अपराध धाराओं को मौद्रिक दंड में स्थानांतरित किया गया है।

विलय और अधिग्रहण के लिए तेज और आसान मंजूरी की व्यवस्था की। डिफरेंशियल वोटिंग अधिकार के प्रावधानों में संशोधन किया गया। कंपनी अधिनियम के तहत 14,000 से अधिक अभियोग वापस लिए गए। एमएसएमई और घर के खरीदारों के लिए मददगार संशोधनों के साथ आईबीसी ढांचा सुदृढ़ किया गया। पूंजी बाजार में निवेश को बढ़ावा देने के लिए वित्त (नंबर2) अधिनियम, 2019 द्वारा दीर्घ/अल्पावधि पर लगाया गया इक्विटी शेयरों/इकाइयों के हस्तांतरण से उत्पन्न पूंजीगत लाभ पर बढ़ा हुआ सरचार्ज वापस लिया गया। स्टार्टअप्स और उनके निवेशकों की वास्तविक कठिनाइयों को कम करने के लिए डीपीआईआईटी में पंजीकृत स्टार्टअप्स को आयकर अधिनियम की धारा 56(2)(viib) से मुक्त करने का निर्णय लिया गया। सरकारी क्षेत्र के बैंकों के माध्यम से अतिरिक्त क्रेडिट का विस्तार किया गया। सरकारी क्षेत्र के बैंकों को 70,000 करोड़ रुपये अग्रिम जारी किए गए, जिससे इन बैंकों को 5 लाख करोड़ रुपये की अतिरिक्त ऋण और तरलता उपलब्ध हुई। इस कदम से कॉरपोरेट्स, खुदरा उधारकर्ताओं, एमएसएमई, छोटे व्यापारियों आदि को लाभ हुआ। बुनियादी ढांचे और आवास परियोजनाओं के संवर्धन के लिए, दीर्घकालिक अवधि के वित्त तक पहुंच में सुधार करने के लिए एक संगठन स्थापित किया गया है, जिससे ऐसी परियोजनाओं के लिए ऋण प्रवाह में वृद्धि हो सके। सरकार आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए खपत बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। सरकार देश की अर्थव्यवस्था को छह वर्ष के निचले स्तरों से बाहर निकाल कर विश्व के उच्चतम स्तर तक लाने में सफल रही है। इस दिशा में किए गए उपायों में कंपनियों के जोखिम-वापसी में सुधार के लिए कॉर्पोरेट कर में कटौती भी शामिल है। वास्तव में 2019 के आर्थिक सर्वेक्षण में ही निवेश बढ़ाने पर जोर देते हुए भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की जा चुकी है।

खपत बढ़ाने के लिए सरकार ने एनबीएफसी और एचएफसी की मदद के लिए कदम उठाए हैं। एनबीएफसी/एचएफसी को सरकार ने आंशिक ऋण गारंटी योजना के तहत 4.47 लाख करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की है। इस सहायता में संपत्ति के पूल बायआउट के लिए 1.29 लाख करोड़ रुपये शामिल हैं। 2019 में कैबिनेट की मंजूरी के दो दिनों के भीतर 7,000 करोड़ रुपये से अधिक के 17 प्रस्तावों को मंजूरी दे दी गई। आंशिक ऋण गारंटी योजना के तहत 20,000 करोड़ रुपये के प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। निवेश पक्ष पर, सरकार ने निवेश को बढ़ावा देने, अचल संपत्ति का समर्थन करने, ऋण विस्तार, कॉर्पोरेट कर और बैंक पुर्नपूंजीकरण के लिए कदम उठाए हैं, जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

सुधारों की एक श्रृंखला चलाकर भारत ने विश्व बैंक के व्यापार सुगमता सूचकांक में 65 पदों की छलांग लगाई है। दुनिया का कोई दूसरा बड़ा देश ऐसा नहीं कर पाया है। फिलहाल भारत 190 देशों में 63 वें स्थान पर है, और यह भी माना जाता है कि 50 वें स्थान से आगे निकलना उपयोगी कम और अनुपयोगी ज्यादा हो जाता है। भारत ने शहरीकरण को विकास का एक बड़ा संचालक माना है। वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 75 प्रतिशत से अधिक का योगदान वे शहर ही दे रहे हैं, जो विश्व की भूमि के 5 प्रतिशत से भी कम हिस्से पर बसे हुए हैं। शहरीकरण आर्थिक विकास का केंद्र है। रोचक बात यह है कि शहरीकरण की प्रक्रिया पूरे अमेरिका और यूरोप में समाप्त हो चुकी है और चीन में परिपक्व हो गई है। जबकि भारत में यह प्रक्रिया अभी शुरू हुई है।

अगले 5 दशकों में भारत में उतना शहरीकरण होना है, जो पिछले 500 वर्षों में हुए शहरीकरण से भी अधिक होगा। भारत ने अपने विकास के लिए वैश्वीकरण को भी एक महत्वपूर्ण पक्ष माना है। भारत स्वयं को एक वैश्वीकृत और अन्योन्याश्रित विश्व का अंग मानता है। जापान, कोरिया और चीन जैसे देशों में वैश्वीकरण ने आबादी के बड़े हिस्से को गरीबी की रेखा से ऊपर उठाने में मदद की है। अभी की स्थिति में वैश्विक निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 2 प्रतिशत से भी कम है। इसलिए भारत ने आकार और पैमाने - दोनों स्तरों पर निर्यात को बढ़ावा देने की योजना बनाई है।

5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पहलू देश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी का है। लैंगिक समानता का अर्थव्यवस्था की प्रगति से संबंध ऐसे समझा जा सकता है कि भारत में केवल 26 प्रतिशत महिलाएं काम करती हैं, जबकि वैश्विक औसत 48 प्रतिशत है। अगर आबादी का इतना बड़ा हिस्सा काम नहीं करता है और यदि महिलाओं को सशक्त नहीं बनाया जाता है, तो अगले 3 दशक की अवधि में भारत के लिए उच्च विकास दर प्राप्त करना बहुत कठिन हो जाएगा। यही स्थिति कृषि क्षेत्र की है, जिसमें सुधार करना महत्वपूर्ण ही नहीं, निर्णायक भी है। कृषि क्षेत्र में व्यापक स्तर के संरचनात्मक सुधारों के बिना टिकाऊ किस्म का विकास करना संभव नहीं है।

भारत की आज भी लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या कृषि क्षेत्र पर परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से निर्भर है। किसी भी अन्य क्षेत्र की तरह कृषि क्षेत्र का विकास भी सब्सिडी पर निर्भर नहीं रह सकता है। इसके लिए बेहतर बाजार सुनिश्चित करना, नई से नई तकनीक का प्रयोग करना अनिवार्य है। अनुबंध खेती किए बिना किसानों को सहायता देना जारी नहीं रखा जा सकता है और कृषि क्षेत्र में किए गए सुधारों का महत्व इसी बात में निहित है। ▪

(लेखक वरिष्ठ सम्पादक हैं)

भागीदारी, लोकतंत्र की आधारशिला

श्री जगत प्रकाश नड्डा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का मानना है कि लोकतंत्र केवल एक सरकार को पांच साल के लिए अनुबंध नहीं देता, बल्कि वास्तव में यह जन-भागीदारी है। उन्होंने देश के नागरिकों में जो अटूट विश्वास दिखाया है, उसका अकल्पनीय सकारात्मक परिणाम सामने आया है।

जब नीतियां अंतिम पायदान पर खड़े आखिरी व्यक्ति तक पहुंचती हैं, तब लोकतंत्र को वास्तव में सफल माना जाता है। इस प्रकार, प्रधानमंत्री मोदी के आव्हान का स्पष्ट सार यह है कि सभी की भागीदारी से ही सभी की समृद्धि होती है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का स्पष्ट मानना है कि हमारी ताकत जनता की ताकत में है और हमारी ताकत हमारे देश के प्रत्येक नागरिक में निहित है। प्रधानमंत्री का यह वक्तव्य इस बात का द्योतक है कि लोकतंत्र भारत की प्राणवायु में है। जन-भागीदारी की अवधारणा का अर्थ है, नीतियों के कार्यान्वयन में जनता की सामूहिक भूमिका। भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश में श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में चल रही केंद्र सरकार की नीतियों को लागू करने का केंद्रीय पहलू जनशक्ति का समुचित और बेहतर उपयोग करना रहा है। उन्होंने जनता को अपना काम करने के लिए दृढ़ता से प्रेरित किया है। विभिन्न मुद्दों पर सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रेरित किया है। साथ ही, शासन की सहायता के लिए जनता को प्रेरित करके प्रधानमंत्री ने जन-भागीदारी की इस विशाल शक्ति से होने वाले लाभों को जमीन पर उतारकर दिखाया है।

जन संवाद की सतत् प्रक्रिया के बिना जन-भागीदारी अधूरी है। वास्तविक सहभागी शासन, जमीनी हकीकत को समझने के लिए जनता के साथ नियमित संवाद करने की प्रक्रिया पर आधारित है, जिसके बाद मुद्दों के विश्लेषण के आधार पर पॉलिसी पेपर्स तैयार किए जाते हैं और फिर ज्वलंत मुद्दों से निपटने के लिए सही सुझाव दिए जाते हैं। आदर्श रूप से नीतियों के कार्यान्वयन और लाभार्थियों से मिले फीडबैक के आधार पर नीतियों को लागू किया जाता है। विभिन्न माध्यमों से इस सरकार ने लोगों के जीवन को आसान बनाने के लिए जनता और सरकार के बीच इस संवाद को निरंतर बनाए रखने का व्यापक ध्यान रखा है। इसका एक सटीक उदाहरण 'पीएम फसल बीमा योजना' है।

साल 2016 में प्रधानमंत्री द्वारा फसल बीमा के लिए दो प्रमुख योजनाओं के संयोजन और सतत् एवं टिकाऊ कृषि सुनिश्चित करने के बाद इसे साल 2019-2020 में फिर से लॉन्च किया गया था। संशोधित योजना विभिन्न ऑफलाइन और ऑनलाइन तरीकों के माध्यम से किसानों के लिए समर्पित योजना है, जो उनकी विभिन्न समस्याओं का समाधान करती है। यह कृषि क्षेत्र में परिवर्तनकारी बदलाव लाने के लिए संवाद और सहभागिता की शक्ति का एक सटीक उदाहरण है।

जनता को अपने लक्ष्य तक ले जाने के प्रयास में पीएम मोदी निर्विवाद रूप से सफल रहे हैं। लोक-कल्याणकारी विजन पर आधारित उनके प्रत्येक आव्हान को देश ने हाथों-हाथ लिया है। आम लोगों के जीवन को सहज व सरल बनाने के उनके चिंतन में संपूर्ण देश स्वतः स्फूर्त रूप से जुड़ जाता है। उनका हर संबोधन सदैव आमजन के समग्र विकास के

परिप्रेक्ष्य में होता है। इसी कारण प्रधानमंत्री मोदी का आव्हान राष्ट्रीय अभियान, संकल्प व लक्ष्य तक जाता है।

एक राजनीतिज्ञ के रूप में, नीतियों और लाभों को देश के हरेक नागरिक तक पहुंचाने के लिए प्रत्येक को इसमें शामिल करने का पीएम मोदी का संकल्प और उनकी दूरदर्शिता को गत आठ वर्षों में देश ने निकट से अनुभव किया है। उदाहरण के लिए, खुले में शौच के मुद्दे को लें। प्रधानमंत्री के रूप में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले के अपने पहले उद्बोधन में उन्होंने सभी नागरिकों से 'स्वच्छ भारत अभियान' में भाग लेने का आव्हान किया था। केवल 60 महीनों में 11 करोड़ से अधिक शौचालयों के निर्माण के साथ एक जन-आंदोलन, जो अब देश में एक लाख से भी अधिक खुले में शौच मुक्त गांवों में परिणत हो चुका है, एक ऐसा कारनामा है, जिसने दुनिया को चकित कर दिया। हालांकि, यह सिर्फ एक स्वच्छता मिशन की तरह लग सकता है, लेकिन इसने देश की मातृशक्ति का सम्मान बढ़ाया है, उनकी सुरक्षा भी सुनिश्चित की है, इससे बालिका शिक्षा को भी बढ़ावा मिला है।

एक दूसरा उदाहरण जल-जीवन मिशन का हम ले सकते हैं, जिसने अब तक गांवों में 10 करोड़ से अधिक घरों में नल जल कनेक्शन सुनिश्चित किए हैं। 200 करोड़ कोविड टीके लगाने का रिकॉर्ड केवल 18 महीनों में हासिल किया गया। यह कोई मामूली उपलब्धि नहीं है। लोकप्रिय कार्यक्रम मन की बात को तो एक सामाजिक क्रांति करार दिया गया है (जो सही भी है), उसका आधार भी जन-भागीदारी ही है। एक अन्य उल्लेखनीय जन-आंदोलन है- 'वोकल फॉर लोकल।' प्रधानमंत्री द्वारा स्वदेशी व्यापार को बढ़ावा देने और स्थानीय व्यवसायों को प्रोत्साहित करने का एक स्पष्ट आव्हान लोगों में जागरूकता पैदा करने और उद्यमिता को बढ़ावा देने के मामले में एक लंबा सफर तय कर चुका है। इस जन-आंदोलन ने छोटे व्यवसायों को सशक्त बनाया है, देश के दूरदराज के हिस्सों में स्टार्टअप को बनाए रखने और पारंपरिक शिल्प को पुर्नजीवित करने में भी मदद की है।

'वोकल फॉर लोकल टॉयज' अर्थात् स्थानीय खिलौने को प्राथमिकता देने की प्रधानमंत्री मोदी की पहल खिलौनों के निर्माण में आत्मनिर्भर भारत अभियान का ही एक अंग है, जिसके सकारात्मक परिणाम मिलने शुरू हो गए हैं। देश में कई खिलौना उत्पादक समूह स्थापित हुए हैं। भारतीय संस्कृति और लोकाचार पर आधारित खिलौनों को विकसित करने के लिए नवीन विचारों को 'क्राउडसोर्स' करने के लिए 'टॉयकैथॉन' जैसे आयोजनों ने गति पकड़ी है। खिलौनों को बीआईएस (भारतीय प्रमाणन ब्यूरो) मानक के अनुसार प्रमाणित किया जाना सभी निर्माताओं के लिए अनिवार्य हो गया है, जिससे कई चीनी प्रतिस्पर्धी समाप्त हो गए हैं। वित्त वर्ष 2021-22 में खिलौनों के आयात में 70 प्रतिशत की कमी और निर्यात में 61 प्रतिशत की वृद्धि हुई। भारतीय खिलौनों का निर्यात रिकॉर्ड ऊंचाई तक पहुंचा है, यह इस बात का प्रमाण है कि एक संकल्पबद्ध राष्ट्र क्या नहीं कर सकता है!

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का मानना है कि लोकतंत्र केवल एक सरकार को पांच साल के लिए अनुबंध नहीं देता, बल्कि वास्तव में यह जन-भागीदारी है। उन्होंने देश के नागरिकों में जो अटूट विश्वास दिखाया है, उसका अकल्पनीय सकारात्मक परिणाम सामने आया है। जब नीतियां अंतिम पायदान पर खड़े आखिरी व्यक्ति तक पहुंचती हैं, तब लोकतंत्र को वास्तव में सफल माना जाता है। इस प्रकार, प्रधानमंत्री मोदी के आव्हान का स्पष्ट सार यह है कि सभी की भागीदारी से ही सभी की समृद्धि होती है। ▪

(लेखक भाजपा अध्यक्ष हैं)

बहनें मजदूर से मालिक

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान

कोरोना काल में प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के आव्हान पर महिला स्व-सहायता समूहों ने मास्क, पीपीई किट और सेनेटाइजर बनाये। आजीविका मिशन से जुड़ी यह बहनें स्व-सहायता समूहों से जुड़ कर मजदूर से मालिक बन रही हैं। समूह की गतिविधियों से बहनों की आय में वृद्धि हो रही है। स्व-सहायता समूह केवल आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में बदलाव का माध्यम बने हैं। हाल ही में प्रदेश में हुए पंचायत चुनावों में स्व-सहायता समूहों से जुड़ी 17 हजार बहनें चुनाव जीती हैं। श्योपुर की जिला पंचायत अध्यक्ष सुश्री गुड्डी बाई महिला सशक्तिकरण का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। राज्य सरकार ने आँगनवाड़ियों में वितरित होने वाले टेक होम राशन का कार्य महिला स्व-सहायता समूह को सौंपा है।

महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव

प्रदेश में लाड़ली लक्ष्मी योजना के प्रभाव के परिणाम स्वरूप लिंगानुपात प्रति एक हजार पर 912 से बढ़कर 976 हो गया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा आरंभ ''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'' अभियान और प्रधानमंत्री मातृ वंदना जैसी योजनाओं का प्रदेश में प्रभावी क्रियान्वयन जारी है, जिसके परिणाम स्वरूप प्रदेश में बेटियाँ आगे बढ़ रही हैं और नित नई जिम्मेदारियाँ संभाल रही हैं। प्रदेश में प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान कार्ड और उज्ज्वला योजना से लोगों के जीवन में बदलाव आ रहा है। ▪

जन आकांक्षाओं को पूर्ण करते प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

शिव प्रकाश

गुजरात के मुख्यमंत्री एवं 2014 के बाद देश के प्रधानमंत्री रहते हुए श्री नरेंद्र मोदी जी ने अपना उदाहरण जिस प्रकार से प्रस्तुत किया उससे जनता को लगने लगा कि यह व्यक्ति ही हमारी आकांक्षा पूर्ति का माध्यम हो सकता है।

कठोर परिश्रम, पारदर्शी छवि, प्रत्येक संकट में सदैव अग्रसर रहना एवं आवश्यकता पड़ने पर कठोर निर्णय लेना, यह सभी विशेषताएं मोदी जी को शेष में कुछ विशेष बनाती हैं।

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की विशेषताओं के संदर्भ में अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का प्रसिद्ध वाक्य "Of the people, By the people, For the people" है। भारतीय संविधान निर्माताओं ने भी इसी को आधार माना कि लोकतंत्र का उद्देश्य ''जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिए'' है। अर्थात हमारी समस्त व्यवस्थाओं का आधार जनता है। जनता के द्वारा का अर्थ है कि जनता के वोट से जन प्रतिनिधियों का चयन होगा एवं चयनित जनप्रतिनिधि शासन के सूत्र सम्हाल कर नीति बनाते हुए जनता के कल्याण के लिए कार्य करेंगे। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि जनता केवल वोट देने तक ही सीमित रहेगी। जनता देश के विकास में सक्रिय योगदान दे, वह सही जनप्रतिनिधियों का चयन करे, इसके लिए वह स्वार्थी न हो, क्षुद्र वृतियों से दूर रहे अर्थात निस्वार्थ, राष्ट्रभक्त, शिक्षित एवं संस्कारित हो। जनता में भविष्य के लिए श्रेष्ठ भारत बनाने का स्वप्न एवं संकल्प रहना आवश्यक है। यह कार्य उचित शिक्षा, नैतिक संस्थान एवं जन नेताओं के श्रेष्ठ आचरण के द्वारा होना संभव है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने समाज में यह संकल्प जगाने के लिए स्वयं का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। विकास में सामान्य जन की सहभागिता मोदी जी की अनुकरणीय पहल है। भारत भविष्य में विश्व में श्रेष्ठ होगा यह विश्वास भारतीय जनमानस में जागृत हुआ है।

स्वयं का उदाहरण

भारतीय जनसंघ (भारतीय जनता पार्टी) के तत्व दृष्टा पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी से जब यह प्रश्न पूछा गया कि आप राजनीति में क्यों है तब उनका उत्तर था कि ''नेता शब्द की विकृत हुई छवि के स्थान पर नेता शब्द की सही छवि स्थापित करने के लिए।'' राजनीतिक नेतृत्व के स्वार्थपूर्ण, विभाजित दृष्टि एवं वोट प्राप्ति के लिए गिरते व्यवहार के कारण समाज में नेताओं के प्रति अनास्था का वातावरण बना है। जो नेतृत्व समस्याओं के समाधान का माध्यम होना चाहिए था, जनता उसे ही समस्या मानने लगी। गुजरात के मुख्यमंत्री एवं 2014 के बाद देश के प्रधानमंत्री रहते हुए श्री नरेंद्र मोदी जी ने अपना उदाहरण जिस प्रकार से प्रस्तुत किया उससे जनता को लगने लगा कि यह व्यक्ति ही हमारी आकांक्षा पूर्ति का माध्यम हो सकता है। कठोर परिश्रम, पारदर्शी छवि, प्रत्येक संकट में सदैव अग्रसर रहना एवं आवश्यकता पड़ने पर कठोर निर्णय लेना, यह सभी विशेषताएं मोदी जी को शेष में कुछ विशेष बनाती हैं। बिना सुरक्षा घेरे के लाल किले से संबोधन उनकी निर्भीकता के साथ-साथ जनता में भी निर्भयता का वातावरण तैयार करता है।

मेट्रो ट्रेन में सामान्य नागरिक के समान यात्रा, बच्चों के साथ घुलना मिलना एवं नागरिकों से संवाद उनकी सहजता एवं सादगी को दर्शाता है। भ्रष्टाचार पर कठोर प्रहार ने भ्रष्टाचारियों में भय एवं गरीबों में एक विश्वास का वातावरण तैयार किया है। इसी का उदाहरण हमें कोरोना काल में देखने को मिला कि जब दुनिया के देश अपने यहां कर्फ्यू का पालन कराने के लिए अर्धसैनिक बलों का सहारा ले रहे थे, तब प्रधानमंत्री मोदी जी के दूरदर्शन पर एक आव्हान मात्र से भारत में स्वतः स्फूर्त जनता कर्फ्यू लगा एवं घंटे,

घड़ियाल, बर्तन एवं शंखनाद आदि के माध्यम से एकजुटता तथा मोदी जी के प्रति अपना विश्वास व्यक्त किया।

भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा निर्मित मेड इन इंडिया वैक्सीन के प्रति जब हमारे देश के विरोधी दलों के नेता भ्रम फैला रहे थे, तब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने स्वयं वैक्सीन लेकर भ्रम को दूर करने का कार्य किया। जिसका परिणाम है कि अब भारत 200 करोड़ से भी अधिक वैक्सीनेशन वाला देश बन गया है और हम निर्भय होकर कोरोना के संकट से बाहर आ गए हैं।

समस्या समाधान एवं विकास में जन सहभागिता

जनता केवल वोट तक सीमित न रहे, उसकी विकास एवं समस्याओं के समाधान में सक्रिय सहभागिता होने से ही हम आगे बढ़ सकते हैं। इस तथ्य को प्रधानमंत्री मोदी जी ने अच्छी प्रकार समझा। उनके भाषणों में आया प्रसिद्ध वाक्य '130 करोड़ भारतवासी जब एक कदम आगे बढ़ाते हैं तब भारत 130 करोड़ कदम आगे बढ़ता है' उनकी जनता में गहरी आस्था को प्रकट करता है। स्वच्छता अभियान, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, नमामि गंगे, कोरोना काल का सेवा कार्य, पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण की प्रेरणा एवं अभियान, तालाबों की सफाई, वैक्सीनेशन में जनसहभागिता, टी.बी. मुक्त भारत के लिए ''एक रोगी-एक पालक'' योजना आदि के माध्यम से उन्होंने समाज में कर्तव्य बोध जगाने में सफलता प्राप्त की है। स्वयं भी इन कार्यों की प्रेरणा के लिए वह समुद्र किनारे कूड़ा- करकट उठाते, हाथ में झाड़ू लेकर सफाई करते दिखाई देते हैं।

भारतीय वैज्ञानिकों में प्रेरणा का परिणाम यह हुआ कि हम अपनी वैक्सीन बनाने में सफल हुए। दीपावली के दिन सैनिकों के मध्य उपस्थित होकर प्रेरणा देने का परिणाम हुआ कि प्रत्येक सैनिक सीमा पर साहस के साथ खड़ा है। उद्योग जगत के प्रेरित होने का परिणाम हुआ कि हम पीपीई किट एवं वेंटीलेटर बनाने में अग्रणी हो गये। आत्मनिर्भर भारत संकल्प का परिणाम हुआ कि हम दुनिया में अर्थव्यवस्था के मामले में पांचवें पायदान पर आ गए। 'मेक इन इंडिया' एवं 'मेक फॉर वर्ल्ड' पॉलिसी का परिणाम हुआ कि अब हम सुरक्षा क्षेत्र में भी निर्यात करने वाले देश हो गए। अब महिला, उद्योग जगत, किसान, मजदूर, सैनिक, शिक्षक, युवा, गरीब, पिछड़े सभी को लगता है कि मोदी जी ही हमारी आकांक्षाओं की पूर्ति का माध्यम बनेंगे। इस कारण समाज का प्रत्येक वर्ग देश के विकास में सहायक हो रहा है। लाल किले की प्राचीर से उनका आव्हान कि हमारी पॉलिसी, प्रोसेस एवं प्रोडक्ट उत्तम से उत्तम हों, सभी वर्गों के लिए प्रेरक शब्द हैं।

एक भारत श्रेष्ठ भारत की जन अनुभूति

प्रसिद्ध जननेता संपूर्ण क्रांति के महानायक जयप्रकाश नारायण ने कहा था कि ''जब तक जनता में समुचित नैतिकता एवं आध्यात्मिक गुण विकसित नहीं होते तब तक सर्वोत्तम संविधान व राजनीतिक प्रणालियां भी लोकतंत्र को सफल नहीं बना सकतीं।'' उपरोक्त का विचार यदि हम करते हैं तो दिखाई देता है कि मोदी जी ने अपने व्यवहार के द्वारा समाज में इन गुणों के विकास का प्रयास किया। संविधान एवं संसद की सीढ़ियों को मस्तक झुका कर प्रणाम, योग विद्या का संवर्धन, आध्यात्मिक एवं धार्मिक स्थानों पर अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिए उपस्थिति, समाज में नैतिकता एवं आध्यात्मिकता विकसित करती है।

''बंधुत्व'' भाव जागरण के लिए हम एक देश के वासी 130 करोड़ भारतीयों का आव्हान, उच्च स्वर में सर्वत्र भारत मां की जय का उद्घोष, समाज में देशभक्ति एवं बंधुत्व भाव जागृत करता है।

नई शिक्षा नीति भी नैतिक गुणों के विकास का माध्यम बनेगी। लाल किले से उनका आव्हान कि गुलामी की मानसिकता के सभी प्रतीकों को समाप्त करना है, समाज में एक नए स्वाभिमान को जागृत करेगा। प्रधानमंत्री आवास 7 रेस कोर्स रोड अब लोक कल्याण मार्ग हो गया है। राजपथ, कर्तव्य पथ के नाम से विभूषित हुआ है। इन सभी का परिणाम है कि भारतीय जनमानस संकुचित भावों से ऊपर उठकर स्वाभिमान के साथ खड़ा हो रहा है।

भविष्य के लिए जन संकल्प

जब जनता के सम्मुख कोई लक्ष्य रहता है, तब सामान्य जनता में भी असामान्य कृतत्व प्रकट होता है। समाज के सभी वर्गों एवं भोगौलिक क्षेत्रों से स्वतंत्रता के आंदोलन में सक्रियता इसी का उदाहरण है। दुनिया के देश भी इसी संकल्प शक्ति से आगे बढ़े हैं। आजादी के अमृत महोत्सव में तिरंगा यात्रा में यह संकल्प पुनः प्रकट हुआ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आर्थिक क्षेत्र में हमारी अर्थव्यवस्था 5 ट्रिलियन करने का लक्ष्य रखा है। देश इस संकल्प को लेकर आगे बढ़ता दिख रहा है।

जब हम देश की स्वतंत्रता के 100 वर्षों का महोत्सव मना रहे होंगे तब हमारा देश कैसा होगा, यह स्वप्न देश की जनता देख रही है। 25 वर्षों के अमृतकाल का उपयोग अपने देश को गौरवशाली देश बनाने के लिए हो, यह संकल्प जनता में जागृत होना चाहिए।

गरीबी से मुक्त, आर्थिक रूप से सम्पन्न, शिक्षा में अग्रणी, सुरक्षित, समरस, सांस्कृतिक क्षेत्र में विश्व को सही पथ का दर्शन कराने वाला भारत हम बनाएंगे, यही संकल्प होना चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जनता में यह संकल्प जगाने के लिए प्रयासरत हैं, परिश्रम की पराकाष्ठा भी कर रहे हैं। हमारा एवं उनका संकल्प एक बने इसकी आवश्यकता है। परमात्मा उनको सुदीर्घ आयु प्रदान करें, जन्मदिवस पर यही प्रार्थना है। ▪

(लेखक-भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री है)

भारत 5वीं सबसे बड़ी अर्थ-व्यवस्था

मुख्यमंत्री श्री चौहान

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में किए गए फास्ट-ट्रैक सुधारों और अभूतपूर्व आर्थिक पहल से भारत द्वारा ब्रिटेन को पीछे कर विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनना संभव हो सका है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के आत्म-निर्भर भारत बनाने के संकल्प का परिणाम है कि भारत ने आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए ब्रिटेन को अर्थ-व्यवस्था में पीछे छोड़ दिया। कोरोना काल में प्रधानमंत्री श्री मोदी ने पूरे देश में जिस प्रकार अदभुत कदम उठाए, नागरिकों के जीवन को सुरक्षित रखते हुए अर्थ-व्यवस्था को गति दी, वह अनुकरणीय है। जहाँ ब्रिटेन अर्थ-व्यवस्था में पीछे आता जा रहा है, वहीं भारतीय अर्थ-व्यवस्था लगातार बढ़ रही है। एक दशक पहले भारत विश्व की सबसे बड़ी अर्थ-व्यवस्था में 11 वें स्थान पर था, अब 5वें स्थान पर पहुँच गया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के आत्म-निर्भर भारत के संकल्प में योगदान के दृष्टिगत आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के लिए किए जा रहे प्रयास जारी रहेंगे। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत प्रगति के मार्ग पर हमेशा अग्रसर रहेगा। ▪

मोदी जी- नये भारत निर्माण के विश्वकर्मा

15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री ने देश को 'पांच प्रण' दिलाए थे जो हमें सदा स्मरण रखना चाहिए- विकसित भारत, गुलामी से मुक्ति, विरासत पर गर्व, एकता और एकजुटता, नागरिकों का कर्तव्य।

इनमें दूसरा प्रण हमें और हमारी वर्तमान युवा पीढ़ी के लिए अधिक ध्यान देने योग्य है। मोदी जी ने कहा था कि गुलामी के किसी भी अंश को बचने नहीं देना है। जिसका अर्थ यही है कि सभी नागरिक मिलकर गुलामी के हर चिन्ह से देश को मुक्ति दिलाएँ।

विष्णुदत्त शर्मा

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा... नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा किया गया यह आव्हान केवल नारा नहीं था, परदेशी बेड़ियों से भारत माता को मुक्त कराने का शंखनाद था। इस महावाक्य ने देश के लाखों नौजवानों को स्वतंत्रता के समर में सर्वस्व बलिदान करने का साहस दिया। सर्वविदित है कि भारत को स्वाधीनता दिलाने में नेताजी के अतुलनीय योगदान को कमतर आँकने की कोशिश की जाती रही। राजकीय उपेक्षा के सात दशक बीतने के बाद गत 8 सितंबर को जब राजधानी दिल्ली के इंडिया गेट पर प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी जी ने उनकी विशालकाय प्रतिमा का अनावरण किया, तब सही मायने में उन्होंने नये भारत के निर्माण में उन अनकहे विमर्शों को भी नई पहचान दी, जिन पर 75 साल तक धूल डाल दी गई थी।

उल्लेखनीय है कि हमारा देश स्वाधीनता का 75 वां अमृत महोत्सव वर्ष मना रहा है। ऐसे में यह जरूरी है कि हमारी आजादी की कहानी के वे अध्याय दुरुस्त किये जायें, जो किसी परिवार विशेष की गाथा तक सीमित हैं। उन पृष्ठों को खोलकर नई पीढ़ी को दिखाए जाएं, जिसमें हमारे जननायकों की शौर्य भरी कहानियां ढंक दी गई हैं। जिस दिन प्रधानमंत्री जी ने ग्रेनाइट पत्थर पर उकेरी गई नेता जी की 65 मीट्रिक टन की प्रतिमा को स्थापित किया, उसी क्षण उन्होंने गुलामी का प्रतीक 'राजपथ' नाम भी मिटाकर 'कर्तव्यपथ' कर दिया। यह कोई मामूली नामकरण नहीं है, बल्कि स्वाधीनता के अमृत वर्ष का सुफल है। यह हमारी लोकतांत्रिक स्वाधीनता संबंधी विमर्श का महान पड़ाव भी है। निःसंदेह ऐसा कदम मोदी जी जैसा विराट व्यक्तित्व ही उठा सकता है दशकों पुरानी धारणाओं को ध्वस्त कर नई इबारत लिखना उनकी विशेषता भी है।

15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री ने देश को 'पांच प्रण' दिलाए थे जो हमें सदा स्मरण रखना चाहिए- विकसित भारत, गुलामी से मुक्ति, विरासत पर गर्व, एकता और एकजुटता, नागरिकों का कर्तव्य। इनमें दूसरा प्रण हमें और हमारी वर्तमान युवा पीढ़ी के लिए अधिक ध्यान देने योग्य है। मोदी जी ने कहा था कि गुलामी के किसी भी अंश को बचने नहीं देना है। जिसका अर्थ यही है कि सभी नागरिक मिलकर गुलामी के हर चिन्ह से देश को मुक्ति दिलाएँ। इसके साथ भारत को श्रेष्ठ, आत्मनिर्भर, स्वाधीन, नेतृत्वकर्ता बनाने का यह महामंत्र उन्होंने दिया था। चेतना के स्तर पर गुलामी से मुक्ति दिलाने का ऐसा संकल्प नरेंद्र मोदी को सभी नेताओं से अलग खड़ा करता है। मन, कर्म, वचन से राष्ट्रीय विमर्श को सही दिशा देने का सामर्थ्य, राजनीतिक जीवन में ऐसी विलक्षणता भी अद्वितीय है।

भारत में वंशवादी तथा अलगाववादियों ने जिस प्रकार पंथ, जाति, भाषा, क्षेत्र के नाम पर विभाजन के विमर्श खड़े किये हैं, वह पराधीनता और औपनिवेशिक गुलामी की देन है। वस्तुतः प्रधानमंत्री मोदी ने स्वाधीनता के 75 वर्ष पूर्ण

होने पर भारत की कोटि कोटि 'प्राणशक्ति' को जगाने का काम किया। जब यह प्राणशक्ति जागेगी तो निश्चित ही देश के 'स्वत्व' का केंद्र भी बदल जाएगा। वह पराधीनता की मानसिकता से बाहर आकर देश की प्रगति का सच्चा वाहक बनेगा।

विगत आठ साल के शासन में मोदी सरकार ने देश के अंदर और बाहर प्रत्येक क्षेत्र में ऐसे निर्णय लिये हैं, जिससे भारत की जनशक्ति को नया बल मिला है। हमारी जनशक्ति प्राणवान होकर नयी चेतना से समूचे विश्व में भारत के संदर्भ में नया विमर्श रच रही है। यहां पिछले दिनों लाल किले से ही प्रधानमंत्री द्वारा दिया गया वह नारा भी उल्लेखनीय है जिसमें उन्होंने जय जवान-जय किसान-जय विज्ञान को आगे बढ़ाते हुए 'जय अनुसंधान' का आव्हान किया। गुलामी के चिन्हों की निर्मूलता के लिए यह नारा मील का पत्थर सिद्ध होगा। इसके अंदर हमारी भाषाओं का अभिमान भी शामिल है। हमारी मेधा भाषा के चक्रव्यूह में फँसकर गुलामी की जकड़न में उलझी रहती है। इसलिए पीएम ने अनुसंधान में भाषागत मजबूरियों का नकली आवरण हटाने का संकेत दे दिया।

मोदी सरकार की शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, विनिर्माण, अर्थव्यवस्था, सामरिक रणनीति, वैदेशिक नीतियों की बहुत चर्चा हो चुकी है और भारत की जनता ने भी सरकार की कल्याणकारी योजनाओं पर बारंबार मुहर लगायी है। कुछ दिन पहले ही 77 फीसदी एप्रूवल रेटिंग के साथ वैश्विक नेताओं की तुलना में दुनिया भर में सबसे अधिक लोकप्रिय नेता हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 72 वें जन्मदिवस के अवसर पर इन बिन्दुओं को छोड़कर नये भारत के निर्माण में उनकी कार्यकुशलता, परिणामकारी नेतृत्व और उससे उपजे विमर्श की चर्चा होनी चाहिए।

दुनिया इस बात से अचरज में है कि भारत को एक ऐसा नेतृत्व मिला है, जिसने भारतीयों की पहचान बदल दी है। नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में भारत के प्रति विश्व की दृष्टि बदल गई है। जिन देशों से संबंध रखने से पूर्व के अनेक भारतीय प्रधानमंत्री कतराते रहे उनके साथ भी मोदी के नेतृत्व में भारत ने मित्रता का नया अध्याय रच दिया है। इजरायल इसका श्रेष्ठ उदाहरण है जहां प्रधानमंत्री के रूप में पहली बार मोदी पहुंचे और आज वह भारत के साथ अनेक तकनीकों पर काम कर रहा है। अंदरूनी तुष्टिकरण के कारण वर्षों तक इजरायल सहित कई देशों से हमारे संबंध बहुत सतही रखे गये, इस वैश्विक विमर्श को भारत ने मोदी के नेतृत्व में बदल दिया है और यह दुनिया को बता दिया है कि भारत की मित्रता के मानदंड स्वायत्त हैं। इस संबंध में उसकी किसी दूसरे देश पर निर्भरता या मुँह देखी नहीं है।

यही बात मार्च 2019 में हुई जब भारत द्वारा एयर स्ट्राइक के दौरान पाक अधिकृत कश्मीर वाले क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना के कब्जे में घिरे हमारे पायलट विंग कमांडर अभिनंदन की भारत ने सकुशल वापसी कराई। उस समय दुनिया की किसी भी ताकत के आगे न झुककर केंद्र सरकार ने सामरिक क्षेत्र में भारत के प्रति विश्व का नजरिया बदल दिया। जम्मू कश्मीर से धारा 370 की विदाई पर भी अंतर्राष्ट्रीय शक्तियों की परवाह नहीं करते हुए भारत ने अपने प्रति वैश्विक विमर्श को बदला। डोकलाम सीमा से चीनी सैनिकों की वापसी, बांग्लादेश से जुड़े जमीनी मुद्दे और नेपाल से संबंधों पर भारत ने नये सिरे से अपनी स्वशासिता का परिचय दिया है।

विगत आठ वर्षों में मोदी सरकार ने 'लुक ईस्ट' (पूरब की ओर देखो) की नीति को बदलकर 'एक्ट ईस्ट एशिया' किया जिससे भारत की जरूरतों को पूरा किया जा सके। आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया और वोकल फॉर लोकल की राह पर चलते हुए मोदी सरकार ने आर्थिक प्रतिस्पर्धा में चीन को चुनौती देकर पटखनी दी है। मोदी जी के नेतृत्व में अब दुनिया को यह अहसास हो गया है कि पूर्वी भाग के प्रति सक्रिय नीति रखना प्रत्येक देश का कर्तव्य है।

पहली बार प्रधानमंत्री का पद संभालने के बाद ही श्री नरेंद्र मोदी जी ने साफ कर दिया था वे भारत को 'बैलेंसिंग पावर' की भूमिका से बाहर निकाल कर 'जिम्मेदार ताकत' बनाएंगे। बहुआयामी वैश्विक नीति के बल पर उन्होंने यह कर दिखाया है। विगत आठ सालों में उन्होंने भारत की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका को बदल दिया है। कोरोना की वैश्विक महामारी के दौरान सारी दुनिया ने भारत की इस जिम्मेदार ताकत का अनुभव किया। स्वदेशी वैक्सीन से देश ने 'विश्व आर्डर' बदल दिया।

इस लिहाज से भारत के प्रति दया भाव वाला समूचा विमर्श भी श्री मोदी जी ने बदल दिया है। सैन्य शक्ति एवं अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भी स्वदेशी शक्ति का परचम लहरा कर विश्व को चकित किया ही है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से देश को संपूर्ण स्वाबलंबी बनाने की दिशा में सक्रिय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी भारत के सामाजिक विमर्श में भी ऐतिहासिक परिवर्तन लाये हैं। स्वाधीनता के अमृत वर्ष में देश के सुदूर वन क्षेत्रों से उठी जिस चिंगारी की चर्चा अब तक नहीं हुई थी, उसे राष्ट्रीय मंथन का विषय बनाया है। अनेक गुमनाम नायकों को इतिहास के सुनहरे पृष्ठों में स्थान मिल रहा है। मयूरभंज के वनवासी गांव में जन्मी श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी को राष्ट्रपति बनाकर उन्होंने देश का लोकतांत्रिक विमर्श भी नये सिरे से गढ़ दिया है। वंशवाद की राजनीति के स्थान पर लोकमन को स्थान देना भी भारत के प्रति स्थापित विमर्श-धारा को मोड़ने वाला है। निश्चय ही 25 साल बाद जब देश स्वाधीनता का शताब्दी वर्ष मनाएगा, तब भारत संबंधी विमर्श गौरव भाव से परिपूर्ण होगा।

यह दुर्लभ संयोग है कि विश्वकर्मा जयंती के पावन दिन ही नरेन्द्र भाई मोदी का भी सुखद जन्म दिवस है। इस कर्मयोगी के 20 साल की प्रशासनिक कर्मठता, प्रतिबद्धता, अथक परिश्रम और विलक्षण नेतृत्व को देखकर यह कहना यथोचित होगा कि नरेन्द्र मोदी नये भारत के निर्माण में विश्वकर्मा और राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण के महारथी हैं। उनके जन्मदिवस को इस बार भारतीय जनता पार्टी सेवा पखवाड़े के रूप में मना रही है। यह पखवाड़ा 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक चलेगा और इसमें समाज को भविष्य में आने वाली चुनौतियों और उनके समाधान से अवगत कराया जायेगा। ▪

(लेखक भाजपा मध्यप्रदेश के अध्यक्ष एवं खजुराहो लोकसभा से सांसद हैं)

नये भारत का उदय- अमित शाह

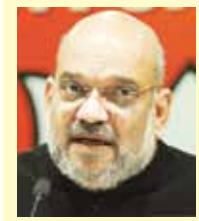

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा देश को भारत के बुलंद हौसलों को उड़ान देता स्वदेशी सामर्थ्य व प्रतिबद्धता का प्रतीक INS विक्रांत समर्पित करने और शौर्य और पराक्रम की पर्याय हमारी भारतीय नौसेना के नए ध्वज का अनावरण भारत के लिए ऐतिहासिक दिन है। नया ध्वज गुलामी की सभी निशानियों को पीछे छोड़ अपनी वैभवशाली संस्कृति पर गर्व करने वाले नये भारत के उदय का प्रतीक है। अपनी दूरदर्शिता से समुद्री सीमाओं को सुरक्षित करने हेतु सशक्त नौसेना का निर्माण करने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज से प्रेरित इस ध्वज में उनकी राजमुद्रा का अंश हर भारतीय को अपनी समृद्ध संस्कृति पर गर्व की अनुभूति करवाता है। प्रधानमंत्री बनने के बाद से ही श्री नरेन्द्र मोदी जी देश की सेनाओं को विश्व में सबसे अग्रणी व आधुनिक बनाने के हर संभव प्रयास कर रहे हैं। ▪

आजादी के अमृतकाल में चीतों का पुनर्वास

दशकों पहले, जैव-विविधता की सदियों पुरानी जो कड़ी टूट गई थी, विलुप्त हो गई थी, हमें उसे फिर से जोड़ने का मौका मिला है। भारत की धरती पर चीता लौट आए हैं। और इन चीतों के साथ ही भारत की प्रकृति प्रेमी चेतना भी पूरी शक्ति से जागृत हो उठी है।

विश्वास है, ये चीते न केवल प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारियों का बोध कराएंगे, बल्कि हमारे मानवीय मूल्यों और परम्पराओं से भी अवगत कराएंगे।

मानवता के सामने ऐसे अवसर बहुत कम आते हैं जब समय का चक्र, हमें अतीत को सुधार कर नए भविष्य के निर्माण का मौका देता है। सौभाग्य से हमारे सामने एक ऐसा ही क्षण है। दशकों पहले, जैव-विविधता की सदियों पुरानी जो कड़ी टूट गई थी, विलुप्त हो गई थी, हमें उसे फिर से जोड़ने का मौका मिला है। भारत की धरती पर चीता लौट आए हैं। और इन चीतों के साथ ही भारत की प्रकृति प्रेमी चेतना भी पूरी शक्ति से जागृत हो उठी है। विश्वास है, ये चीते न केवल प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारियों का बोध कराएंगे, बल्कि हमारे मानवीय मूल्यों और परम्पराओं से भी अवगत कराएंगे।

जब हम अपनी जड़ों से दूर होते हैं तो बहुत कुछ खो बैठते हैं। इसलिए ही आजादी के इस अमृतकाल में हमने 'अपनी विरासत पर गर्व' और 'गुलामी की मानसिकता से मुक्ति' जैसे पंच प्राणों के महत्व को दोहराया है। पिछली सदियों में हमने वो समय भी देखा है जब प्रकृति के दोहन को शक्ति-प्रदर्शन और आधुनिकता का प्रतीक मान लिया गया था। 1947 में जब देश में केवल आखिरी तीन चीते बचे थे,तो उनका भी साल के जंगलों में निष्ठुरता और गैर-जिम्मेदारी से शिकार कर लिया गया। ये दुर्भाग्य रहा कि हमने 1952 में चीतों को देश से विलुप्त तो घोषित कर दिया, लेकिन उनके पुनर्वास के लिए दशकों तक कोई सार्थक प्रयास नहीं हुआ।

आजादी के अमृतकाल में अब देश नई ऊर्जा के साथ चीतों के पुनर्वास के लिए जुट गया है। अमृत में तो वो सामर्थ्य होता है, जो मृत को भी पुनर्जीवित कर देता है। आजादी के अमृतकाल में कर्तव्य और विश्वास का ये अमृत हमारी विरासत को, हमारी धरोहरों को, और अब चीतों को भी भारत की धरती पर पुनर्जीवित कर रहा है।

इसके पीछे हमारी वर्षों की मेहनत है। एक ऐसा कार्य, राजनैतिक दृष्टि से जिसे कोई महत्व नहीं देता, उसके पीछे भी हमने भरपूर ऊर्जा लगाई। इसके लिए एक विस्तृत चीता एक्शन प्लान तैयार किया गया। हमारे वैज्ञानिकों ने लंबी रिसर्च की, साऊथ अफ्रीकन और नामीबियाई एक्सपर्टस के साथ मिलकर काम किया। हमारी टीम्स वहाँ गईं, वहाँ के एक्सपर्टस भी भारत आए। पूरे देश में चीतों के लिए सबसे उपयुक्त क्षेत्र के लिए वैज्ञानिक सर्वे किए गए, और तब कुनो नेशनल पार्क को इस शुभ शुरुआत के लिए चुना गया। और आज, हमारी वो मेहनत, परिणाम के रूप में हमारे सामने है।

ये बात सही है कि, जब प्रकृति और पर्यावरण का संरक्षण होता है तो हमारा भविष्य भी सुरक्षित होता है। विकास और समृद्धि के रास्ते भी खुलते हैं। कुनो नेशनल पार्क में जब चीता फिर से दौड़ेंगे, तो यहाँ का grassland eco-system फिर से restore होगा, eco-tourism और बढ़ेगी। आने

वाले दिनों में यहाँ bio-diversity भी बढ़ेगा, यहाँ विकास की नई संभावनाएं जन्म लेंगी, रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। कुनो नेशनल पार्क में छोड़े गए चीतों को देखने के लिए देशवासियों को कुछ महीने का धैर्य दिखाना होगा, इंतजार करना होगा। ये चीते मेहमान बनकर आए हैं, इस क्षेत्र से अनजान हैं। कुनो नेशनल पार्क को ये चीते अपना घर बना पाएं, इसके लिए हमें इन चीतों को भी कुछ महीने का समय देना होगा। अंतर्राष्ट्रीय गाइडलाइन्स पर चलते हुए भारत इन चीतों को बसाने की पूरी कोशिश कर रहा है। हमें अपने प्रयासों को विफल नहीं होने देना है।

दुनिया आज जब प्रकृति और पर्यावरण की ओर देखती है तो sustainable development की बात करती है। लेकिन प्रकृति और पर्यावरण, पशु और पक्षी, भारत के लिए ये केवल sustainability और security के विषय नहीं हैं। हमारे लिए ये हमारी sensibility और spirituality का भी आधार हैं। हम वो लोग हैं जिनका सांस्कृतिक अस्तित्व ''सर्वम् खल्विदम् ब्रह्म'' के मंत्र पर टिका हुआ है। अर्थात्, संसार में पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, जड़-चेतन जो कुछ भी है, वो ईश्वर का ही स्वरूप है, हमारा अपना ही विस्तार है। हम वो लोग हैं जो कहते हैं-

'परम् परोपकारार्थम्
यो जीवति स जीवति'।

अर्थात्, खुद के फायदे को ध्यान में रखकर जीना वास्तविक जीवन नहीं है। वास्तविक जीवन वो जीता है जो परोपकार के लिए जीता है। इसीलिए, हम जब खुद भोजन करते हैं, उसके पहले पशु-पक्षियों के लिए अन्न निकालते हैं। हमारे आसपास रहने वाले छोटे से छोटे जीव की भी चिंता करना हमें सिखाया जाता है। हमारे संस्कार ऐसे हैं कि कहीं अकारण किसी जीव का जीवन चला जाए, तो हम अपराध बोध से भर जाते हैं। फिर किसी पूरी जीव-जाति का अस्तित्व ही अगर हमारी वजह से मिट जाए, ये हम कैसे स्वीकार कर सकते हैं?

आप सोचिए, हमारे यहां कितने ही बच्चों को ये पता तक नहीं होता है कि जिस चीता के बारे में सुनकर वो बड़े हो रहे हैं, वो उनके देश से पिछली शताब्दी में ही लुप्त हो चुका है। आज अफ्रीका के कुछ देशों में, ईरान में चीता पाए जाते हैं, लेकिन भारत का नाम उस लिस्ट से बहुत पहले हटा दिया गया था। आने वाले वर्षों में बच्चों को इस विडम्बना से नहीं गुजरना पड़ेगा। वो चीता को अपने ही देश में, कुनो नेशनल पार्क में दौड़ता देख पाएंगे। चीता के जरिए हमारे जंगल और जीवन का एक बड़ा शून्य भर रहा है।

21वीं सदी का भारत, पूरी दुनिया को संदेश दे रहा है कि Economy और Ecology कोई विरोधाभाषी क्षेत्र नहीं है। पर्यावरण की रक्षा के साथ ही, देश की प्रगति भी हो सकती है, ये भारत ने दुनिया को करके दिखाया है। आज एक ओर हम विश्व की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हैं, तो साथ ही देश के वन-क्षेत्रों का विस्तार भी तेजी से हो रहा है।

2014 में हमारी सरकार बनने के बाद से देश में करीब-करीब ढाई सौ नए संरक्षित क्षेत्र जोड़े गए हैं। हमारे यहाँ एशियाई शेरों की संख्या में भी बड़ा इजाफा हुआ है। आज गुजरात देश में एशियाई शेरों का बड़ा क्षेत्र बनकर उभरा है। इसके पीछे दशकों की मेहनत, रिसर्च बेस्ड policies और जन-भागीदारी की बड़ी भूमिका है। मुझे याद है, हमने गुजरात में एक संकल्प लिया था- हम जंगली जीवों के लिए सम्मान बढ़ाएँगे, और संघर्ष घटाएंगे। आज उस सोच का प्रभाव परिणाम के रूप में हमारे सामने है। देश में भी, tigers की संख्या को दोगुना करने का जो लक्ष्य तय किया गया था हमने उसे समय से पहले हासिल किया है। असम में एक समय, एक सींग वाले गैंडों का अस्तित्व खतरे में पड़ने लगा था, लेकिन आज उनकी भी संख्या में वृद्धि हुई है। हाथियों की संख्या भी पिछले वर्षों में बढ़कर 30 हजार से ज्यादा हो गई है।

देश में प्रकृति और पर्यावरण के दृष्टिकोण से जो एक और बड़ा काम हुआ है, वो है wetland का विस्तार! भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में करोड़ों लोगों का जीवन और उनकी जरूरतें wetland ecology पर निर्भर करती हैं। आज देश में 75 wetlands को रामसर साइट्स के रूप में घोषित किया गया है, जिनमें 26 साइट्स पिछले 4 वर्षों में ही जोड़ी गई हैं। देश के इन प्रयासों का प्रभाव आने वाली सदियों तक दिखेगा, और प्रगति के नए पथ प्रशस्त करेगा।

आज हमें वैश्विक समस्याओं को, समाधानों को और यहाँ तक कि अपने जीवन को भी holistic way में देखने की जरूरत है। इसीलिए, आज भारत ने विश्व के लिए LiFE यानी, Lifestyle for the Environment जैसा जीवन-मंत्र दिया है। आज इंटरनेशनल सोलर अलायंस जैसे प्रयासों के द्वारा भारत दुनिया को एक मंच दे रहा है, एक दृष्टि दे रहा है। इन प्रयासों की सफलता दुनिया की दिशा और भविष्य तय करेगी। इसलिए, आज समय है कि हम ग्लोबल चुनौतियों को दुनिया की नहीं अपनी व्यक्तिगत चुनौती भी मानें। हमारे जीवन में एक छोटा सा बदलाव पूरी पृथ्वी के भविष्य के लिए एक आधार बन सकता है। भारत के प्रयास और परम्पराएँ इस दिशा में पूरी मानवता का पथ प्रदर्शन करेंगी, बेहतर विश्व के सपने को ताकत देंगी। ▪

चीतों का आना असाधारण- मुख्यमंत्री

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी श्योपुर और प्रदेश के लिये विशेष सौगात लेकर आये हैं। श्योपुर में चीतों का आना असाधारण घटना है। चीतों के आने से क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियाँ बढ़ेंगी और रोजगार के अवसर सृजित होंगे। चीतों के आने की सूचना से ही क्षेत्र में जमीनों के दाम बढ़े हैं। पर्यटन के लिये आवश्यक अधो-संरचना विकसित करने वालों को राज्य सरकार द्वारा विशेष सुविधाएँ और सहायता उपलब्ध कराई जायेगी। पर्यटन गतिविधियों और रोजगार सृजन से क्षेत्र की तस्वीर बदलेगी। महिला स्व-सहायता समूहों के लिये अपनी गतिविधियों को विस्तार देने का भी यह अनुकूल अवसर है। ▪

पंचायत से राष्ट्रपति भवन तक नारी शक्ति का परचम

पिछली शताब्दी के भारत और इस शताब्दी के नए भारत में एक बहुत बड़ा अंतर हमारी नारी शक्ति के प्रतिनिधित्व के रूप में आया है। नए भारत में पंचायत भवन से लेकर राष्ट्रपति भवन तक नारी शक्ति का परचम लहरा रहा है।

श्योपुर जिले में एक आदिवासी बहन, जिला पंचायत की अध्यक्ष के रूप में काम कर रही हैं। हाल ही में संपन्न हुए पंचायत चुनावों में पूरे मध्य प्रदेश में लगभग 17 हजार बहनें जनप्रतिनिधि के रूप में चुनी गई हैं। ये बड़े बदलाव का संकेत है, बड़े परिवर्तन का आव्हान है।

भारत की धरती पर अब 75 साल बाद चीता फिर से लौट आया है। आठ चीते 75 साल करीब-करीब उसके बाद हमारी देश की धरती पर लौट आए हैं। दूर अफ्रीका से आए हैं। लंबा सफर करके आए हैं।

मध्य प्रदेश में स्वयं सहायता समूहों द्वारा राज्य में 10 लाख पौधों का रोपण भी किया जा रहा है। पर्यावरण की रक्षा के लिए ये संगठित प्रयास, भारत का पर्यावरण के प्रति प्रेम, पौधे में भी परमात्मा देखने वाला मेरा देश आज आपके इन प्रयासों से भारत को एक नई ऊर्जा मिलने वाली है।

पिछली शताब्दी के भारत और इस शताब्दी के नए भारत में एक बहुत बड़ा अंतर हमारी नारी शक्ति के प्रतिनिधित्व के रूप में आया है। नए भारत में पंचायत भवन से लेकर राष्ट्रपति भवन तक नारी शक्ति का परचम लहरा रहा है। श्योपुर जिले में एक आदिवासी बहन, जिला पंचायत की अध्यक्ष के रूप में काम कर रही हैं। हाल ही में संपन्न हुए पंचायत चुनावों में पूरे मध्य प्रदेश में लगभग 17 हजार बहनें जनप्रतिनिधि के रूप में चुनी गई हैं। ये बड़े बदलाव का संकेत है, बड़े परिवर्तन का आव्हान है।

आजादी की लड़ाई में सशस्त्र संघर्ष से लेकर सत्याग्रह तक, देश की बेटियां किसी से पीछे नहीं रहीं हैं। जब भारत अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। तब हमने, हम सबने देखा है कैसे जब हर घर में तिरंगा फहरा तो उसमें सभी बहनों ने, महिला स्वयं सहायता समूहों ने कितना बड़ा काम किया है। आपके बनाए तिरंगों ने राष्ट्रीय गौरव के इस क्षण को चार चांद लगा दिये। कोरोना काल में, संकट की उस घड़ी में मानव मात्र की सेवा करने के इरादे से आपने बहुत बड़ी मात्रा में मास्क बनाएं, पीपीई किट्स बनाने से लेकर लाखों-लाख तिरंगे यानि एक के बाद एक हर काम में देश की नारी शक्ति ने हर मौके पर, हर चुनौती को अपनी उद्यमिता के कारण देश में नया विश्वास पैदा किया और नारी शक्ति का परिचय दे दिया है। और इसलिए आज मैं बहुत जिम्मेदारी के साथ एक स्टेटमेंट करना चाहता हूं। बड़ी जिम्मेदारी के साथ करना चाहता हूं। पिछले 20-22 साल के शासन व्यवस्था के

अनुभव के आधार पर कहना चाहता हूं। आपके समूह का जब जन्म होता है। 10-12 बहनें इकट्ठी होकर के कोई काम शुरू करती हैं। जब आपका इस एक्टिविटी के लिए जन्म होता है। तब तो आप स्वयं सहायता समूह होते हैं। जब आपके कार्य की शुरूआत होती है। एक-एक डग रख के काम शुरू करते हैं। कुछ पैसे इधर से कुछ पैसे उधर से इकट्ठे करके कोशिश करते हैं तब तक तो आप स्वंय सहायता समूह हैं। लेकिन आपके पुरुषार्थ के कारण, आपके संकल्प के कारण देखते ही देखते ये स्वयं सहायता समूह राष्ट्र सहायता समूह बन जाते हैं। और इसलिए कल आप स्वयं सहायता समूह होंगे, लेकिन आज आप राष्ट्र सहायता समूह बन चुके हैं। राष्ट्र की सहायता कर रहे हैं। महिला स्वयं सहायता समूहों की यही ताकत आजादी के अमृतकाल में विकसित भारत, आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में बहुत अहम भूमिका बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए आज प्रतिबद्ध है, कटिबद्ध है।

जिस भी सेक्टर में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है, उस क्षेत्र में, उस कार्य में सफलता अपने आप तय हो जाती है। स्वच्छ भारत अभियान की सफलता इसका बेहतरीन उदाहरण है, जिसको महिलाओं ने नेतृत्व दिया है। आज गांवों में खेती हो, पशुपालन का काम हो, डिजिटल सेवाएं हों, शिक्षा हो, बैंकिंग सेवाएं हों, बीमा से जुड़ी सेवाएं हों, मार्केटिंग हो, भंडारण हो, पोषण हो, अधिक से अधिक क्षेत्रों में बहनों-बेटियों को प्रबंधन से जोड़ा जा रहा है। इसमें दीन दयाल अंत्योदय योजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। जो बहनें हैं, उसका भी काम देखिए, कैसे-कैसे विविध मोर्चों को संभालती है। कुछ महिलाएं पशु सखी के रूप में, कोई कृषि सखी के रूप में, कोई बैंक सखी के रूप में, कोई पोषण सखी के रूप में, ऐसी अनेक सेवाओं की ट्रेनिंग लेकर वे शानदार काम कर रही हैं। आपके सफल नेतृत्व, सफल भागीदारी का एक उत्तम उदाहरण जल जीवन मिशन भी है। हर घर पाइप से जल पहुंचाने के इस अभियान में सिर्फ 3 वर्षों में 7 करोड़ नए पानी के कनेक्शन दिए जा चुके हैं। इनमें से मध्य प्रदेश में भी 40 लाख परिवारों को नल से जल पहुंचाया जा चुका है और जहां-जहां नल से जल पहुंच रहा है, वहां माताएं-बहनें डबल इंजन की सरकार को बहुत आशीर्वाद देती हैं। इस सफल अभियान का सबसे अधिक श्रेय देश की माताओं-बहनों को है। मध्य प्रदेश में 3 हजार से अधिक नल जल परियोजनाओं का प्रबंधन स्वयं सहायता समूहों के हाथ में है। वे राष्ट्र सहायता समूह बन चुके हैं। पानी समितियों में बहनों की भागीदारी हो, पाइपलाइन का रख-रखाव हो या पानी से जुड़ी टेस्टिंग हो, बहनें-बेटियां बहुत ही प्रशंसनीय काम कर रही हैं।

पिछले 8 वर्षों में स्वयं सहायता समूहों को सशक्त बनाने में हर प्रकार से मदद की है। पूरे देश में 8 करोड़ से अधिक बहनें इस अभियान से जुड़ चुकी हैं। मतलब एक प्रकार से आठ करोड़ परिवार इस काम में जुड़े हुए हैं। लक्ष्य है कि हर ग्रामीण परिवार से कम से कम एक महिला, एक बहन हो, बेटी हो, मां हो इस अभियान से जुड़े। मध्य प्रदेश की भी 40 लाख से अधिक बहनें स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी हैं। राष्ट्रीय आजीविका मिशन के तहत 2014 से पहले के 5 वर्षों में जितनी मदद दी गई, बीते 7 साल में उसमें लगभग 13 गुणा बढ़ोतरी हुई है। हर सेल्फ हेल्प ग्रुप को पहले जहां 10 लाख रुपए तक का बिना गारंटी का ऋण मिलता था, अब ये सीमा भी दोगुनी यानि 10 लाख से बढ़ाकर 20 लाख की गई है। फूड प्रोसेसिंग से जुड़े सेल्फ हेल्प ग्रुप को नई यूनिट लगाने के लिए 10 लाख रुपए से लेकर 3 करोड़ रुपए तक की मदद दी जा रही है। देखिए माताओं-बहनों पर, उनकी ईमानदारी पर, उनके प्रयासों पर, उनकी क्षमता पर कितना भरोसा है सरकार का कि इन समूहों को 3 करोड़ रुपया देने के लिए तैयार हो जाते हैं।

गांव की अर्थव्यवस्था में, महिला उद्यमियों को आगे बढ़ाने के लिए, उनके लिए नई संभावनाएं बनाने के लिए हमारी सरकार निरंतर काम कर रही है। वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट के माध्यम से हम हर जिले के लोकल उत्पादों को बड़े बाजारों तक पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं। इसका बहुत बड़ा लाभ विमेन सेल्फ वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट अभियान से जुड़ी बहनों के साथ मुझे बातचीत करने का मौका मिला। कुछ उत्पाद को देखने का मौका मिला और कुछ उत्पाद उन्होंने मुझे उपहार में भी दिए हैं। ग्रामीण बहनों द्वारा बनाए गए ये उत्पाद मेरे लिए ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए अनमोल हैं। मुझे खुशी है कि यहां मध्य प्रदेश में हमारे शिवराज जी की सरकार ऐसे उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने के लिए विशेष प्रयास कर रही है। सरकार ने अनेक ग्रामीण बाजार स्वयं सहायता समूह से जुड़ी बहनों के लिए ही बनाए हैं। इन बाजारों में स्वयं सहायता समूहों ने 500 करोड़ रुपए से अधिक के उत्पादों की बिक्री की है। 500 करोड़, यानि इतना सारा पैसा आपकी मेहनत से गांव की बहनों के पास पहुंचा है।

आदिवासी अंचलों में जो वन उपज हैं, उनको बेहतरीन उत्पादों में बदलने के लिए हमारी आदिवासी बहनें प्रशंसनीय काम कर रही हैं। मध्य प्रदेश सहित देश की लाखों आदिवासी बहनें प्रधानमंत्री वनधन योजना का लाभ उठा रही हैं। मध्य प्रदेश में आदिवासी बहनों द्वारा बने बेहतरीन उत्पादों की बहुत अधिक प्रशंसा भी होती रही है। पीएम कौशल विकास योजना के तहत आदिवासी क्षेत्रों में नए स्किलिंग सेंटर्स से इस प्रकार के प्रयासों को और बल मिलेगा।

आज-कल ऑनलाइन खरीदारी का प्रचलन बढ़ रहा है। इसलिए सरकार का जो GeM यानि गवर्नमेंट ई-मार्केट प्लेस पोर्टल है, उस पर भी आपके उत्पादों के लिए, 'सरस' नाम से विशेष एक स्थान रखा गया है। इसके माध्यम से आप

अपने उत्पाद सीधे सरकार को, सरकारी विभागों को बेच सकते हैं। जैसे यहां श्योपुर में लकड़ी पर नक्काशी का इतना अच्छा काम होता है। इसकी देश में बहुत बड़ी डिमांड है। मेरा आग्रह है कि आप अधिक से अधिक इसमें खुद को, अपने उत्पादों को ये GeM में रजिस्टर करवाइये।

सितम्बर का ये महीना देश में पोषण माह के रूप में मनाया जा रहा है। भारत की कोशिशों से संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2023 को अगला वर्ष अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मोटे अनाज के वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की है। मध्य प्रदेश तो पोषण से भरे इस मोटे अनाज के मामले में देश के अग्रणी राज्यों में है। विशेष रूप से हमारे आदिवासी अंचलों में इसकी एक समृद्ध परिपाटी है। हमारी सरकार द्वारा कोदो, कुटकी, ज्वार, बाजरा और रागी जैसे मोटे अनाज को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है, और मैंने तो तय किया है अगर भारत सरकार में किसी विदेशी मेहमान के लिए खाना देना है तो उसमें कुछ न कुछ तो मोटे अनाज का होना ही चाहिए। ताकि मेरा जो छोटा किसान काम करता है। वो विदेशी मेहमान की थाली में भी वो परोसा जाना चाहिए। स्वयं सहायता समूहों के लिए इसमें बहुत अधिक अवसर हैं।

एक समय था, जब घर-परिवार के भीतर ही माताओं-बहनों की अनेक समस्याएं थीं, घर के फैसलों में भूमिका बहुत सीमित होती थी। अनेक घर ऐसे होते थे अगर बाप और बेटा बात कर रहे हैं व्यापार की, काम की और अगर मां घर से किचन में से बाहर आ गई तो तुरंत बेटा बोल देता है या तो बाप बोल देता है-जा जा तू रसोड़े में काम कर, हमको जरा बात करने दे। आज ऐसा नहीं है। आज माताओं-बहनों के विचार सुझाव परिवार में भी उसका महत्व बढ़ने लगा है। लेकिन इसके पीछे योजनाबद्ध तरीके से हमारी सरकार ने प्रयास किए हैं। पहले ऐसे सोचे-समझे प्रयास नहीं होते थे। 2014 के बाद से ही देश, महिलाओं की गरिमा बढ़ाने, महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों के समाधान में जुटा हुआ है। शौचालय के अभाव में जो दिक्कतें आती थीं,रसोई में लकड़ी के धुएं से जो तकलीफ होती थी, पानी लेने के लिए दो-दो, चार-चार किलोमीटर जाना पड़ता था। आप ये सारी बातें अच्छी तरह जानती हैं। देश में 11 करोड़ से ज्यादा शौचालय बनाकर, 9 करोड़ से ज्यादा उज्जवला के गैस कनेक्शन देकर और करोड़ों परिवारों में नल से जल देकर के आपका जीवन आसान बनाया है।

माताओं-बहनों, गर्भावस्था के दौरान कितनी समस्याएं थीं, ये आप बेहतर जानती हैं। ठीक से खाना-पीना भी नहीं हो पाता था, चेकअप की सुविधाओं का भी अभाव था। इसलिए मातृवंदना योजना शुरु की। इसके तहत 11 हजार करोड़ रुपए से अधिक सीधे गर्भवती महिलाओं के बैंक खातों में ट्रांसफर किए गए। मध्य प्रदेश की भी बहनों को इसके तहत करीब 1300 करोड़ रुपए ऐसी गर्भवती महिलाओं के खाते में पहुंचे हैं। आयुष्मान भारत योजना के तहत मिल रहे 5 लाख रुपए तक के मुफ्त इलाज ने भी गरीब परिवार की बहनों की बहुत बड़ी मदद की है।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के अच्छे परिणाम आज देश अनुभव कर रहा है। बेटियां ठीक से पढ़ाई कर सकें, उनको स्कूल बीच में छोड़नी ना पड़े, इसके लिए स्कूलों में बेटियों के लिए अलग से शौचालय बनाए, सेनिटेरी पैड्स की व्यवस्था की गई। सुकन्या समृद्धि योजना के तहत लगभग ढाई करोड़ बच्चियों के अकाउंट खोले गए हैं। आज जनधन बैंक खाते देश में महिला सशक्तिकरण के बहुत बड़े माध्यम बने हैं। कोरोना काल में सरकार अगर आप बहनों के बैंक खाते में सीधे पैसा ट्रांसफर कर पाई है, तो उसके पीछे जनधन अकाउंट की ताकत है। हमारे यहां संपत्ति के मामले में ज्यादातर नियंत्रण पुरुषों के पास ही रहता है। अगर खेत है तो पुरुष के नाम पर, दुकान है तो पुरुष के नाम पर, घर है तो पुरुष के नाम पर, गाड़ी है तो पुरुष के नाम पर, स्कूटर है तो पुरुष के नाम पर, महिला के नाम पर कुछ नहीं और पति नहीं रहे तो बेटे के नाम पर चला जाए। हमने इस परिपाटी को खत्म करके मेरी माताओं-बहनों को ताकत दी है। आज प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत मिलने वाला घर हम सीधा-सीधा महिलाओं के नाम पर देते हैं।

महिला उसकी मालिक बन जाती है। हमारी सरकार ने देश की 2 करोड़ से ज्यादा महिलाओं को अपने घर की मालकिन बनाया है। ये बहुत बड़ा काम है माताओं-बहनों। मुद्रा योजना के तहत भी अभी तक देशभर में 19 लाख करोड़ रुपए का बिना गारंटी का ऋण छोटे-छोटे व्यापार-कारोबार के लिए दिया जा चुका है। ये जो पैसा है उसमें से लगभग 70 प्रतिशत मेरी माताएं-बहनें जो उद्यम करती हैं उन्होंने प्राप्त किया है। मुझे खुशी है कि सरकार के ऐसे प्रयासों के कारण आज घर के आर्थिक फैसलों में महिलाओं की भूमिका बढ़ रही है।

महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण उन्हें समाज में भी उतना ही सशक्त बनाता है। हमारी सरकार ने बेटियों के लिए सारे, जितने दरवाजे बंद थे ना, सारे दरवाजे को खोल दिए हैं। अब बेटियां सैनिक स्कूलों में भी दाखिल हो रही हैं, पुलिस कमांडो में जाकर के देश की सेवा कर रही हैं। इतना ही नहीं सीमा पर भारत मां की बेटी, भारत मां की रक्षा करने का काम फौज में जाकर कर रही है। पिछले 8 वर्षों में देश भर की पुलिस फोर्स में महिलाओं की संख्या 1 लाख से बढ़कर दोगुनी यानि 2 लाख से भी अधिक हो चुकी है। केंद्रीय बलों में भी अलग-अलग जो सुरक्षा बल हैं, आज हमारी 35 हजार से अधिक बेटियां देश के दुश्मनों से, आतंकवादियों से टक्कर ले रही हैं। आतंकवादियों को धूल चटा रही हैं। ये संख्या 8 साल पहले की तुलना में लगभग दोगुनी हो गई है। यानि परिवर्तन आ रहा है, हर क्षेत्र में आ रहा है। मुझे आपकी ताकत पर पूरा भरोसा है। सबका प्रयास से एक बेहतर समाज और सशक्त राष्ट्र बनाने में हम जरूर सफल होंगे। ▪

प्रधानमंत्री जी के संकल्पों को साकार करना है - मुख्यमंत्री श्री चौहान

"मोदी@20" पुस्तक का अनावरण

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी असाधारण एवं अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी हैं। उनके कुशल नेतृत्व में भारत ने विश्व में नई ऊँचाइयां प्राप्त की है, देश का मान-सम्मान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ा है, चहुँमुखी विकास हो रहा है। देश तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के संकल्पों को साकार करने की दिशा में मध्यप्रदेश में तेजी से कार्य हो रहे हैं।

''मोदी@20'' पुस्तक 22 विषय-विशेषज्ञ, प्रसिद्ध पेशेवर व्यक्तित्व और बुद्धिजीवी के विचारों और अनुभवों का एक संकलन है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शासन व्यवस्था में नए प्रतिमान स्थापित किये है। प्रधानमंत्री श्री मोदी सहृदय, संवेदनशील, अद्वितीय एवं असाधारण व्यक्तित्व के धनी है। कुशल संगठक, प्रशासक एवं कुशल नेतृत्वकर्ता है। उनके नेतृत्व में देश का अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर मान-स्वाभिमान बढ़ा है। उनके मुख्यमंत्रित्व काल में गुजरात के भूकंप तथा प्रधानमंत्रित्व काल में कोरोना के दौरान आपदा प्रबंधन के बेहतर कार्य हुए है। भूकंप हो या कोरोना का संकट काल आदि आपदा में नागरिकों के साथ अपनत्व के भाव से खड़े रहे हैं। उन्होंने संकट से निजात दिलाई। कोरोना वैक्सीन बना कर वर्तमान एवं भविष्य को सुरक्षित किया है। भारत की अर्थ-व्यवस्था को मजबूत बनाने की दिशा में भी उल्लेखनीय कार्य किये जा रहे हैं। इस क्षेत्र में भी स्वदेशी को बढ़ावा मिल रहा है। भारत आज विश्व की 5 वीं आर्थिक शक्ति बन गया है। सैन्य क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य हुये हैं। भारत की सुरक्षा को मजबूत बनाया गया है। दुश्मनों को कठोरता के साथ सबक सिखाया गया है। देश में औद्योगिक विकास की तरफ विशेष ध्यान दिया जा रहा है। स्वदेशी को बढ़ावा दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा स्वदेशी को नागरिकों के जीवन में उतारा जा रहा हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में दृढ़-संकल्प होकर अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये जाकर उन्हें कार्य रूप में परिणित किया गया है। कश्मीर से धारा-370 को समाप्त किया गया। नया कानून

बना कर तीन तलाक की कुप्रथा से महिलाओं को मुक्ति दिलाई गई।

उनके कार्यकाल में सभी बाधाएँ दूर कर अयोध्या में विशाल श्रीराम मंदिर बनाया जा रहा है। उनकी पहल पर योग को अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया गया है। आज विश्व के सभी देश अंर्तराष्ट्रीय योग दिवस मना रहे है। राष्ट्र भाषा हिन्दी को बढ़ावा दिया जा रहा है। स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से गंदगी और बदबू से नागरिकों को निजात मिल रही है। 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओं', अभियान भी प्रधानमंत्री श्री मोदी की देन है। ''मोदी@20'' पुस्तक को सभी लोग अवश्य पढ़ें और उनके संकल्पों को साकार करने की दिशा में आगे बढ़े। ▪

वाराणसी एससीओ पर्यटन एवं सांस्कृतिक राजधानी नामित

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के राष्ट्राध्यक्षों की परिषद की समरकंद, उज्बेकिस्तान में आयोजित 22वीं शिखर बैठक में वाराणसी शहर को 2022-2023 की अवधि के लिए पहली एससीओ पर्यटन और सांस्कृतिक राजधानी नामित किया गया है। वाराणसी को पहली एससीओ पर्यटन और सांस्कृतिक राजधानी नामित किए जाने से भारत और एससीओ के सदस्य देशों के बीच पर्यटन, सांस्कृतिक और लोगों के आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलेगा। यह एससीओ के सदस्य देशों, विशेष रूप से मध्य एशियाई गणराज्यों के साथ भारत के प्राचीन सभ्यतागत संबंधों को भी रेखांकित करता है। इस प्रमुख सांस्कृतिक आउटरीच कार्यक्रम के फ्रेमवर्क के अंर्तगत, वर्ष 2022-23 के दौरान वाराणसी में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिनमें भाग लेने के लिए एससीओ के सदस्य देशों से मेहमानों को आमंत्रित किया जाएगा। इन आयोजनों के प्रति भारतविदों, विद्वानों, लेखकों, संगीतकारों और कलाकारों, फोटो पत्रकारों, यात्रा ब्लॉगर्स और अन्य आमंत्रित अतिथियों के आकर्षित होने की आशा है। ▪

तनोट माँ सभी की रक्षा करती हैं

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में पहली बार सीमावर्ती क्षेत्रों में विकास पहुँच रहा है और बॉर्डर टूरिज्म की दूरदर्शी पहल के फलस्वरूप न सिर्फ सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन स्तर ऊपर उठ रहा है बल्कि यहाँ से पलायन भी रुक रहा है, जिससे क्षेत्र की सुरक्षा को भी बल मिल रहा है।

इसी कड़ी में 17.67 करोड़ रूपए की श्री तनोट मंदिर कॉम्प्लेक्स परियोजना का शिलान्यास किया, जिससे यहाँ आने वाले युवा श्री तनोट माता मंदिर के दर्शन करने के साथ ही देश के बहादुर सैनिकों के शौर्य व बलिदान के इतिहास को भी करीब से जान पाएंगे।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने राजस्थान के जैसलमेर में श्री तनोट मंदिर कॉम्प्लेक्स परियोजना का शिलान्यास और भूमिपूजन किया। श्री अमित शाह ने जैसलमेर में 'तनोट विजय स्तंभ' पर सीमाओं की सुरक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले वीर बलिदानियों को नमन कर कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से श्रद्धांजलि दी।

श्री तनोट मन्दिर कॉम्प्लेक्स परियोजना भारत सरकार द्वारा शुरू की जा रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में पहली बार सीमावर्ती क्षेत्रों में विकास पहुँच रहा है और बॉर्डर टूरिज्म की दूरदर्शी पहल के फलस्वरूप न सिर्फ सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन स्तर ऊपर उठ रहा है बल्कि यहाँ से पलायन भी रुक रहा है, जिससे क्षेत्र की सुरक्षा को भी बल मिल रहा है।

इसी कड़ी में 17.67 करोड़ रूपए की श्री तनोट मंदिर कॉम्प्लेक्स परियोजना का शिलान्यास किया, जिससे यहाँ आने वाले युवा श्री तनोट माता मंदिर के दर्शन करने के साथ ही देश के बहादुर सैनिकों के शौर्य व बलिदान के इतिहास को भी करीब से जान पाएंगे।

जैसलमेर के ऐतिहासिक श्री मातेश्वरी तनोट राय मंदिर का अद्भुत इतिहास है और ऐसी मान्यता है कि तनोट माँ जवानों को दुश्मनों से लड़ने की शक्ति देती हैं और युद्ध में देश की रक्षा करती हैं।

1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में श्री तनोट राय माता मंदिर परिसर में पकिस्तान द्वारा कई बम के गोले गिराए गये थे लेकिन तनोट माता के चमत्कार से कोई भी गोला नहीं फटा था। वर्ष 1965 से सीमा सुरक्षा बल इस मन्दिर की पूजा अर्चना एवं व्यवस्था का कार्यभार संभाल रहा है। सीमा सुरक्षा बल इस मन्दिर को एक ट्रस्ट के माध्यम से संचालित करता है एवं प्रतिदिन सुबह-शाम माता की आरती एवं भजन संध्या का आयोजन किया जाता है जिसमें हजारों की तादाद में देश के विभिन्न हिस्सों से श्रद्धालु गण आते हैं। इतिहास गवाह है कि 1971 के भारत- पाकिस्तान लोंगेवाला युद्ध के दौरान सीमा सुरक्षा बल के बहादुर जवानों ने लोंगेवाला पोस्ट पर अहम एवं निर्णायक भूमिका अदा की थी। ▪

पारंपरिक चिकित्सा का भारत ग्लोबल सेंटर

जब पूरा विश्व महामारी के बाद आर्थिक रिकवरी की चुनौतियों का सामना कर रहा है, SCO की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। SCO के सदस्य देश वैश्विक GDP में लगभग 30 प्रतिशत का योगदान देते हैं, और विश्व की 40 प्रतिशत जनसंख्या भी SCO देशों में निवास करती है। भारत SCO सदस्यों के बीच अधिक सहयोग और आपसी विश्वास का समर्थन करता है। महामारी और यूक्रेन के संकट से ग्लोबल सप्लाई चेन्स में कई बाधाएं उत्पन्न हुईं, जिसके कारण पूरा विश्व अभूतपूर्व ऊर्जा एवं खाद्य संकट का सामना कर रहा है। SCO को हमारे क्षेत्र में विश्वस्त, रेसिलिएंट और diversified सप्लाई चेन्स विकसित करने के लिए प्रयत्न करने चाहिए। इसके लिए बेहतर connectivity की आवश्यकता तो होगी ही, साथ ही यह भी महत्वपूर्ण होगा कि हम सभी एक दूसरे को transit का पूरा अधिकार दें।

हम भारत को एक manufacturing hub बनाने पर प्रगति कर रहे हैं। भारत का युवा और प्रतिभाशाली workforce हमें स्वाभाविक रूप से competitive बनाता है। इस वर्ष भारत की अर्थव्यवस्था में 7.5 प्रतिशत वृद्धि की आशा है, जो विश्व की बड़ी economies में सबसे अधिक होगी। हमारे people-centric development model में टेक्नोलॉजी के उचित उपयोग पर भी बहुत focus दिया जा रहा है। हम प्रत्येक सेक्टर में इनोवेशन का समर्थन कर रहे हैं। आज भारत में 70,000 से अधिक स्टार्ट-अप्स हैं, जिनमे से 100 से अधिक यूनिकॉर्न हैं। हमारा यह अनुभव कई अन्य SCO सदस्यों के भी काम आ सकता है। इसी उद्देश्य से हम एक नए Special Working Group on Startups and Innovation की स्थापना करके SCO के सदस्य देशों के साथ अपना अनुभव साझा करने के लिए तैयार हैं।

विश्व आज एक और बड़ी चुनौती का सामना कर रहा है - और यह है हमारे नागरिकों की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना। इस समस्या का एक संभावित समाधान है millets की खेती और उपभोग को बढ़ावा देना। Millets एक ऐसा सुपरफूड है, जो न सिर्फ SCO देशों में, बल्कि विश्व के कई भागों में हजारों सालों से उगाया जा रहा है, और खाद्य संकट से निपटने के लिए एक पारंपरिक, पोषक और कम लागत वाला विकल्प है। वर्ष 2023 को UN International Year of Millets के रूप में मनाया जाएगा। हमें SCO के अंतर्गत एक 'मिलेट फूड फेस्टिवल' के आयोजन पर विचार करना चाहिए।

भारत आज विश्व में medical and wellness tourism के लिए सबसे किफायती destinations में से एक है। अप्रैल 2022 में गुजरात में WHO Global Centre for Traditional Medicine का उद्घाटन किया गया। पारंपरिक चिकित्सा के लिए यह WHO का पहला और एकमात्र ग्लोबल सेंटर होगा। हमें SCO देशों के बीच ट्रेडिशनल मेडिसिन पर सहयोग बढ़ाना चाहिए। इसके लिए भारत एक नए SCO Working Group on Traditional Medicine पर पहल लेगा। ▪

इस वर्ष भारत की अर्थव्यवस्था में 7.5 प्रतिशत वृद्धि की आशा है, जो विश्व की बड़ी economies में सबसे अधिक होगी। हमारे people-centric development model में टेक्नोलॉजी के उचित उपयोग पर भी बहुत focus दिया जा रहा है।

हम प्रत्येक सेक्टर में इनोवेशन का समर्थन कर रहे हैं। आज भारत में 70,000 से अधिक स्टार्ट-अप्स हैं, जिनमे से 100 से अधिक यूनिकॉर्न हैं।

देश गुलामी की मानसिकता से मुक्त हो रहा है- नरेन्द्र मोदी

इंडिया गेट के समीप हमारे राष्ट्रनायक नेताजी सुभाषचंद्र बोस की विशाल प्रतिमा भी, मूर्ति भी स्थापित हुई है। गुलामी के समय यहाँ ब्रिटिश राजसत्ता के प्रतिनिधि की प्रतिमा लगी हुई थी।

देश ने उसी स्थान पर नेताजी की मूर्ति की स्थापना करके आधुनिक और सशक्त भारत की प्राण प्रतिष्ठा भी कर दी है। वाकई ये अवसर ऐतिहासिक है, ये अवसर अभूतपूर्व है। हम सभी का सौभाग्य है कि हम ये दिन देख रहे हैं, इसके साक्षी बन रहे हैं।

आजादी के अमृत महोत्सव में, देश को एक नई प्रेरणा मिली है, नई ऊर्जा मिली है। हम गुजरे हुए कल को छोड़कर, आने वाले कल की तस्वीर में नए रंग भर रहे हैं। जो हर तरफ ये नई आभा दिख रही है, वो नए भारत के आत्मविश्वास की आभा है। गुलामी का प्रतीक किंग्सवे यानि राजपथ, इतिहास की बात हो गया है, हमेशा के लिए मिट गया है। कर्तव्य पथ के रूप में नए इतिहास का सृजन हुआ है। सभी देशवासियों को आजादी के इस अमृतकाल में, गुलामी की एक और पहचान से मुक्ति के लिए बहुत-बहुत बधाई।

इंडिया गेट के समीप हमारे राष्ट्रनायक नेताजी सुभाषचंद्र बोस की विशाल प्रतिमा भी, मूर्ति भी स्थापित हुई है। गुलामी के समय यहाँ ब्रिटिश राजसत्ता के प्रतिनिधि की प्रतिमा लगी हुई थी। देश ने उसी स्थान पर नेताजी की मूर्ति की स्थापना करके आधुनिक और सशक्त भारत की प्राण प्रतिष्ठा भी कर दी है। वाकई ये अवसर ऐतिहासिक है, ये अवसर अभूतपूर्व है। हम सभी का सौभाग्य है कि हम ये दिन देख रहे हैं, इसके साक्षी बन रहे हैं।

सुभाषचंद्र बोस ऐसे महामानव थे जो पद और संसाधनों की चुनौती से परे थे। उनकी स्वीकार्यता ऐसी थी कि, पूरा विश्व उन्हें नेता मानता था। उनमें साहस था, स्वाभिमान था। उनके पास विचार थे, विजन था। उनमें नेतृत्व की क्षमता थी, नीतियाँ थीं। नेताजी सुभाष कहा करते थे- भारत वो देश नहीं जो अपने गौरवमयी इतिहास को भुला दे। भारत का गौरवमयी इतिहास हर भारतीय के खून में है, उसकी परंपराओं में है। नेताजी सुभाष भारत की विरासत पर गर्व करते थे और भारत को जल्द से जल्द आधुनिक भी बनाना चाहते थे। अगर आजादी के बाद हमारा भारत सुभाष बाबू की राह पर चला होता तो आज देश कितनी ऊंचाइयों पर होता! लेकिन दुर्भाग्य से, आजादी के बाद हमारे इस महानायक को भुला दिया गया। उनके विचारों को, उनसे जुड़े प्रतीकों तक को नजर-अंदाज कर दिया गया। सुभाष बाबू के 125वें जयंती वर्ष के आयोजन के अवसर पर मुझे कोलकाता में उनके घर जाने का सौभाग्य मिला था। नेताजी से जुड़े स्थान पर उनकी जो अनंत ऊर्जा थी, मैंने उसे महसूस किया। देश का प्रयास है कि नेताजी की वो ऊर्जा देश का पथ-प्रदर्शन करे। कर्तव्य पथ पर नेताजी की प्रतिमा इसका माध्यम बनेगी। देश की

नीतियों और निर्णयों में सुभाष बाबू की छाप रहे, ये प्रतिमा इसके लिए प्रेरणास्रोत बनेगी।

पिछले आठ वर्षों में हमने एक के बाद एक ऐसे कितने ही निर्णय लिए हैं, जिन पर नेता जी के आदर्शों और सपनों की छाप है। नेताजी सुभाष, अखंड भारत के पहले प्रधान थे जिन्होंने 1947 से भी पहले अंडमान को आजाद कराकर तिरंगा फहराया था। उस वक्त उन्होंने कल्पना की थी कि लालकिले पर तिरंगा फहराने की क्या अनुभूति होगी। इस अनुभूति का साक्षात्कार मैंने स्वयं किया, जब मुझे आजाद हिंद सरकार के 75 वर्ष होने पर लाल किले पर तिरंगा फहराने का सौभाग्य मिला। हमारी ही सरकार के प्रयास से लालकिले में नेता जी और आजाद हिन्द फौज से जुड़ा म्यूजियम भी बनाया गया है।

मैं वो दिन भूल नहीं सकता जब 2019 में गणतंत्र दिवस की परेड में आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों ने भी हिस्सा लिया था। इस सम्मान का उन्हें दशकों से इंतजार था। अंडमान में जिस स्थान पर नेताजी ने तिरंगा फहराया था, मुझे वहां भी जाने का अवसर मिला, तिरंगा फहराने का सौभाग्य मिला। वो क्षण हर देशवासी के लिए गर्व का क्षण था।

अंडमान के वो द्वीप, जिसे नेताजी ने सबसे पहले आजादी दिलाई थी, वो भी कुछ समय पहले तक गुलामी की निशानियों को ढोने के लिए मजबूर थे! आजाद भारत में भी उन द्वीपों के नाम अंग्रेजी शासकों के नाम पर थे। हमने गुलामी की उन निशानियों को मिटाकर इन द्वीपों को नेताजी सुभाष से जोड़कर भारतीय नाम दिए, भारतीय पहचान दी। आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर देश ने अपने लिए 'पंच प्रणों' का विजन रखा है। इन पंच प्रणों में विकास के बड़े लक्ष्यों का संकल्प है, कर्तव्यों की प्रेरणा है। इसमें गुलामी की मानसिकता के त्याग का आवाहन है, अपनी विरासत पर गर्व का बोध है। आज भारत के आदर्श अपने हैं, आयाम अपने हैं। आज भारत के संकल्प अपने हैं, लक्ष्य अपने हैं। आज हमारे पथ अपने हैं, प्रतीक अपने हैं। अगर राजपथ का अस्तित्व समाप्त होकर कर्तव्यपथ बना है, अगर जॉर्ज पंचम की मूर्ति के निशान को हटाकर नेताजी की मूर्ति लगी है, तो ये गुलामी की मानसिकता के परित्याग का पहला उदाहरण नहीं है। ये न शुरुआत है, न अंत है। ये मन और मानस की आजादी का लक्ष्य हासिल करने तक, निरंतर चलने वाली संकल्प यात्रा है। देश के प्रधानमंत्री जहां रहते आए हैं, उस जगह का नाम रेस कोर्स रोड से बदलकर लोक-कल्याण मार्ग हो चुका है। हमारे गणतन्त्र दिवस समारोह में अब भारतीय वाद्य यंत्रों की भी गूंज सुनाई देती है। Beating Retreat Ceremony में अब देशभक्ति से सराबोर गीतों को सुनकर हर भारतीय आनंद से भर जाता है। अभी हाल ही में, भारतीय

नौसेना ने भी गुलामी के निशान को उतारकर, छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रतीक को धारण कर लिया है। नेशनल वॉर मेमोरियल बनाकर देश ने, समस्त देशवासियों की बरसों पुरानी इच्छा को भी पूरा किया है।

ये बदलाव केवल प्रतीकों तक ही सीमित नहीं है, ये बदलाव देश की नीतियों का भी हिस्सा बन चुका है। देश अंग्रेजों के जमाने से चले आ रहे सैकड़ों कानूनों को बदल चुका है। भारतीय बजट, जो इतने दशकों से ब्रिटिश संसद के समय का अनुसरण कर रहा था, उसका समय और तारीख भी बदली गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए अब विदेशी भाषा की मजबूरी से भी देश के युवाओं को आजाद किया जा रहा है। यानी, आज देश का विचार और देश का व्यवहार दोनों गुलामी की मानसिकता से मुक्त हो रहे हैं। ये मुक्ति हमें विकसित भारत के लक्ष्य तक लेकर जाएगी।

महाकवि भरतियार ने भारत की महानता को लेकर तमिल भाषा में बहुत ही सुंदर कविता लिखी थी। इस कविता का शीर्षक है-

पारुकुलै नल्ल नाडअ-यिंगल,
भारत नाड-अ,

महाकवि भरतियार की ये कविता हर भारतीय को गर्व से भर देने वाली हैं। उनकी कविता का अर्थ है, हमारा देश भारत, पूरे विश्व में सबसे महान है। ज्ञान में, अध्यात्म में, गरिमा में, अन्न दान में, संगीत में, शाश्वत कविताओं में, हमारा देश भारत, पूरे विश्व में सबसे महान है। वीरता में, सेनाओं के शौर्य में, करुणा में, दूसरों की सेवा में, जीवन के सत्य को खोजने में, वैज्ञानिक अनुसंधान में, हमारा देश भारत, पूरे विश्व में सबसे महान है। ये तमिल कवि भरतियार का, उनकी कविता का एक-एक शब्द, एक-एक भाव को अनुभव कीजिए।

गुलामी के उस कालखंड में, ये पूरे विश्व को भारत की हुंकार थी। ये हमारे स्वतंत्रता सेनानियों का आव्हान था। जिस भारत का वर्णन भरतियार ने अपनी कविता में किया है, हमें उस सर्वश्रेष्ठ भारत का निर्माण करके ही रहना है। और इसका रास्ता इस कर्तव्य पथ से ही जाता है।

कर्तव्यपथ केवल ईंट-पत्थरों का रास्ता भर नहीं है। ये भारत के लोकतान्त्रिक अतीत और सर्वकालिक आदर्शों का जीवंत मार्ग है। यहाँ जब देश के लोग आएंगे, तो नेताजी की प्रतिमा, नेशनल वार मेमोरियल, ये सब उन्हें कितनी बड़ी प्रेरणा देंगे, उन्हें कर्तव्यबोध से ओत-प्रोत करेंगे! इसी स्थान पर देश की सरकार काम कर रही है। आप कल्पना करिए, देश ने जिन्हें जनता की सेवा का दायित्व सौंपा हो, उन्हें राजपथ, जनता का सेवक होने का एहसास कैसे कराता? अगर पथ ही राजपथ हो, तो यात्रा लोकमुखी कैसे होगी? राजपथ ब्रिटिश राज के लिए था, जिनके लिए भारत के लोग गुलाम थे। राजपथ की भावना भी गुलामी का प्रतीक थी, उसकी संरचना भी गुलामी का प्रतीक थी। आज इसका आर्किटेक्चर भी बदला है, और उसकी आत्मा भी बदली है। अब देश के सांसद, मंत्री, अधिकारी जब इस पथ से गुजरेंगे तो उन्हें कर्तव्यपथ से देश के प्रति कर्तव्यों का बोध होगा, उसके लिए नई ऊर्जा मिलेगी, प्रेरणा मिलेगी। नेशनल वॉर मेमोरियल से लेकर कर्तव्यपथ से होते हुए राष्ट्रपति भवन का ये पूरा क्षेत्र उनमें Nation First, राष्ट्र ही प्रथम, इस भावना का प्रवाह प्रति पल संचारित होगा।

इस अवसर पर, मैं अपने उन श्रमिक साथियों का विशेष आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने कर्तव्यपथ को केवल बनाया ही नहीं है, बल्कि अपने श्रम की पराकाष्ठा से देश को कर्तव्य पथ दिखाया भी है। मुझे उन श्रमजीवियों से मुलाकात का भी अवसर मिला। उनसे बात करते समय मैं ये महसूस कर रहा था कि, देश के गरीब, मजदूर और सामान्य मानवी के भीतर भारत का कितना भव्य सपना बसा हुआ है! अपना पसीना बहाते

समय वो उसी सपने को सजीव कर देते हैं और जब मैं, इस अवसर पर मैं उन हर गरीब मजदूर को भी देश की तरफ से धन्यवाद करता हूँ, उनका अभिनंदन करता हूं, जो देश के अभूतपूर्व विकास को ये हमारे श्रमिक भाई गति दे रहे हैं। और जब मैं इन श्रमिक भाई-बहनों से मिला तो मैंने उनसे कहा है कि इस बार 26 जनवरी को जिन्होंने यहाँ पर काम किया है, जो श्रमिक भाई हैं, वो परिवार के साथ मेरे विशेष अतिथि रहेंगे, 26 जनवरी के कार्यक्रम में। मुझे संतोष है कि नए भारत में श्रम और श्रमजीवियों के सम्मान की एक संस्कृति बन रही है, एक परंपरा पुनर्जीवित हो रही है।

जब नीतियों में संवेदनशीलता आती है, तो निर्णय भी उतने ही संवेदनशील होते चले जाते हैं। इसीलिए, देश अब अपनी श्रम-शक्ति पर गर्व कर रहा है। 'श्रम एव जयते' आज देश का मंत्र बन रहा है। इसीलिए, जब बनारस में, काशी में, विश्वनाथ धाम के लोकार्पण का अलौकिक अवसर होता है, तो श्रमजीवियों के सम्मान में भी पुष्प वर्षा होती है। जब प्रयागराज में कुम्भ का पवित्र पर्व होता है, तो श्रमिक स्वच्छता कर्मियों का आभार व्यक्त किया जाता है। अभी कुछ दिन पहले ही देश को स्वदेशी विमान वाहक युद्धपोत INS विक्रांत मिला है। मुझे तब भी INS विक्रांत के निर्माण में दिन रात काम करने वाले श्रमिक भाई-बहनों और उनके परिवारों से मिलने का अवसर मिला था। मैंने उनसे मिलकर उनका आभार व्यक्त किया था। श्रम के सम्मान की ये परंपरा देश के संस्कारों का अमिट हिस्सा बन रही है। आपको जानकर अच्छा लगेगा कि नई संसद के निर्माण के बाद उसमें काम करने वाले श्रमिकों को भी एक विशेष गैलरी में स्थान दिया जाएगा। ये गैलरी आने वाली पीढ़ियों को भी ये याद दिलाएँगी कि लोकतन्त्र की नींव में एक ओर संविधान है, तो दूसरी ओर श्रमिकों का योगदान भी है। यही प्रेरणा हर एक देशवासी को ये कर्तव्यपथ भी देगा। यही प्रेरणा श्रम से सफलता का मार्ग प्रशस्त करेगी।

हमारे व्यवहार में, हमारे साधनों में, हमारे संसाधनों में, हमारे इंफ्रास्ट्रक्चर में, आधुनिकता का इस अमृतकाल का प्रमुख लक्ष्य है।

जब हम इंफ्रास्ट्रक्चर की बात करते हैं तो अधिकतर लोगों के मन में पहली तस्वीर सड़कों या फ्लाईओवर की ही आती है। लेकिन आधुनिक होते भारत में इंफ्रास्ट्रक्चर का विस्तार उससे भी बहुत बड़ा है, उसके बहुत पहलू हैं। भारत सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर, ट्रांसपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ ही कल्चरल इंफ्रास्ट्रक्चर पर भी उतनी ही तेजी से काम कर रहा है। मैं आपको सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर का उदाहरण देता हूं।

देश में एम्स की संख्या पहले के मुकाबले तीन गुना हो चुकी है। मेडिकल कॉलेजों की संख्या में भी 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ये दिखाता है कि भारत आज अपने नागरिकों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए, उन्हें मेडिकल की आधुनिक सुविधाएं पहुंचाने के लिए किस तरह काम कर रहा है। देश में नई IIT's, ट्रिपल आईटी, वैज्ञानिक संस्थाओं का आधुनिक नेटवर्क का लगातार विस्तार किया जा रहा है, तैयार किया जा रहा है। बीते तीन वर्षों में साढ़े 6 करोड़ से ज्यादा ग्रामीण घरों को पाइप से पानी की सप्लाई सुनिश्चित की गई है। देश के हर जिले में 75 अमृत सरोवर बनाने का महाअभियान भी चल रहा है। भारत का ये सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर, सामाजिक न्याय को और समृद्ध कर रहा है। ट्रांसपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास पर आज भारत जितना काम कर रहा है, उतना पहले कभी नहीं हुआ। आज एक तरफ देशभर में ग्रामीण सड़कों का रिकॉर्ड निर्माण हो रहा है तो वहीं रिकॉर्ड संख्या में आधुनिक एक्सप्रेस वे बनाए जा रहे हैं। आज देश में तेजी से रेलवे का इलेक्ट्रिफिकेशन हो रहा है तो उतनी ही तेजी से अलग-अलग शहरों में मेट्रो का भी विस्तार हो रहा है। आज देश में अनेकों नए एयरपोर्ट बनाए जा रहे हैं तो वॉटर वे की संख्या में भी अभूतपूर्व वृद्धि की जा रही है। डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में तो भारत, आज पूरे विश्व के अग्रणी देशों में अपनी जगह बना चुका है। डेढ़ लाख से ज्यादा पंचायतों तक ऑप्टिकल फाइबर पहुंचाना हो, डिजिटल पेमेंट के नए रिकॉर्ड हों, भारत की डिजिटल प्रगति की चर्चा पूरी दुनिया में हो रही है।

इंफ्रास्ट्रक्चर के इन कार्यों के बीच, भारत में कल्चरल इंफ्रास्ट्रक्चर पर जो काम किया गया है, उसकी उतनी चर्चा नहीं हो पाई है। प्रसाद स्कीम के तहत देश के अनेको तीर्थस्थलों का पुनुरुद्धार किया जा रहा है। काशी-केदारनाथ-सोमनाथ से लेकर करतारपुर साहिब कॉरिडोर तक के लिए जो कार्य हुआ है, वो अभूतपूर्व है। जब हम कल्चरल इंफ्रास्ट्रक्चर की बात करते हैं तो उसका मतलब सिर्फ आस्था की जगहों से जुड़ा इंफ्रास्ट्रक्चर ही नहीं है। इंफ्रास्ट्रक्चर, जो हमारे इतिहास से जुड़ा हुआ हो, जो हमारे राष्ट्र नायकों और राष्ट्र नायिकाओं से जुड़ा हो, जो हमारी विरासत से जुड़ा हो, उसका भी उतनी ही तत्परता से निर्माण किया जा रहा है। सरदार पटेल की स्टैच्यू ऑफ यूनिटी हो या फिर आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित म्यूजियम, पीएम म्यूजियम हो या फिर बाबा साहेब आंबेडकर मेमोरियल, नेशनल वॉर मेमोरियल हो या फिर नेशनल पुलिस मेमोरियल, ये कल्चरल इंफ्रास्ट्रक्चर के उदाहरण हैं। ये परिभाषित करते हैं कि एक राष्ट्र के तौर पर हमारी संस्कृति क्या है, हमारे मूल्य क्या हैं, और कैसे हम इन्हें सहेज रहे हैं।

एक आकांक्षी भारत, सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर, ट्रांसपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ ही कल्चरल इंफ्रास्ट्रक्चर को गति देते हुए ही तेज प्रगति कर सकता है। मुझे खुशी है कि आज कर्तव्यपथ के रूप में देश को कल्चरल इंफ्रास्ट्रक्चर का एक और बेहतरीन उदाहरण मिल रहा है। आर्किटैक्चर से लेकर आदर्शों तक, आपको यहाँ भारतीय संस्कृति के दर्शन भी होंगे, और बहुत कुछ सीखने को भी मिलेगा। मैं देश के हर एक नागरिक का आवाहन करता हूँ, आप सभी को आमंत्रण देता हूँ, आइये, इस नवनिर्मित कर्तव्यपथ को आकर देखिए। इस निर्माण में आपको भविष्य का भारत नजर आएगा। यहाँ की ऊर्जा आपको हमारे विराट राष्ट्र के लिए एक नया विजन देगी, एक नया विश्वास देगी।

ये पूरा क्षेत्र दिल्ली के लोगों की धड़कन है, यहां शाम को बड़ी संख्या में लोग अपने परिवार के साथ आते हैं, समय बिताते हैं। कर्तव्य पथ की प्लानिंग, डिजाइनिंग और लाइटिंग, इसे ध्यान में रखते हुए भी की गई है। विश्वास है, कर्तव्य पथ की ये प्रेरणा देश में कर्तव्यबोध का जो प्रवाह पैदा करेगी, ये प्रवाह ही हमें नए और विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि तक लेकर जाएगा। ▪

नए भविष्य का सूर्योदय
INS विक्रांत

केरल के समुद्री तट पर भारत का हर भारतवासी, एक नए भविष्य के सूर्योदय का साक्षी बन रहा है। INS विक्रांत विश्व क्षितिज पर भारत के बुलंद होते हौसलों की हुंकार है। आजादी के आंदोलन में हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने जिस सक्षम, समर्थ और शक्तिशाली भारत का सपना देखा था, उसकी एक सशक्त तस्वीर INS विक्रांत है।

विक्रांत-विशाल है, विराट है, विहंगम है। विक्रांत विशिष्ट है, विक्रांत विशेष भी है। विक्रांत केवल एक युद्धपोत नहीं है। ये 21वीं सदी के भारत के परिश्रम, प्रतिभा, प्रभाव और प्रतिबद्धता का प्रमाण है। यदि लक्ष्य दुरन्त हैं, यात्राएं दिगंत हैं, समंदर और चुनौतियाँ अनंत हैं- तो भारत का उत्तर है-विक्रांत। आजादी के अमृत महोत्सव का अतुलनीय अमृत है-विक्रांत। आत्मनिर्भर होते भारत का अद्वितीय प्रतिबिंब है-विक्रांत। ये हर भारतीय के लिए गर्व और गौरव का अनमोल अवसर है। ये हर भारतीय का मान-स्वाभिमान बढ़ाने वाला अवसर है।

लक्ष्य कठिन से कठिन क्यों ना हों, चुनौतियां बड़ी से बड़ी क्यों ना हों, भारत जब ठान लेता है, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता है।

विक्रांत-विशाल है, विराट है, विहंगम है। विक्रांत विशिष्ट है, विक्रांत विशेष भी है। विक्रांत केवल एक युद्धपोत नहीं है। ये 21वीं सदी के भारत के परिश्रम, प्रतिभा, प्रभाव और प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

यदि लक्ष्य दुरन्त हैं, यात्राएं दिगंत हैं, समंदर और चुनौतियाँ अनंत हैं- तो भारत का उत्तर है-विक्रांत। आजादी के अमृत महोत्सव का अतुलनीय अमृत है-विक्रांत।

भारत विश्व के उन देशों में शामिल हो गया है, जो स्वदेशी तकनीक से इतने विशाल एयरक्राफ्ट कैरियर का निर्माण करता है। INS विक्रांत ने देश को एक नए विश्वास से भर दिया है, देश में एक नया भरोसा पैदा कर दिया है। विक्रांत को देखकर समंदर की ये लहरें आव्हान कर रही हैं-

अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

केरल की पुण्य भूमि पर देश को ये उपलब्धि मिली है, INS विक्रांत के हर भाग की अपनी एक खूबी है, एक ताकत है, अपनी एक विकास-यात्रा भी है। ये स्वदेशी सामर्थ्य, स्वदेशी संसाधन और स्वदेशी कौशल का प्रतीक है। इसके एयरबेस में जो स्टील लगी है, वो स्टील भी स्वदेशी है। ये स्टील DRDO के वैज्ञानिकों ने विकसित किया, भारत की कंपनियों ने प्रोड्यूस किया।

ये एक युद्धपोत से भी ज्यादा, एक तैरता हुआ एयरफील्ड है, एक तैरता हुआ शहर है। इसमें जितनी बिजली पैदा होती है, उससे 5 हजार घरों को रोशन किया जा सकता है। इसका फ्लाइट डेक भी दो फुटबाल ग्राउंड के बराबर है। विक्रांत में जितने केबल्स और वायर्स इस्तेमाल हुए हैं, वो कोच्चि से शुरू हों तो काशी तक पहुँच सकते हैं। ये जटिलता, हमारे इंजीनियर्स की जीवटता का उदाहरण है। मेगा-इंजीनियरिंग से लेकर नैनो सर्किट्स तक, पहले जो भारत के लिए अकल्पनीय था, वो हकीकत में बदल

रहा है।

इस बार स्वतन्त्रता दिवस पर लाल किले से 'पंच प्रण' का आव्हान किया है। इन पंच प्रणों में...

- **पहला प्रण है-** विकसित भारत का बड़ा संकल्प!
- **दूसरा प्रण है-** गुलामी की मानसिकता का सम्पूर्ण त्याग।
- **तीसरा प्रण है-** अपनी विरासत पर गर्व।
- **चौथा और पांचवा प्रण है-** देश की एकता, एकजुटता, और नागरिक कर्तव्य!

INS विक्रांत के निर्माण और इसकी यात्रा में हम इन सभी पंच प्रणों की ऊर्जा को देख सकते हैं। INS विक्रांत इस ऊर्जा का जीवंत संयंत्र है। अभी तक इस तरह के एयरक्राफ्ट कैरियर केवल विकसित देश ही बनाते थे। भारत ने इस लीग में शामिल होकर विकसित राष्ट्र की दिशा में एक और कदम बढ़ा दिया है।

जल परिवहन के क्षेत्र में भारत का बहुत गौरवमयी इतिहास रहा है, हमारी समृद्ध विरासत रही है। हमारे यहाँ नौकाओं और जहाजों से जुड़े श्लोकों में बताया गया है-

दीर्घिका तरणि: लोला, गत्वरा
गामिनी तरि:।
जंघाला प्लाविनी चैव, धारिणी
वेगिनी तथा॥

ये हमारे शास्त्रों में इतना वर्णन है। दीर्घिका, तरणि लोला, गत्वरा, गामिनी, जंघाला, प्लाविनी, धारिणी, वेगिनी... हमारे यहां जहाजों और नौकाओं के अलग-अलग आकार और प्रकार होते थे। हमारे वेदों में भी नौकाओं, जहाजों और समुद्र से जुड़े कितने ही मंत्र आते हैं। वैदिक काल से लेकर गुप्तकाल और मौर्यकाल तक, भारत के समुद्री सामर्थ्य का डंका पूरे विश्व में बजता था। छत्रपति वीर शिवाजी महाराज ने इस समुद्री सामर्थ्य के दम पर ऐसी नौसेना का निर्माण किया, जो दुश्मनों की नींद उड़ाकर रखती थी।

जब अंग्रेज भारत आए, तो वो भारतीय जहाजों और उनके जरिए होने वाले व्यापार की ताकत से घबराए रहते थे। इसलिए उन्होंने भारत के समुद्री सामर्थ्य की कमर तोड़ने का फैसला लिया। इतिहास गवाह है कि कैसे उस समय ब्रिटिश संसद में कानून बनाकर भारतीय जहाजों और व्यापारियों पर कड़े प्रतिबंध लगा दिए गए थे।

भारत के पास प्रतिभा थी, अनुभव था। लेकिन हमारे लोग इस कुटिलता के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं थे। हम कमजोर पड़े, और उसके बाद गुलामी के कालखंड में अपनी ताकत को धीरे-धीरे भुला बैठे। अब आजादी के अमृतकाल में भारत अपनी उस खोई हुई शक्ति को वापस ला रहा है, उस ऊर्जा को फिर से जगा रहा है।

2 सितंबर, 2022 की ऐतिहासिक तारीख को, इतिहास बदलने वाला एक और काम हुआ है। भारत ने, गुलामी के एक निशान, गुलामी के एक बोझ को अपने सीने से उतार दिया है।

भारतीय नौसेना को एक नया ध्वज मिला है। अब तक भारतीय नौसेना के ध्वज पर गुलामी की पहचान बनी हुई थी। लेकिन अब छत्रपति शिवाजी महाराज से प्रेरित, नौसेना का नया ध्वज समंदर और आसमान में लहराएगा।

2 सितंबर, 2022 की ऐतिहासिक तारीख को, इतिहास बदलने वाला एक और काम हुआ है। भारत ने, गुलामी के एक निशान, गुलामी के एक बोझ को अपने सीने से उतार दिया है। भारतीय नौसेना को एक नया ध्वज मिला है। अब तक भारतीय नौसेना के ध्वज पर गुलामी की पहचान बनी हुई थी। लेकिन अब छत्रपति शिवाजी महाराज से प्रेरित, नौसेना का नया ध्वज समंदर और आसमान में लहराएगा।

कभी रामधारी सिंह दिनकर जी ने अपनी कविता में लिखा था-

नवीन सूर्य की नई प्रभा, नमो, नमो, नमो!
नमो स्वतंत्र भारत की ध्वजा,
नमो, नमो, नमो!

इसी ध्वज वंदना के साथ ये नया ध्वज, नौसेना के जनक, छत्रपति वीर शिवाजी महाराज को समर्पित। विश्वास है, भारतीयता की भावना से ओतप्रोत ये नया ध्वज, भारतीय नौसेना के आत्मबल और आत्मसम्मान को नई ऊर्जा देगा। हमारी सेनाओं में किस तरह बदलाव आ रहा है, उसका एक और अहम पक्ष सभी देशवासियों के सामने रखना चाहता हूं। विक्रांत जब हमारे समुद्री क्षेत्र की सुरक्षा के लिए उतरेगा, तो उस पर नौसेना की अनेक महिला सैनिक भी तैनात रहेंगी। समंदर की अथाह शक्ति के साथ असीम महिला शक्ति, ये नए भारत की बुलंद पहचान बन रही है।

नेवी में करीब 600 महिला ऑफिसर्स हैं। लेकिन, अब इंडियन नेवी ने अपनी सभी शाखाओं को महिलाओं के लिए खोलने का फैसला किया है। जो पाबन्दियाँ थीं वो अब हट रही हैं। जैसे समर्थ लहरों के लिए कोई दायरे नहीं होते, वैसे ही भारत की बेटियों के लिए भी अब कोई दायरे या बंधन नहीं हैं।

अभी एक-दो साल पहले वूमेन ऑफिसर्स ने तारिणी बोट से पूरी पृथ्वी की परिक्रमा की थी। आने वाले समय में ऐसे पराक्रम के लिए कितनी ही बेटियाँ आगे आएंगी, दुनिया को अपनी शक्ति से परिचित करवाएँगी। नेवी की तरह ही, तीनों सशस्त्र सेनाओं में युद्धक भूमिकाओं में महिलाओं को शामिल किया जा रहा है, उनके लिए नई जिम्मेदारियों के रास्ते खोले जा रहे हैं।

आत्मनिर्भरता और आजादी को एक दूसरे का पूरक कहा जाता है। जो देश जितना दूसरे किसी दूसरे देश पर निर्भर है, उतना ही उसके लिए संकट है। जो देश जितना आत्मनिर्भर है,

वो उतना ही सशक्त है। कोरोना के संकटकाल में हम सभी ने आत्मनिर्भर होने की इस ताकत को देखा है, समझा है, अनुभव किया है। इसलिए भारत, आत्मनिर्भर होने के लिए पूरी शक्ति से काम कर रहा है।

अगर अथाह समंदर में भारत की ताकत का उद्घोष करने के लिए INS विक्रांत तैयार है, तो अनंत आकाश में यही गर्जना हमारे तेजस कर रहे हैं। इस बार 15 अगस्त को पूरे देश ने लाल किले से स्वदेशी तोप की हुंकार भी सुनी है। आजादी के 75 साल बाद सेनाओं में Reform करके, भारत अपनी सेनाओं को निरंतर आधुनिक बना रहा है, आत्मनिर्भर बना रहा है।

हमारी सेनाओं ने ऐसे उपकरणों की एक लंबी लिस्ट भी बनाई है, जिनकी खरीद अब स्वदेशी कंपनियों से ही की जाएगी। डिफेंस सेक्टर में रिसर्च एंड डेवलपमेंट के लिए 25 प्रतिशत बजट भी देश की यूनिवर्सिटिज और देश की कंपनियों को ही उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में दो बड़े डिफेंस कॉरिडोर्स भी विकसित हो रहे हैं। डिफेंस सेक्टर में आत्मनिर्भरता के लिए उठाए जा रहे इन कदमों से, देश में रोजगार के अनेकों नए अवसर पैदा हो रहे हैं।

एक बार लाल किले से मैंने नागरिक कर्तव्य, इसकी भी बात कही है। इस बार मैंने उसको दोहराया भी है। बूंद-बूंद जल से जैसे विराट समंदर बन जाता है। वैसे ही भारत का एक-एक नागरिक अगर 'वोकल फॉर लोकल' के मंत्र को जीना प्रारंभ कर देगा, तो देश को आत्मनिर्भर बनने में अधिक समय नहीं लगेगा। जब सभी देशवासी लोकल के लिए वोकल होंगे तो उसकी गूंज सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में सुनाई देगी और देखते ही देखते दुनिया के जो भी मैन्युफैक्चरर होंगे उनको भी मजबूरन भारत में आ करके मैन्युफैक्चरिंग के रास्ते पर चलना पड़ेगा। ये ताकत एक-एक नागरिक के अपने-आप के तजुर्बे में है।

जिस तेजी से वैश्विक परिवेश बदल रहा है, उसने विश्व को multi-polar बना दिया है। इसलिए, आने वाले समय में भविष्य की गतिविधियों और सक्रियता का केंद्र कहाँ होगा, ये भविष्य दृष्टि बहुत जरूरी हो जाती है। उदाहरण के तौर पर, पिछले समय में इंडो-पैसिफिक रीजन और इंडियन ओशन में सुरक्षा चिंताओं को लंबे समय तक नजरंदाज किया जाता रहा है। लेकिन, ये क्षेत्र हमारे लिए देश की बड़ी रक्षा प्राथमिकता हैं। इसलिए हम नौसेना के लिए बजट बढ़ाने से लेकर उसकी क्षमता बढ़ाने तक, हर दिशा में काम कर रहे हैं।

चाहे, offshore patrol vessels हों, submarines हों, या aircraft carriers हों, भारत की नौसेना की ताकत अभूतपूर्व गति से बढ़ रही है। इससे आने वाले समय में हमारी नेवी और मजबूत होगी। ज्यादा सुरक्षित 'सी-लेन्स', बेहतर monitoring और बेहतर protection से हमारा एक्सपोर्ट, मैरिटाइम ट्रेड और मैरिटाइम प्रॉडक्शन भी बढ़ेगा। इससे केवल भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया के दूसरे देशों, और विशेषकर हमारे पड़ोसी मित्र राष्ट्रों के लिए व्यापार और समृद्धि के नए रास्ते खुलेंगे।

हमारे यहाँ शास्त्रों में कहा जाता है और बहुत महत्वपूर्ण बात कही जाती है और जिस बात को हमारे लोगों ने संस्कार के रूप में जीया है। हमारे यहां शास्त्रों में कहा गया है-

विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीतम् एतद्, ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

अर्थात, दुष्ट की विद्या विवाद करने के लिए, धन घमंड करने के लिए और शक्ति दूसरों को प्रताड़ित करने के लिए होती है। लेकिन, सज्जन के लिए ये ज्ञान, दान और कमजोर की रक्षा का जरिया होता है। यही भारत का संस्कार है, इसीलिए विश्व को सशक्त भारत की ज्यादा जरूरत है।

एक बार पढ़ा था कि एक बार जब डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम से किसी ने पूछा कि आपका व्यक्तित्व तो बड़ा शांति प्रिय है, आप तो बड़े शांत व्यक्ति लगते हैं, तो आपको हथियारों की क्या जरूरत लगती है? कलाम साहब ने कहा था- शक्ति और शांति एक दूसरे के लिए जरूरी हैं। और इसीलिए, आज भारत बल और बदलाव दोनों को एक साथ लेकर चल रहा है।

विश्वास है, सशक्त भारत शांत और सुरक्षित विश्व का मार्ग प्रशस्त करेगा। ▪

देश को वैश्विक महाशक्ति बनने की दिशा में आगे बढ़ाएगा आईएनएस विक्रांत- विष्णुदत्त शर्मा

स्वदेशी विमान वाहक पोत आईएनएस विक्रांत उन प्रयासों का नतीजा है, जो प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने देश को सुरक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर, सक्षम और सशक्त बनाने के लिए शुरू किए हैं। आईएनएस विक्रांत का नौसेना में शामिल होना देश को वैश्विक ताकत बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है, जिसके लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह तथा विक्रांत के डिजाइन और निर्माण से जुड़े वैज्ञानिकों, इंजीनियरों तथा तकनीशियनों का आभार।

स्वदेशी तकनीक और उपकरणों से आईएनएस विक्रांत के निर्माण के साथ ही भारत दुनिया के उन चार देशों में शामिल हो गया है, जो इतने विशाल विमान वाहक पोत को तैयार कर सकते हैं। अपने सभी परीक्षणों में सफल होने के बाद आईएनएस विक्रांत को नौसेना में शामिल किया जाना उन लोगों को करारा जवाब है, जो प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा शुरू किए गए आत्मनिर्भर भारत अभियान पर सवाल खड़े करते रहे हैं। यह बताता है कि अगर अवसर और उचित प्रोत्साहन मिले, तो भारतीय इंजीनियर्स और वैज्ञानिक दुनिया के किसी भी देश से पीछे नहीं हैं। इस विशाल और ताकतवर पोत के नौसेना में शामिल होने से हमारी नौसेना हिंद-प्रशांत क्षेत्र में मिल रही चुनौतियों का सामना और अधिक सक्षमता से कर सकेगी तथा तेजी से उभर रही एक सैन्य महाशक्ति के रूप में भारत का दबदबा सारी दुनिया में बढ़ेगा। ▪

हिरोशिमा की पीड़ा

अटल बिहारी वाजपेयी

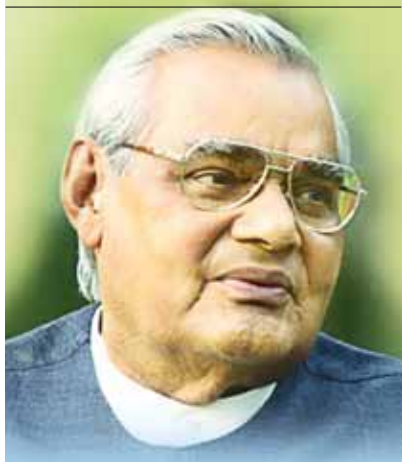

किसी रात को
मेरी नींद अचानक उचट जाती है,
आँख खुल जाती है,
मैं सोचने लगता हूँ कि
जिन वैज्ञानिकों ने अणु अस्त्रों का
आविष्कार किया था:
वे हिरोशिमा-नागासाकी के
भीषण नरसंहार के समाचार सुनकर,
रात को सोये कैसे होंगे?

दाँत में फँसा तिनका,
आँख की किरकिरी,
पाँव में चुभा काँटा,
आँखों की नींद,
मन का चैन उड़ा देते हैं।

सगे-संबंधी की मृत्यु,
किसी प्रिय का न रहना,
परिचित का उठ जाना,
यहाँ तक कि पालतू पशु का भी विछोह
हृदय में इतनी पीड़ा, इतना विषाद भर देता है कि
चेष्टा करने पर भी नींद नहीं आती है।
करवटें बदलते रात गुजर जाती है।

किंतु जिनके आविष्कार से
वह अंतिम अस्त्र बना
जिसने छः अगस्त उन्नीस सौ पैंतालीस की काल-
रात्रि को
हिरोशिमा-नागासाकी में मृत्यु का तांडव कर
दो लाख से अधिक लोगों की बलि ले ली,
हजारों को जीवन भर के लिए अपाहिज कर दिया।

क्या उन्हें एक क्षण के लिए सही,यह
अनुभूति हुई कि उनके हाथों जो कुछ
हुआ,अच्छा नहीं हुआ?
यदि हुई, तो वक्त उन्हें कटघरे में खड़ा नहीं करेगा
किन्तु यदि नहीं हुई तो इतिहास उन्हें
कभी माफ नहीं करेगा।

ऐतिहासिक जीत कार्यकर्ताओं की मेहनत का परिणाम - विष्णुदत्त शर्मा

जनजातीय क्षेत्रों में जनता ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि उसका विश्वास भारतीय जनता पार्टी पर है। भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र और राज्य सरकारों की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने में पार्टी कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

हर बूथ तक सरकार की योजनाएं पहुंची हैं, जिसका सुफल 46 नगरीय निकाय चुनाव में एक तरफा भाजपा की जीत के रूप में हमारे सामने है। छिंदवाड़ा में भारतीय जनता पार्टी ने ऐतिहासिक जीत हासिल की है। सौंसर नगरपालिका में 14 में से 13 सीटें भाजपा ने जीती हैं।

46 नगरीय निकायों के चुनाव में मतदाताओं ने भारतीय जनता पार्टी को 38 नगरीय निकायों में जीत का आशीर्वाद देकर केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं पर एक बार फिर मोहर लगा दी है।

जनजातीय क्षेत्रों में जनता ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि उसका विश्वास भारतीय जनता पार्टी पर है। भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र और राज्य सरकारों की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने में पार्टी कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हर बूथ तक सरकार की योजनाएं पहुंची हैं, जिसका सुफल 46 नगरीय निकाय चुनाव में एक तरफा भाजपा की जीत के रूप में हमारे सामने है। छिंदवाड़ा में भारतीय जनता पार्टी ने ऐतिहासिक जीत हासिल की है। सौंसर नगरपालिका में 14 में से 13 सीटें भाजपा ने जीती हैं। 46 नगरीय निकायों में से कई स्थानों पर कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया है। खुरई और गढ़ाकोटा नगरपालिका परिषद में भारतीय जनता पार्टी के सभी पार्षद प्रत्याशी विजयी हुए है। भाजपा ने आदिवासी बहुल निकायों में ऐतिहासिक जीत हासिल की है। जनजातीय भाई बहनों ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान की नीतियों और नेतृत्व पर विश्वास व्यक्त करते हुए जीत का आशीर्वाद दिया है। इस ऐतिहासिक जीत से स्पष्ट है कि जनजातीय, युवा, महिलाओं सहित हर वर्ग भाजपा से जुड़ रहा है। जीत के साथ ही हमारी जनता के प्रति जवाबदेही और बढ़ी है। पूर्ण निष्ठा के साथ हमें जनता की सेवा में जुटना है। ▪

अनुशासन और संयम से सिद्धि की प्राप्ति

25 सितंबर को देश के प्रखर मानवतावादी, चिन्तक और महान सपूत दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्मदिन मनाया जाता है। किसी भी देश के युवा जैसे-जैसे अपनी पहचान और गौरव पर गर्व करते हैं, उन्हें, अपने मौलिक विचार और दर्शन उतने ही आकर्षित करते हैं।

दीनदयाल जी के विचारों की सबसे बड़ी खूबी यही रही है कि उन्होंने अपने जीवन में विश्व की बड़ी-बड़ी उथल-पुथल को देखा था। वो विचारधाराओं के संघर्षों के साक्षी बने थे। इसीलिए, उन्होंने 'एकात्ममानवदर्शन' और 'अंत्योदय' का एक विचार देश के सामने रखा जो पूरी तरह भारतीय था। दीनदयाल जी का 'एकात्ममानवदर्शन' एक ऐसा विचार है, जो विचारधारा के नाम पर द्वंद और दुराग्रह से मुक्ति दिलाता है।

पिछले दिनों जिस बात ने हम सब का ध्यान आकर्षित किया - वह है चीता। चीतों पर बात करने के लिए ढेर सारे messages आए हैं, वह चाहे उत्तर प्रदेश के अरुण कुमार गुप्ता जी हों या फिर तेलंगाना के एन. रामचंद्रन रघुराम जी, गुजरात के राजन जी हों या फिर दिल्ली के सुब्रत जी। देश के कोने-कोने से लोगों ने भारत में चीतों के लौटने पर खुशियाँ जताई हैं।

130 करोड़ भारतवासी खुश हैं, गर्व से भरे हैं - यह है भारत का प्रकृति प्रेम। इस बारे में लोगों का एक common सवाल यही है कि मोदी जी हमें चीतों को देखने का अवसर कब मिलेगा? एक task force बनी है। यह task force चीतों की monitoring करेगी और ये देखेगी कि यहाँ के माहौल में वो कितने घुल-मिल पाए हैं। इसी आधार पर कुछ महीने बाद कोई निर्णय लिया जाएगा, और तब आप, चीतों को देख पायेंगे। लेकिन तब तक मैं आप सबको कुछ-कुछ काम सौंप रहा हूँ, इसके लिए MyGov के platform पर, एक competition आयोजित किया जाएगा, जिसमें लोगों से मैं कुछ चीजें share करने का आग्रह करता हूँ। चीतों को लेकर जो हम अभियान चला रहे हैं, आखिर, उस अभियान का नाम क्या होना चाहिए! क्या हम इन सभी चीतों के नामकरण के बारे में भी सोच सकते हैं, कि, इनमें से हर एक को, किस, नाम से बुलाया जाए! वैसे ये नामकरण अगर traditional हो तो काफी अच्छा रहेगा, क्योंकि, अपने समाज और संस्कृति, परंपरा और विरासत से जुड़ी हुई कोई भी चीज, हमें, सहज ही, अपनी ओर आकर्षित करती है। यही नहीं, आप ये भी बतायें, आखिर इंसानों को, animals के साथ कैसे behave करना चाहिए! हमारी fundamental duties में भी तो respect for animals पर जोर दिया गया है। मेरी आप सभी से अपील है कि आप इस competition में जरुर भाग लीजिए - क्या पता इनाम स्वरुप चीते देखने का पहला अवसर आपको ही मिल जाए!

25 सितंबर को देश के प्रखर मानवतावादी, चिन्तक और महान सपूत दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्मदिन मनाया जाता है। किसी भी देश के युवा जैसे-जैसे अपनी पहचान और गौरव पर गर्व करते हैं, उन्हें, अपने मौलिक विचार और दर्शन उतने ही आकर्षित करते हैं। दीनदयाल जी के विचारों की सबसे बड़ी खूबी यही रही है कि उन्होंने अपने जीवन में विश्व की बड़ी-बड़ी उथल-पुथल को देखा था। वो विचारधाराओं के संघर्षों के साक्षी बने थे। इसीलिए, उन्होंने 'एकात्ममानवदर्शन' और 'अंत्योदय' का एक विचार देश के सामने रखा जो पूरी तरह भारतीय था। दीनदयाल जी का 'एकात्ममानवदर्शन' एक ऐसा विचार है, जो विचारधारा के नाम पर द्वंद और दुराग्रह से मुक्ति दिलाता है। उन्होंने मानव मात्र को एक समान मानने वाले भारतीय दर्शन को फिर से दुनिया के सामने रखा। हमारे शास्त्रों में कहा गया है - '**आत्मवत् सर्वभूतेषु**', अर्थात, हम जीव मात्र को अपने समान मानें, अपने जैसा व्यवहार करें। आधुनिक, सामाजिक और राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में भी भारतीय दर्शन कैसे दुनिया का मार्गदर्शन कर सकता है, ये, दीनदयाल जी ने हमें सिखाया। एक तरह से, आजादी के

बाद देश में जो हीन भावना थी, उससे आजादी दिलाकर उन्होंने हमारी अपनी बौद्धिक चेतना को जागृत किया। वो कहते भी थे - 'हमारी आजादी तभी सार्थक हो सकती है जब वो हमारी संस्कृति और पहचान की अभिव्यक्ति करे'। इसी विचार के आधार पर उन्होंने देश के विकास का vision निर्मित किया था। दीनदयाल उपाध्याय जी कहते थे कि देश की प्रगति का पैमाना, अंतिम पायदान पर मौजूद व्यक्ति होता है। आजादी के अमृतकाल में हम दीनदयाल जी को जितना जानेंगे, उनसे

हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों से प्रेरणा लें, उनके आदर्शों पर चलते हुए उनके सपनों का भारत बनाएं, यही, उनके प्रति हमारी श्रद्धांजलि होती है। शहीदों के स्मारक, उनके नाम पर स्थानों और संस्थानों के नाम हमें कर्तव्य के लिए प्रेरणा देते हैं। अभी कुछ दिन पहले ही देश ने कर्तव्य पथ पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति की स्थापना के जरिये भी ऐसा ही एक प्रयास किया है और अब शहीद भगत सिंह के नाम से चंडीगढ़ एयरपोर्ट का नाम इस दिशा में एक और कदम है।

जितना सीखेंगे, देश को उतना ही आगे लेकर जाने की हम सबको प्रेरणा मिलेगी।

28 सितम्बर को अमृत महोत्सव का एक विशेष दिन है। इस दिन हम भारत माँ के वीर सपूत भगत सिंह जी की जयंती मनाएंगे। भगत सिंह जी की जयंती के ठीक पहले उन्हें श्रद्धांजलि स्वरुप एक महत्वपूर्ण निर्णय किया है। यह तय किया है कि चंडीगढ़ एयरपोर्ट का नाम अब शहीद भगत सिंह जी के नाम पर रखा जाएगा। इसकी लम्बे समय से प्रतीक्षा की जा रही थी। चंडीगढ़, पंजाब, हरियाणा और देश के सभी लोगों को इस निर्णय की बहुत-बहुत बधाई।

हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों से प्रेरणा लें, उनके आदर्शों पर चलते हुए उनके सपनों का भारत बनाएं, यही, उनके प्रति हमारी श्रद्धांजलि होती है। शहीदों के स्मारक, उनके नाम पर स्थानों और संस्थानों के नाम हमें कर्तव्य के लिए प्रेरणा देते हैं। अभी कुछ दिन पहले ही देश ने कर्तव्य पथ पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति की स्थापना के जरिये भी ऐसा ही एक प्रयास किया है और अब शहीद भगत सिंह के नाम से चंडीगढ़ एयरपोर्ट का नाम इस दिशा में एक और कदम है। अमृत महोत्सव में हम जिस तरह स्वतंत्रता सेनानियों से जुड़े विशेष अवसरों पर celebrate कर रहे हैं उसी तरह 28 सितम्बर को भी हर युवा कुछ नया प्रयास अवश्य करे।

आप सभी के पास 28 सितम्बर को celebrate करने की एक और वजह भी है। जानते हैं क्या है! मैं सिर्फ दो शब्द कहूँगा लेकिन मुझे पता है, आपका जोश चार गुना ज्यादा बढ़ जाएगा। ये दो शब्द हैं- Surgical Strike बढ़

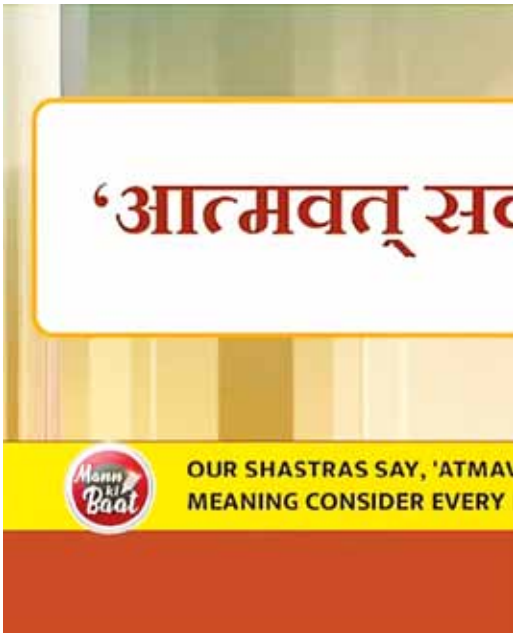

गया ना जोश! हमारे देश में अमृत महोत्सव का जो अभियान चल रहा है उन्हें हम पूरे मनोयोग से celebrate करें, अपनी खुशियों को सबके साथ साझा करें।

कहते हैं - जीवन के संघर्षों से तपे हुए व्यक्ति के सामने कोई भी बाधा टिक नहीं पाती। अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में हम कुछ ऐसे साथियों को भी देखते हैं, जो किसी ना किसी शारीरिक चुनौती से मुकाबला कर रहे हैं। बहुत से ऐसे भी लोग हैं जो या तो सुन नहीं पाते, या, बोलकर

अपनी बात नहीं रख पाते। ऐसे साथियों के लिए सबसे बड़ा सम्बल होती है, Sign Language. लेकिन भारत में बरसों से एक बड़ी दिक्कत ये थी कि Sign Language के लिए कोई स्पष्ट हाव-भाव तय नहीं थे, standards नहीं थे। इन मुश्किलों को दूर करने के लिए ही वर्ष 2015 में Indian Sign Language Research and Training Center की स्थापना हुई थी। ये संस्थान अब तक दस हजार words और Expressions की Dictionary तैयार कर

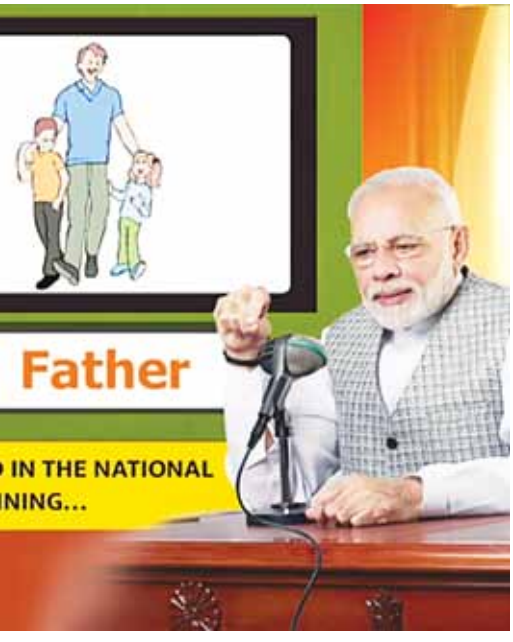

चुका है। 23 सितम्बर को Sign Language Day पर, कई स्कूली पाठ्यक्रमों को भी Sign Language में Launch किया गया है। Sign Language के तय Standard को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी काफी बल दिया गया है। Sign Language की जो Dictionary बनी है, उसके video बनाकर भी उनका निरंतर प्रसार किया जा रहा है। YouTube पर कई लोगों ने, कई संस्थानों ने, Indian Sign Language में अपने चैनल शुरू कर दिए हैं, यानि,7-8 साल पहले Sign Language को लेकर जो अभियान देश में प्रारंभ हुआ था, अब उसका लाभ लाखों मेरे दिव्यांग भाई-बहनों को होने लगा है। हरियाणा की रहने वाली पूजा जी तो Indian Sign Language से बहुत खुश हैं। पहले वो अपने बेटे से ही संवाद नहीं कर पाती थीं, लेकिन, 2018 में Sign Language की training लेने के बाद, माँ-बेटे दोनों का जीवन आसान हो गया है। पूजा जी के बेटे ने भी Sign Language सीखी और अपने स्कूल में उसने story telling में Prize जीतकर भी दिखा दिया। इसी तरह, टिंकाजी की छह साल की एक बिटिया है, जो सुन नहीं पाती है। टिंकाजी ने अपनी बेटी को Sign Language का course कराया था लेकिन उन्हें खुद Sign Language नहीं आती थी, इस वजह से वो अपनी बच्ची से Communicate नहीं कर पाती थी। अब टिंकाजी ने भी sign language की training ली है और दोनों माँ-बेटी अब आपस में खूब बातें किया करती हैं। इन प्रयासों का बहुत बड़ा लाभ केरला की मंजू जी को भी हुआ है। मंजू जी, जन्म से ही सुन नहीं पाती है, इतना ही नहीं उनके parents के जीवन में भी यही स्थिति रही है। ऐसे में sign language ही पूरे परिवार के लिए संवाद का जरिया बनी है। अब तो मंजू जी ने खुद ही Sign Language की teacher बनने का भी फैसला ले लिया है।

मैं इसके बारे में 'मन की बात' में इसलिए भी चर्चा कर रहा हूँ ताकि Indian Sign Language को लेकर Awareness बढ़े। इससे हम, अपने दिव्यांग साथियों की अधिक से अधिक मदद कर सकेंगे। कुछ दिन पहले मुझे ब्रेल में लिखी हेमकोश की एक copy भी मिली है। हेमकोश असमिया भाषा की सबसे पुरानी Dictionaries में से एक है। यह 19वीं शताब्दी में तैयार की गई थी। इसका सम्पादन प्रख्यात भाषाविद् हेमचन्द्र बरुआ जी ने किया था। हेमकोश का ब्रेल Edition करीब 10 हजार पन्नों का है और यह 15 Volumes से भी अधिक में प्रकाशित होने जा रहा है। इसमें 1 लाख से भी अधिक शब्दों का अनुवाद होना है। मैं इस संवेदनशील प्रयास की बहुत सराहना

करता हूँ। इस तरह के हर प्रयास दिव्यांग साथियों का कौशल और सामर्थ्य बढ़ाने में बहुत मदद करते हैं। आज भारत Para Sports में भी सफलता के परचम लहरा रहा है। हम सभी कई Tournaments में इसके साक्षी रहे हैं। आज कई लोग ऐसे हैं, जो दिव्यांगों के बीच Fitness Culture को जमीनी स्तर पर बढ़ावा देने में जुटे हैं। इससे दिव्यांगों के आत्म विश्वास को बहुत बल मिलता है।

मैं कुछ दिन पहले सूरत की एक बिटिया अन्वी

से मिला। अन्वी और अन्वी के योग से मेरी वो मुलाकात इतनी यादगार रही है कि उसके बारे में, मैं 'मन की बात' के सभी श्रोताओं को जरुर बताना चाहता हूँ। अन्वी, जन्म से ही Down Syndrome से पीड़ित हैं और वो बचपन से ही Heart की गंभीर बीमारी से भी जूझती रही है। जब वो केवल तीन महीने की थी, तभी उसे Open Heart Surgery से भी गुजरना पड़ा। इन सब मुश्किलों के बावजूद, न तो अन्वी ने, और न ही उसके माता-पिता ने कभी हार मानी।

Elected Officials, ख़ासकर शहरों के मेयर और गाँवों के सरपंचों से जब मैं संवाद करता हूँ, तो ये आग्रह जरुर करता हूँ कि स्वच्छता जैसे प्रयासों में Local Communities और Local Organisations को शामिल करें, Innovative तरीके अपनाएं।

अन्वी के माता-पिता ने Down Syndrome के बारे में पूरी जानकारी इकट्ठा की और फिर तय किया कि अन्वी के दूसरों पर निर्भरता को कम कैसे करेंगे। उन्होंने अन्वी को पानी का गिलास कैसे उठाना, जूते के फीते कैसे बांधना, कपड़ों के बटन कैसे लगाना, ऐसी छोटी छोटी चीजें सिखाना शुरू किया। कौन सी चीज की जगह कहाँ है, कौन सी अच्छी आदतें होती हैं, ये सब कुछ बहुत धैर्य के साथ उन्होंने अन्वी को सिखाने की कोशिश की। बिटिया अन्वी ने जिस तरह सीखने की इच्छा शक्ति दिखाई, अपनी प्रतिभा दिखाई, उससे, उसके माता-पिता को भी बहुत हौसला मिला। उन्होंने अन्वी को योग सीखने के लिए प्रेरित किया। मुसीबत इतनी गंभीर थी, कि अन्वी अपने दो पैर पर भी खड़ी नहीं हो पाती थी, ऐसी परिस्थिति में उनके माता-पिताजी ने अन्वी को योग सीखने के लिए प्रेरित किया। पहली बार जब वो योग सिखाने वाली Coach के पास गई तो वे भी बड़ी दुविधा में थे कि क्या ये मासूम बच्ची योग कर पायेगी ! लेकिन Coach को भी शायद इसका अंदाजा नहीं था कि अन्वी किस मिट्टी की बनी है। वो अपनी माँ के साथ योग का अभ्यास करने लगी और अब तो वो योग में expert हो चुकी है। अन्वी आज देशभर के Competitions में हिस्सा लेती है और Medal जीतती है। योग ने अन्वी को नया जीवन दे दिया। अन्वी ने योग को आत्मसात कर जीवन को आत्मसात किया। अन्वी के माता-पिता ने मुझे बताया कि योग से अन्वी के जीवन में अद्भुत बदलाव देखने को मिला है, अब उसका Self-Confidence गजब का हो गया है। योग से अन्वी की Physical Health में भी सुधार हुआ है और दवाओं की जरुरत भी कम होती चली जा रही है। मैं चाहूँगा कि देश-विदेश में मौजूद, 'मन की बात' के श्रोता अन्वी को योग से हुए लाभ का वैज्ञानिक अध्ययन कर सकें, मुझे लगता है कि अन्वी एक बढ़िया Case study है, जो योग के सामर्थ्य को जांचना-परखना चाहते हैं, ऐसे वैज्ञानिकों ने आगे

आकर के अन्वी की इस सफलता पर अध्ययन करके, योग के सामर्थ्य से दुनिया को परिचित कराना चाहिए। ऐसी कोई भी Research, दुनिया भर में Down Syndrome से पीड़ित बच्चों की बहुत मदद कर सकती है। दुनिया अब इस बात को स्वीकार कर चुकी है कि Physical और Mental Wellness के लिए योग बहुत ज्यादा कारगर है। विशेषकर Diabetes और Blood pressure से जुड़ी मुश्किलों में योग से बहुत मदद मिलती है। योग की ऐसी ही शक्ति को देखते

हुए 21 जून को संयुक्त राष्ट्र ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाना तय किया हुआ है। अब United Nation - संयुक्त राष्ट्र ने भारत के एक और प्रयास को Recognize किया है, उसे सम्मानित किया है। ये प्रयास है, वर्ष 2017 में शुरू किया गया - "India Hypertension Control Initiative" इसके तहत Blood Pressure की मुश्किलों से जूझ रहे लाखों लोगों का इलाज सरकारी सेवा केन्द्रों में किया जा रहा है। जिस तरह इस initiative ने अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओ का

ध्यान अपनी ओर खींचा है, वो अभूतपूर्व है। ये हम सबके लिए उत्साह बढ़ाने वाली बात है कि जिन लोगों का उपचार हुआ है, उनमें से करीब आधे का Blood Pressure Control में है। मैं इस initiative के लिए काम करने वाले उन सभी लोगों को बहुत- बहुत बधाई देता हूँ, जिन्होंने अपने अथक परिश्रम से इसे सफल बनाया।

मानव जीवन की विकास यात्रा, निरंतर, पानी से जुड़ी हुई है - चाहे वो समुद्र हो, नदी हो या तालाब हो। भारत का भी सौभाग्य है कि करीब साढ़े सात हजार किलोमीटर (7500 किलोमीटर) से अधिक लम्बी Coastline के कारण हमारा समुद्र से नाता अटूट रहा है। यह तटीय सीमा कई राज्यों और द्वीपों से होकर गुजरती है। भारत के अलग-अलग समुदायों और विविधताओं से भरी संस्कृति को यहाँ फलते-फूलते देखा जा सकता है। इतना ही नहीं, इन तटीय इलाकों का खानपान लोगों को खूब आकर्षित करता है। लेकिन इन मजेदार बातों के साथ ही एक दुखद पहलू भी है। हमारे ये तटीय क्षेत्र पर्यावरण से जुड़ी कई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। Climate Change, Marine Eco-Systems के लिए बड़ा खतरा बना हुआ है तो दूसरी ओर हमारे Coastline पर फैली गंदगी परेशान करने वाली है। हमारी यह जिम्मेदारी बनती है कि हम इन चुनौतियों के लिए गंभीर और निरंतर प्रयास करें। यहाँ मैं देश के तटीय क्षेत्रों में Coastal Cleaning की एक कोशिश 'स्वच्छ सागर - सुरक्षित सागर' इसके बारे में बात करना चाहूंगा। 5 जुलाई को शुरू हुआ यह अभियान बीते 17 सितम्बर को विश्वकर्मा जयंती के दिन संपन्न हुआ। इसी दिन Coastal Clean Up Day भी था। आजादी के अमृत महोत्सव में शुरू हुई यह मुहिम 75 दिनों तक चली। इसमें जनभागीदारी देखते ही बन रही थी। इस प्रयास के दौरान पूरे ढाई महीने तक सफाई के अनेक कार्यक्रम देखने को मिले। गोवा में एक लम्बी Human Chain बनाई गई। काकीनाड़ा में गणपति विसर्जन के दौरान लोगों को plastic से होने वाले नुकसान के बारे में बताया गया। NSS के लगभग 5000 युवा साथियों ने तो 30 टन से अधिक plastic एकत्र किया। ओडिशा में तीन दिन के अन्दर 20 हजार से अधिक स्कूली छात्रों ने प्रण लिया कि वे अपने साथ ही परिवार और आसपास के लोगों को भी 'स्वच्छ सागर और सुरक्षित सागर' के लिए प्रेरित करेंगे। मैं उन सभी लोगों को बधाई देना चाहूंगा, जिन्होंने, इस अभियान में हिस्सा लिया।

Elected Officials, खासकर शहरों के मेयर और गाँवों के सरपंचों से जब मैं संवाद करता हूँ, तो ये आग्रह जरुर करता हूँ कि स्वच्छता जैसे प्रयासों में Local Communities और Local Organisations को शामिल करें, Innovative

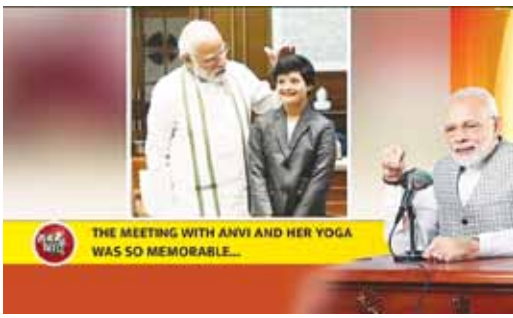

तरीके अपनाएं।

बेंगलुरु में एक टीम है - Youth For Parivarthan (यूथ फॉर परिवर्तन). पिछले आठ सालों से यह टीम स्वच्छता और दूसरी सामुदायिक गतिविधियों को लेकर काम कर रही है। उनका motto बिल्कुल clear है - "Stop Complaining, Start Acting". इस टीम ने अब तक शहर भर की 370 से ज्यादा जगहों का सौंदर्यीकरण किया है। हर स्थान पर Youth For Parivarthan के अभियान ने 100 से

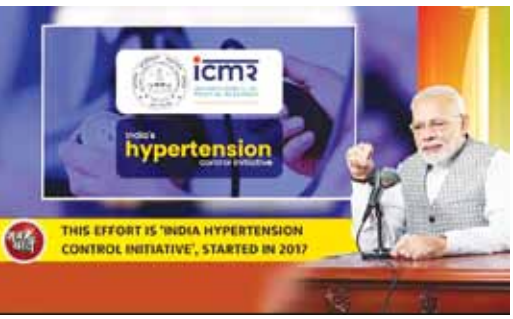

डेढ़ सौ (150) नागरिक को जोड़ा है। प्रत्येक रविवार को यह कार्यक्रम सुबह शुरू होता है और दोपहर तक चलता है। इस कार्य में कचरा तो हटाया ही जाता है, दीवारों पर painting और Artistic Sketches बनाने का काम भी होता है। कई जगहों पर तो आप प्रसिद्ध व्यक्तियों के Sketches और उनके Inspirational Quotes भी देख सकते हैं। बेंगलुरु के Youth For Parivarthan के प्रयासों के बाद, मैं, आपको मेरठ के 'कबाड़ से जुगाड़' अभियान के बारे में भी बताना चाहता हूँ। यह अभियान पर्यावरण की सुरक्षा के साथ-साथ शहर के सौंदर्यीकरण से भी जुड़ा है। इस मुहिम की खास बात यह भी है कि इसमें लोहे का scrap, plastic waste, पुराने टायर और drum जैसी बेकार हो चुकी चीजों का प्रयोग किया जाता है। कम खर्चे में सार्वजनिक स्थलों का सौंदर्यीकरण कैसे हो - यह अभियान इसकी भी एक मिसाल है। इस अभियान से जुड़े सभी लोगों की मैं हृदय से सराहना करता हूँ।

बीते वर्षों से हमारे त्योहारों के साथ देश का एक नया संकल्प भी जुड़ गया है। आप सब जानते हैं, ये संकल्प है -'Vocal for Local' का। अब हम त्योहारों की खुशी में अपने Local कारीगरों को, शिल्पकारों को और व्यापारियों को भी शामिल करते हैं।

2 अक्टूबर को बापू की जयन्ती के मौके पर हमें इस अभियान को और तेज करने का संकल्प लेना है। खादी, handloom, handicraft ये सारे product के साथ-साथ local सामान जरुर खरीदें।

इस समय देश में चारों ओर उत्सव की रौनक है। नवरात्रि के पहले दिन हम देवी के पहले स्वरूप 'माँ शैलपुत्री' की उपासना करेंगे। यहाँ से नौ दिनों का नियम-संयम और उपवास, फिर विजयदशमी का पर्व भी होगा, यानि, एक तरह से देखें तो हम पाएंगे कि हमारे पर्वों में आस्था और आध्यात्मिकता के साथ-साथ कितना गहरा सन्देश भी छिपा है। अनुशासन और संयम से सिद्धि की प्राप्ति, और उसके बाद विजय का पर्व, यही तो जीवन में किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने का मार्ग होता है। दशहरे के बाद धनतेरस और दिवाली का भी पर्व आने वाला है।

बीते वर्षों से हमारे त्योहारों के साथ देश का एक नया संकल्प भी जुड़ गया है। आप सब जानते हैं, ये संकल्प है -'Vocal for Local' का। अब हम त्योहारों की खुशी में अपने Local कारीगरों को, शिल्पकारों को और व्यापारियों को भी शामिल करते हैं। 2 अक्टूबर को बापू की जयन्ती के मौके पर हमें इस अभियान को और तेज करने का संकल्प लेना है। खादी, handloom, handicraft ये सारे product के साथ-साथ local सामान जरुर खरीदें। आखिर इस त्योहार का सही आनंद भी तब है, जब हर कोई इस त्योहार का हिस्सा बने, इसलिए, स्थानीय product के काम से जुड़े लोगों को हमें support भी करना है। एक अच्छा तरीका ये है कि त्योहार के समय हम जो भी gift करें, उसमें इस प्रकार के product को शामिल करें।

इस समय यह अभियान इसलिए भी खास है, क्योंकि आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान हम आत्मनिर्भर भारत का भी लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। जो सही मायने में आजादी के दीवानों को एक सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है इस बार खादी, handloom या handicraft इस product को खरीदने के आप सारे record तोड़ दें। हमने देखा है त्योहारों पर packing और packaging के लिए polythene bags का भी बहुत इस्तेमाल

होता रहा है। स्वच्छता के पर्वों पर polythene का नुकसान कारक कचरा, ये भी हमारे पर्वों की भावना के खिलाफ है। इसलिए, हम स्थानीय स्तर पर बने हुए non-plastic bags का ही इस्तेमाल करें। हमारे यहाँ जूट के, सूत के, केले के, ऐसे कितने ही पारंपरिक bag का चलन एक बार फिर से बढ़ रहा है। ये हमारी जिम्मेदारी है कि हम त्योहारों के अवसर पर इनको बढ़ावा दें, और स्वच्छता के साथ अपने और पर्यावरण के

स्वास्थ्य का भी ख्याल रखें।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है -

'परहित सरिस धरम नहीं भाई'

यानि दूसरों का हित करने के समान, दूसरों की सेवा करने, उपकार करने के समान कोई और धर्म नहीं है। पिछले दिनों देश में, समाज सेवा की इसी भावना की एक और झलक देखने को मिली। आपने भी देखा होगा कि लोग आगे आकर किसी ना किसी टी.बी. से पीड़ित मरीज को गोद ले रहे हैं, उसके पौष्टिक आहार का बीड़ा उठा रहे हैं। दरअसल, ये टीबी मुक्त भारत अभियान का एक हिस्सा है, जिसका आधार जनभागीदारी है, कर्तव्य भावना है। सही पोषण से ही, सही समय पर मिली दवाइयों से, टीबी का इलाज संभव है। मुझे विश्वास है कि जनभागीदारी की इस शक्ति से वर्ष 2025 तक भारत जरुर टीबी से मुक्त हो जाएगा।

केंद्र शासित प्रदेश दादरा-नगर हवेली और दमन-दीव से भी मुझे एक ऐसा उदाहरण जानने को मिला है, जो मन को छू लेता है। यहाँ के आदिवासी क्षेत्र में रहने वाली जिनु रावतीया जी ने लिखा है कि वहां चल रहे ग्राम दत्तक कार्यक्रम के तहत Medical college के students ने 50 गांवों को गोद लिया है। इसमें जिनु जी का गाँव भी शामिल है। Medical के ये छात्र, बीमारी से बचने के लिए गाँव के लोगों को जागरूक करते हैं, बीमारी में मदद भी करते हैं, और सरकारी योजनाओं के बारे में भी जानकारी देते हैं। परोपकार की ये भावना गांवों में रहने वालों के जीवन में नई खुशियाँ लेकर आई है। मैं इसके लिए medical college के सभी विद्यार्थियों का अभिनन्दन करता हूँ।

'मन की बात में नए-नए विषयों की चर्चा होती रहती है। कई बार इस कार्यक्रम के जरिए हमें कुछ पुराने विषयों की गहराई में भी उतरने का मौका मिलता है। पिछले महीने 'मन की बात' में मैंने मोटे अनाज, और वर्ष 2023 को "International Millet Year" के तौर पर मनाने से जुड़ी चर्चा की थी। इस विषय को लेकर लोगों में बहुत उत्सुकता है। मुझे ऐसे ढेरों पत्र मिले हैं, जिसमें लोग बता रहे हैं उन्होंने कैसे millets को अपने दैनिक भोजन का हिस्सा बनाया हुआ है। कुछ लोगों ने millet से बनने वाली पारंपरिक व्यंजनो के बारे में भी बताया है। ये एक बड़े बदलाव के संकेत हैं। लोगों के इस उत्साह को देखकर मुझे लगता है कि हमें मिलकर एक e-book तैयार करनी चाहिए, जिसमें लोग millet से बनने वाले dishes और अपने अनुभवों को साझा कर सकें, इससे, International Millet Year शुरू होने से पहले हमारे पास millets को लेकर एक public encyclopaedia भी तैयार होगा और फिर इसे MyGov portal पर publish कर सकते हैं।

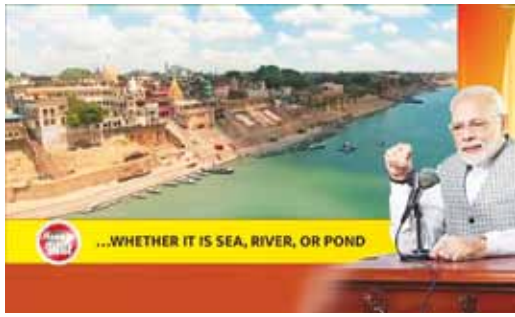

29 सितम्बर से गुजरात में National Games का आयोजन हो रहा है। ये बड़ा ही खास मौका है, क्योंकि National Games का आयोजन, कई साल बाद हो रहा है। कोविड महामारी की वजह से पिछली बार के आयोजनों को रद्द करना पड़ा था। इस खेल प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले हर खिलाड़ी को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं। इस दिन खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाने के लिए मैं उनके बीच में ही रहूँगा। आप सब भी National Games को जरुर follow करें और अपने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाएं। ▪

त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति
राजमाता विजया राजे सिंधिया

राजमाता विजया राजे सिंधिया का जन्म 12 अक्टूबर, 1919 में सागर, मध्य प्रदेश के राणा परिवार में हुआ था। श्रीमती विजया राजे सिंधिया के पिता श्री महेन्द्रसिंह ठाकुर जालौन जिला के डिप्टी कलेक्टर थे और उनकी माता श्रीमती विंदेश्वरी देवी थीं। श्रीमती विजया राजे सिंधिया का विवाह के पूर्व का नाम लेखा दिव्येश्वरी था। राजमाता सिंधिया के पुत्र श्री माधवराव सिंधिया, पुत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया और श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया हैं।

श्रीमती विजया राजे सिंधिया को ग्वालियर की राजमाता के रूप में जाना जाता था। भारत के विशालतम और संपन्नतम राजे-रजवाड़ों में से ग्वालियर एक था। उस रियासत के महाराजा के साथ उनका विवाह हुआ था। 1957 में श्रीमती विजया राजे सिंधिया ने कांग्रेस से चुनाव लड़ा और वे विजयी हुईं। अपने पति के स्वर्गवास के बाद सन् 1962 में कांग्रेस के टिकट पर वे संसद सदस्य बनीं। पांच साल के बाद अपने सैद्धान्तिक मूल्यों के कारण वे कांग्रेस छोड़कर जनसंघ में शामिल हो गईं। एक राज परिवार से रहते हुए भी वे अपनी ईमानदारी, सादगी और प्रतिबद्धता के कारण पार्टी में सर्वप्रिय बन गईं। शीघ्र ही वे पार्टी में शक्ति स्तंभ के रूप में सामने आईं।

राजमाता विजया राजे सिंधिया भारतीय जनता पार्टी के संस्थापकों में से एक थीं। राजमाता ने जनसंघ और भाजपा के कई प्रमुख नेताओं जैसे- श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री लालकृष्ण आडवाणी के साथ काम किया। यही नहीं, मध्य प्रदेश की राजनीति में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है। 1967 में मध्य प्रदेश में सरकार गठन में उन्होंने बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हालांकि, श्रीमती विजया राजे सिंधिया का सार्वजनिक जीवन प्रभावशाली और आकर्षक था, लेकिन उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में मुश्किलों का सामना किया।

सन् 1989 के आम चुनाव में राजमाता विजया राजे सिंधिया ने एक बार फिर गुना से भाजपा प्रत्याशी के रूप में जीत दर्ज कीं। इससे पहले 22 साल पूर्व सन् 1967 में राजमाता यहां से जीती थीं। 1991 के चुनाव

राजमाता विजया राजे सिंधिया भारतीय जनता पार्टी के संस्थापकों में से एक थीं। राजमाता ने जनसंघ और भाजपा के कई प्रमुख नेताओं जैसे- श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री लालकृष्ण आडवाणी के साथ काम किया।

में श्रीमती विजया राजे सिंधिया ने कांग्रेस प्रत्याशी को पराजित किया। राजमाता सिंधिया सिद्धांतों के प्रति समर्पित सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से ओतप्रोत विदुषी जननायक थीं। उन्होंने महलों के वैभव को छोड़कर जनता के न्याय के लिए संघर्ष का मार्ग स्वीकार किया और सड़कों पर उतरकर राजमाता से लोकमाता बन गईं।

उन्होंने समर्पित जीवन जिया। सेवा की उनमें ललक थी। सादगी और सरलता उनका स्वभाव था। राजमाता का मानना था की अपनों की जड़ खोदकर कभी कोई दूसरों का चहेता नहीं बना है।

राजमाता सिंधिया लंबे समय तक महिलाओं से जुड़ी रहीं और उन्हें सदैव प्रेरित करती थीं। वे हमेशा सेवा के लिए समर्पित रहीं। उन्हें पद और सत्ता ने कभी आकर्षित नहीं किया। उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया।

राजमाता त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति थी। राजमाता विजया राजे सिंधिया ने लोगों के दिलों पर बरसों राज किया। सत्ता के शिखर पर रहने के बाद भी उन्होंने जनसेवा से कभी अपना मुख नहीं मोड़ा। राजमाता का सपना था कि जब देश में कमल खिलेगा तभी अंतिम सांस लेंगी। यह स्वप्न पूरा भी हुआ और श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में केंद्र में सरकार बनी। सन् 1998 से राजमाता का स्वास्थ्य खराब रहने लगा और 25 जनवरी, 2001 में राजमाता विजया राजे सिंधिया का स्वर्गवास हो गया। ▪

बारडोली सत्याग्रह की सफलता पर महिलाओं ने सरदार की उपाधि प्रदान की

सरदार वल्लभ भाई भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। भारत की आजादी के बाद वे प्रथम गृह मंत्री और उप-प्रधानमंत्री बने। बारडोली सत्याग्रह का नेतृत्व कर रहे पटेल को सत्याग्रह की सफलता पर वहाँ की महिलाओं ने सरदार की उपाधि प्रदान की। आजादी के बाद विभिन्न रियासतों में बिखरे भारत के भू-राजनीतिक एकीकरण में केंद्रीय भूमिका निभाने के लिए पटेल को भारत का बिस्मार्क और लौह पुरूष भी कहा जाता है।

पटेल का जन्म नडियाद, गुजरात में एक लेउवा/लेवा गुर्जर कृषक परिवार में हुआ था। वे झवेरभाई पटेल एवं लाडबा देवी की चौथी संतान थे। उनकी शिक्षा मुख्यतः स्वाध्याय से ही हुई। लन्दन जाकर उन्होंने बैरिस्टर की पढ़ाई की और वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे। महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होने भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया।

खेड़ा संघर्ष

स्वतन्त्रता आन्दोलन में सरदार पटेल का सबसे पहला और बड़ा योगदान खेडा संघर्ष में हुआ। गुजरात का खेडा खण्ड (डिविजन) उन दिनो भयंकर सूखे की चपेट में था। किसानों ने अंग्रेज सरकार से भारी कर में छूट की मांग की। जब यह स्वीकार नहीं किया गया तो सरदार पटेल, गांधीजी एवं अन्य लोगों ने किसानों का नेतृत्व किया और उन्हे कर न देने के लिये प्रेरित किया। अन्त में सरकार झुकी और उस वर्ष करों में राहत दी गयी। यह सरदार पटेल की पहली सफलता थी।

यद्यपि अधिकांश प्रान्तीय कांग्रेस समितियाँ पटेल के पक्ष में थीं, गांधी जी की इच्छा का आदर करते हुए पटेल जी ने प्रधानमंत्री पद की दौड़ से अपने को दूर रखा और इसके लिये नेहरू का समर्थन किया। उन्हे उपप्रधानमंत्री एवं गृह मंत्री का कार्य सौंपा गया। किन्तु इसके बाद भी नेहरू और पटेल के सम्बन्ध तनावपूर्ण ही रहे।

सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व (संक्रमण काल में) ही पीवी मेनन के साथ मिलकर कई देसी राज्यों को भारत में मिलाने के लिये कार्य आरम्भ कर दिया था। पटेल और मेनन ने देसी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हे स्वायत्तता देना सम्भव नहीं होगा। इसके परिणाम स्वरूप तीन को छोड़कर शेष सभी राजवाड़ो ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। केवल जम्मू एवं कश्मीर, जूनागढ़ तथा हैदराबाद के राजाओं ने ऐसा करना नहीं स्वीकारा। जूनागढ़ के नवाब के विरुद्ध जब बहुत विरोध हुआ तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और जूनागढ़ भी भारत में मिल गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहाँ सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया। किन्तु नेहरू ने कश्मीर को यह कहकर अपने पास रख लिया कि यह समस्या एक अंर्तराष्ट्रीय समस्या है।

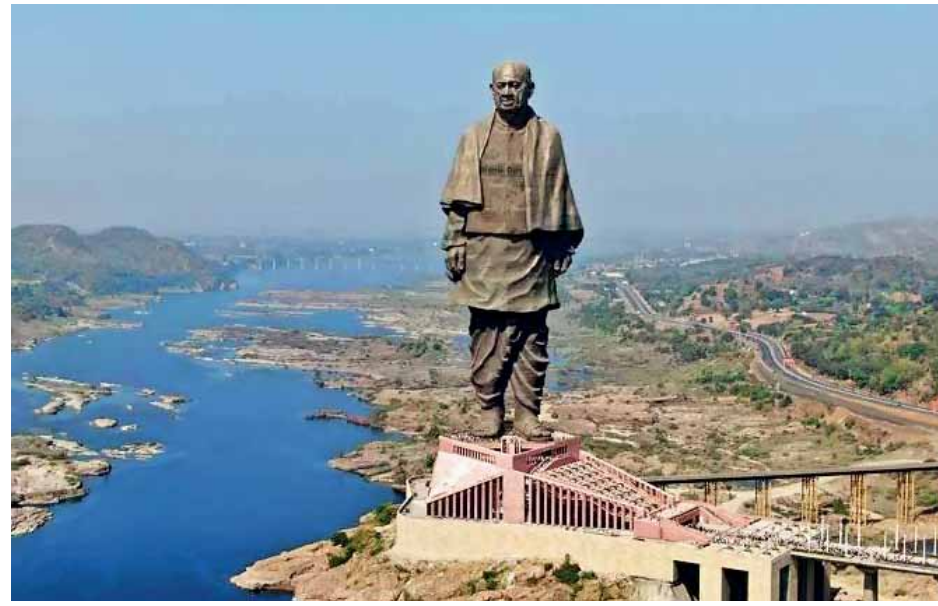

सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व (संक्रमण काल में) ही पीवी मेनन के साथ मिलकर कई देसी राज्यों को भारत में मिलाने के लिये कार्य आरम्भ कर दिया था।

पटेल और मेनन ने देसी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हे स्वायत्तता देना सम्भव नहीं होगा। इसके परिणाम स्वरूप तीन को छोड़कर शेष सभी राजवाड़ो ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू व प्रथम उपप्रधानमंत्री सरदार पटेल में आकाश-पाताल का अंतर था। यद्यपि दोनों ने इंग्लैण्ड जाकर बैरिस्टरी की डिग्री प्राप्त की थी परंतु सरदार पटेल वकालत में पं. नेहरू से बहुत आगे थे तथा उन्होंने सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य के विद्यार्थियों में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। नेहरू प्रायः सोचते रहते थे, सरदार पटेल उसे कर डालते थे। नेहरू शास्त्रों के ज्ञाता थे, पटेल शस्त्रों के भी पुजारी थे। पटेल ने भी ऊंची शिक्षा पाई थी परंतु उनमें किंचित भी अहंकार नहीं था। वे स्वयं कहा करते थे, 'मैंने कला या विज्ञान के विशाल गगन में ऊंची उड़ानें नहीं भरीं। मेरा

विकास कच्ची झोपड़ियों में गरीब किसान के खेतों की भूमि और शहरों के गंदे मकानों में हुआ है। 'पं. नेहरू को गांव की गंदगी, तथा जीवन से चिढ़ थी।' पं. नेहरू अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के इच्छुक थे तथा समाजवादी प्रधानमंत्री बनना चाहते थे।

सरदार पटेल की महानतम देन थी 562 छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलीनीकरण करके भारतीय एकता का निर्माण करना। विश्व के इतिहास में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जिसने इतनी बड़ी संख्या में राज्यों का एकीकरण करने का साहस किया हो। 13 नवम्बर को सरदार पटेल ने सोमनाथ के भग्न मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया, जो पंडित नेहरू के तीव्र विरोध के पश्चात भी बना। 1948 में हैदराबाद भी केवल 4 दिन की पुलिस कार्रवाई द्वारा मिला लिया गया। न कोई बम चला, न कोई क्रांति हुई, जैसा कि डराया जा रहा था।

जहां तक कश्मीर रियासत का प्रश्न है इसे पंडित नेहरू ने स्वयं अपने अधिकार में लिया हुआ था, परंतु यह सत्य है कि सरदार पटेल कश्मीर में जनमत संग्रह तथा कश्मीर के मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने पर बेहद क्षुब्ध थे। निःसंदेह सरदार पटेल द्वारा यह 562 रियासतों का एकीकरण विश्व इतिहास का एक आश्चर्य था। भारत की यह रक्तहीन क्रांति थी। महात्मा गांधी ने सरदार पटेल को इन रियासतों के बारे में लिखा था, 'रियासतों की समस्या इतनी जटिल थी जिसे केवल तुम ही हल कर सकते थे।'

यद्यपि विदेश विभाग पं. नेहरू का कार्यक्षेत्र था, परंतु कई बार उप प्रधानमंत्री होने के नाते कैबिनेट की विदेश विभाग समिति में उनका जाना होता था। उनकी दूरदर्शिता का लाभ यदि उस समय लिया जाता तो अनेक वर्तमान समस्याओं का जन्म नहीं होता। 1950 में पंडित नेहरू को लिखे एक पत्र में पटेल ने चीन तथा उसकी तिब्बत के प्रति नीति से सावधान किया था और चीन का रवैया कपटपूर्ण तथा विश्वासघाती बतलाया था।

अपने पत्र में चीन को अपना दुश्मन, उसके व्यवहार को अभद्रतापूर्ण और चीन के पत्रों की भाषा को किसी दोस्त की नहीं, भावी शत्रु की भाषा कहा था। उन्होंने यह भी लिखा था कि तिब्बत पर चीन का कब्जा नई समस्याओं को जन्म देगा। 1950 में नेपाल के संदर्भ में लिखे पत्रों से भी पं. नेहरू सहमत न थे। 1950 में ही गोवा की स्वतंत्रता के संबंध में चली दो घंटे की कैबिनेट बैठक में लम्बी वार्ता सुनने के पश्चात सरदार पटेल ने केवल इतना कहा 'क्या हम गोवा जाएंगे, केवल दो घंटे की बात है। 'नेहरू इससे बड़े नाराज हुए थे। यदि पटेल की बात मानी गई होती तो 1961 तक गोवा की स्वतंत्रता की प्रतीक्षा न करनी पड़ती। ▪

आज भी देशभक्ति के लिए प्रेरित करता है जय जवान-जय किसान का नारा

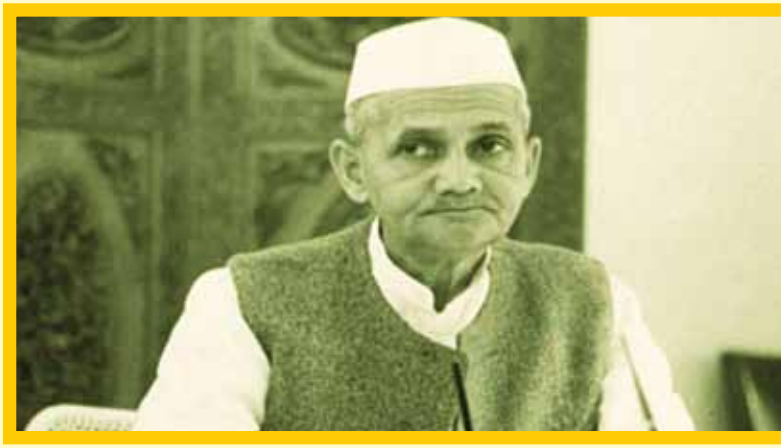

सादगी, अटूट देशभक्ति और ईमानदारी। यह परिचय है देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का। 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में मुंशी लाल बहादुर श्रीवास्तव का जन्म हुआ। मुंशी लाल बहादुर श्रीवास्तव अपने घर में सबसे छोटे थे लिहाजा घर वालों ने उन्हें नाम दिया 'नन्हे'। पिता की मौत के बाद नन्हे अपनी मां के साथ मिर्जापुर चले गए। मिर्जापुर में नन्हे अपने नाना के साथ रहने लगे। मिर्जापुर में ही नन्हे ने प्राथमिक शिक्षा हासिल की। जब लाल बहादुर श्रीवास्तव काशी विद्यापीठ से पढ़कर निकले तो उन्हें शास्त्री की उपाधि दी गई। बस इसी के बाद से ही लाल बहादुर श्रीवास्तव ने अपने नाम के अंत से जाति सूचक शब्द हटा लिया और वो बन गए लाल बहादुर शास्त्री।

साल 1920 में शास्त्री जी आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। शास्त्री जी गांधीवादी नेता थे उन्होंने सम्पूर्ण जीवन देश और गरीबों की सेवा में लगा दिया। जब लाल बहादुर शास्त्री ने महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया था तब वो थोड़े समय के लिए जेल चले गए थे। लेकिन जेल से निकलते ही उन्होंने तत्कालीन काशी विद्यापीठ से संस्कृत भाषा में स्नातक स्तर की परीक्षा पास की और शास्त्री की उपाधि से नवाजे गए। मरो नहीं मारो, जय जवान-जय किसान, जैसे नारे देने वाले शास्त्री जी ने भारत सेवक संघ में शामिल होकर अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की। असहयोग आंदोलन, दांडी मार्च, भारत छोड़ो आंदोलन समेत कई आंदोलनों में लाल बहादुर शास्त्री ने सक्रिय भूमिका अदा की।

भारत के आजाद होने के बाद सन् 1961 में लाल बहादुर शास्त्री गृह मंत्री के प्रभावशाली पद पर आसीन हुए। पंडित जवाहर लाल नेहरू के निधन के बाद सन् 1964 में शास्त्री जी देश के प्रधानमंत्री बने। जम्मू-कश्मीर के विवादित प्रांत पर पड़ोसी पाकिस्तान के साथ 1965 में हुए युद्ध में उनके द्वारा दिखाई गई दृढ़ता के लिए उनकी बहुत प्रशंसा हुई। ताशकंद में पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के साथ युद्ध न करने की ताशकंद घोषणा के समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें मरणोपरान्त वर्ष 1966 में भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया। शास्त्रीजी की मृत्यु जिस संदिग्ध अवस्था में हुई उसकी सच्चाई का अभी तक पता नहीं चला है, ताशकंद की धरती पर जिस भारत पाक संधि पर हस्ताक्षर किया गया, उस दबाव में तो उनकी मृत्यु नहीं हुई, वह सवाल आज भी सवाल बना हुआ है। ▪

आत्म शुद्धि के बिना अहिंसा का पालन असंभव : गांधीजी

इससे आगे का मेरा जीवन इतना अधिक सार्वजनिक हो गया है कि शायद ही कोई चीज ऐसी हो, जिसे जनता जानती न हो। फिर सन् 1921 से मैं कांग्रेस के नेताओं के साथ इतना अधिक ओत-प्रोत होकर रहा हूं कि किसी प्रसंग का वर्णन नेताओं के संबंध की चर्चा किए बिना मैं यथार्थ रूप में कर ही नहीं सकता। ये संबंध अभी ताजे हैं। श्रद्धानंदजी, देशबंधु, लालाजी और हकीम साहब आज हमारे बीच नहीं हैं, पर सौभाग्य से दूसरे कई नेता अभी मौजूद हैं। कांग्रेस के महान परिवर्तन के बाद का इतिहास अभी तैयार हो रहा है। मेरे मुख्य प्रयोग कांग्रेस के माध्यम से हुए हैं। अतएव, उन प्रयोगों के वर्णन में नेताओं के संबंधों की चर्चा अनिवार्य है। शिष्टता के विचार से भी फिलहाल तो मैं ऐसा कर ही नहीं सकता। अंतिम बात यह है कि इस समय चल रहे प्रयोगों के बारे में मेरे निर्णय निश्चयात्मक नहीं माने जा सकते। अतएव, इन प्रकरणों को तत्काल तो बंद कर देना ही मुझे अपना कर्तव्य मालूम होता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि इसके आगे मेरी कलम ही चलने से इनकार करती है।

पाठकों से विदा लेते हुए मुझे दुःख होता है। मेरे निकट अपने इन प्रयोगों की बड़ी कीमत है। मैं नहीं जानता कि मैं उनका यथार्थ वर्णन कर सका हूं या नहीं। यथार्थ वर्णन करने में मैंने कोई कसर नहीं रखी है। सत्य को मैंने जिस रूप में देखा है, जिस मार्ग से देखा है, उसे उसी तरह प्रकट करने का मैंने सतत् प्रयत्न किया है और पाठकों के लिए उसका वर्णन करके चित्त में शांति का अनुभव किया है, क्योंकि मैंने आशा यह रखी है कि इससे पाठकों में सत्य और अहिंसा के प्रति अधिक आस्था उत्पन्न होगी।

सत्य से भिन्न कोई परमेश्वर है, ऐसा मैंने कभी अनुभव नहीं किया। यदि इन प्रकरणों के पन्ने-पन्ने से यह प्रतीति न हुई हो कि सत्यमय बनने का एकमात्र मार्ग अहिंसा ही है तो प्रयत्न को व्यर्थ समझता हूं। प्रयत्न चाहे व्यर्थ हो, किंतु वचन व्यर्थ नहीं है। मेरी अहिंसा सच्ची होने पर भी कच्ची है, अपूर्ण है। अतएव, हजारों सूर्यों को इकट्ठा करने से भी जिस सत्य रूपी सूर्य के तेज का पूरा माप नहीं निकल सकता, सत्य की मेरी झाँकी ऐसे सूर्य की केवल एक किरण के दर्शन के समान ही है। आज तक के अपने प्रयोगों के अंत में मैं इतना तो अवश्य कह सकता

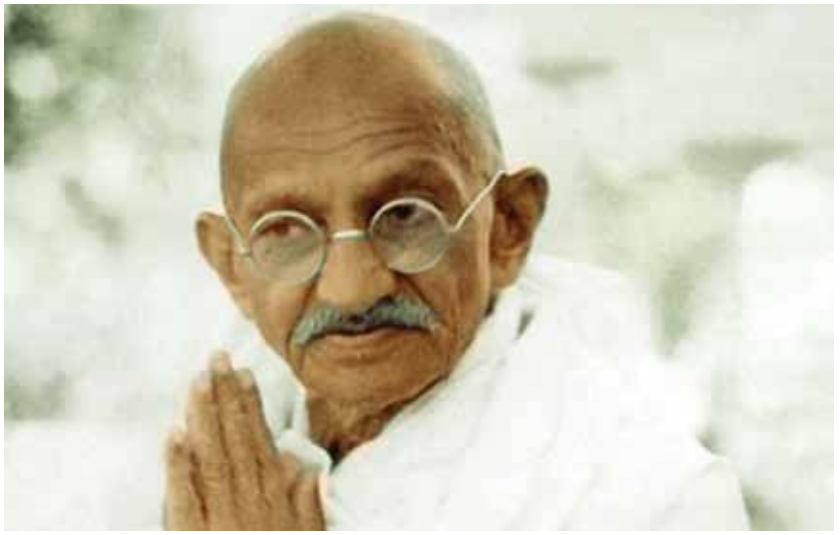

हूं कि सत्य का संपूर्ण दर्शन संपूर्ण अहिंसा के बिना असंभव है। ऐसे व्यापक सत्य-नारायण के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए जीवमात्र के प्रति आत्मवत् प्रेम की परम आवश्यकता है और जो मनुष्य ऐसा करना चाहता है, वह जीवन के किसी भी क्षेत्र से बाहर नहीं रह सकता। यही कारण है कि सत्य की मेरी पूजा मुझे राजनीति में खींच लाई है। जो मनुष्य यह कहता है कि धर्म का राजनीति के साथ कोई संबंध नहीं है, वह धर्म को नहीं जानता, ऐसा कहने में मुझे संकोच नहीं होता।

बिना आत्मशुद्धि के जीवमात्र के साथ ऐक्य सध ही नहीं सकता। आत्मशुद्धि के बिना अहिंसा-धर्म का पालन सर्वथा असंभव है। अशुद्ध आत्मा परमात्मा के दर्शन करने में असमर्थ है। अतएव, जीवन-मार्ग के सभी क्षेत्रों में शुद्धि की आवश्यकता है। यह शुद्धि साध्य है, क्योंकि व्यष्टि और समष्टि के बीच ऐसा निकट का संबंध है कि एक की शुद्धि अनेकों की शुद्धि के बराबर हो जाती है और व्यक्तिगत प्रयत्न करने की शक्ति तो सत्य-नारायण ने सबको जन्म से ही दी है। लेकिन मैं प्रतिक्षण यह अनुभव करता हूं कि शुद्धि का यह मार्ग विकट है। शुद्ध बनने का अर्थ है- मन से, वचन से और काया से निर्विकार बनना, राग-द्वेषादि से रहित होना। इस निर्विकारता तक पहुँचने का प्रतिक्षण प्रयत्न करते हुए भी मैं वहां पहुंच नहीं पाया हूं, इसलिए लोगों की स्तुति मुझे भुलावे में नहीं डाल सकती।

जो मनुष्य यह कहता है कि धर्म का राजनीति के साथ कोई संबंध नहीं है, वह धर्म को नहीं जानता, ऐसा कहने में मुझे संकोच नहीं होता।

उलटे यह स्तुति प्रायः तीव्र वेदना पहुंचाती है।

मन के विकारों को जीतना, संसार को शस्त्र-युद्ध से जीतने की अपेक्षा मुझे अधिक कठिन मालूम होता है। हिंदुस्तान आने के बाद भी मैं अपने भीतर छिपे हुए विकारों को देख सका हूं शर्मिंदा हुआ हूं, किंतु हारा नहीं हूं। सत्य के प्रयोग करते हुए मैंने आनंद लूटा है और आज भी लूट रहा हूं। लेकिन मैं जानता हूं कि अभी मुझे विकट मार्ग तय करना है। इसके लिए मुझे शून्यवत बनना है। मनुष्य जब तक स्वेच्छा से अपने को सबसे नीचे नहीं रखता, तब तक उसे मुक्ति नहीं मिलती।

अहिंसा नम्रता की पराकाष्ठा है और यह अनुभव सिद्ध बात है कि इस नम्रता के बिना मुक्ति कभी नहीं मिलती। ऐसी नम्रता के लिए प्रार्थना करते हुए और उसके लिए संसार की सहायता की याचना करते हुए इस समय तो मैं इन प्रकरणों को बंद करता हूं। ▪

डॉ. अब्दुल कलाम भारत को महाशक्ति बनाने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे

अब्दुल कलाम राष्ट्रवादी विचार के रहे और हिन्दू संस्कृति के प्रति उनकी आस्था थी। वे भारत को महाशक्ति के रूप में देखना चाहते थे।

अबुल पकिर जैनुलाअबदीन अब्दुल कलाम अथवा ए.पी.जे.अब्दुल कलाम जिन्हें मिसाइल मैन और जनता के राष्ट्रपति के नाम से जाना जाता है, भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति थे। वे भारत के पूर्व राष्ट्रपति, जानेमाने वैज्ञानिक और अभियंता (इंजीनियर) के रूप में विख्यात थे। उनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम (तमिलनाडु) में हुआ।

इन्होंने मुख्य रूप से एक वैज्ञानिक और विज्ञान के व्यवस्थापक के रूप में चार दशकों तक रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) संभाला व भारत के नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रम और सैन्य मिसाइल के विकास के प्रयासों में भी शामिल रहे। इन्हें बैलेस्टिक मिसाइल और प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी के विकास के कार्यों के लिए भारत में मिसाइल मैन के रूप में जाना जाने लगा। इन्होंने 1974 में भारत द्वारा पहले परमाणु परीक्षण के बाद दूसरी बार 1998 में भारत के पोखरण-द्वितीय परमाणु परीक्षण में एक निर्णायक, संगठनात्मक, तकनीकी और राजनैतिक भूमिका निभाई।

कलाम सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी व विपक्षी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दोनों के समर्थन के साथ 2002 में भारत के राष्ट्रपति चुने गए। पांच वर्ष की अवधि की सेवा के बाद, वह शिक्षा, लेखन और सार्वजनिक सेवा के अपने नागरिक जीवन में लौट आए। इन्होंने भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किये।

15 अक्टूबर 1931 को धनुषकोडी गाँव (रामेश्वरम, तमिलनाडु) में एक मध्यम वर्ग मुस्लिम परिवार में इनका जन्म हुआ। इनके पिता जैनुलाब्दीन न तो ज्यादा पढ़े-लिखे थे, न ही पैसे वाले थे। इनके पिता मछुआरों को नाव किराये पर दिया करते थे। अब्दुल कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। परिवार की सदस्य संख्या का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि यह स्वयं पाँच भाई एवं पाँच बहन थे और घर में तीन परिवार रहा करते थे। अब्दुल कलाम के जीवन पर इनके पिता का बहुत प्रभाव रहा। वे भले ही पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन उनकी लगन और उनके दिए संस्कार अब्दुल कलाम के बहुत काम आए। पाँच वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम के पंचायत प्राथमिक विद्यालय में उनका दीक्षा-संस्कार हुआ था। उनके शिक्षक इयादुराई सोलोमन ने उनसे कहा था कि जीवन मे सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा, आस्था, अपेक्षा इन तीन शक्तियों को भली-भाँति समझ लेना और उन पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहिए।

अब्दुल कलाम ने अपनी आरंभिक शिक्षा जारी रखने के लिए अखबार वितरित करने का कार्य भी किया था। कलाम ने 1950 में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलजी से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। स्नातक होने के बाद उन्होंने हावर क्राफ्ट परियोजना पर काम करने के लिये भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान में प्रवेश किया। 1962 में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में आये जहाँ उन्होंने सफलतापूर्वक कई उपग्रह प्रक्षेपण परियोजनाओं में अपनी भूमिका निभाई। परियोजना निदेशक के रूप में भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान एसएलवी 3 के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे जुलाई 1982 में रोहिणी उपग्रह सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया था।

राष्ट्रपति पद हेतु इन्हें भारतीय जनता पार्टी समर्थित एनडीए घटक दलों ने अपना उम्मीदवार बनाया था जिसका वामदलों के अलावा समस्त दलों ने समर्थन किया। 18 जुलाई 2002 को कलाम को नब्बे प्रतिशत बहुमत द्वारा भारत का राष्ट्रपति चुना गया था और इन्हें 25 जुलाई 2002 को संसद भवन के अशोक कक्ष में राष्ट्रपति पद की शपथ दिलाई गई। इस संक्षिप्त समारोह में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, उनके मंत्रिमंडल के सदस्य तथा अधिकारीगण उपस्थित थे। इनका कार्यकाल 25 जुलाई 2007 को समाप्त हुआ।

अब्दुल कलाम व्यक्तिगत जिन्दगी में बेहद अनुशासनप्रिय थे। वे शाकाहारी थे। इन्होंने अपनी जीवनी विंग्स ऑफ फायर भारतीय युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करने वाले अंदाज में लिखी है। इनकी दूसरी पुस्तक गाइडिंग सोल्स- डायलॉग्स ऑफ द पर्पज ऑफ लाइफ आत्मिक विचारों को उद्घाटित करती है इन्होंने तमिल भाषा में कविताऐं भी लिखी हैं।

यह भी ज्ञात हुआ है कि दक्षिणी कोरिया में इनकी पुस्तकों की काफी माँग है और वहाँ इन्हें बहुत अधिक पसंद किया जाता है। अब्दुल कलाम राष्ट्रवादी विचार के रहे और हिन्दू संस्कृति के प्रति उनकी आस्था थी। वे भारत को महाशक्ति के रूप में देखना चाहते थे। उनका निधन 27 जुलाई 2015 को हुआ। ▪

समाज और विचारधारा

पं. दीनदयाल उपाध्याय

जो तथाकथित समाजवादी विचारधाराएं हैं, उनमें सबसे बड़ी खराबी है कि व्यक्ति के स्वरूप का और समाज के स्वरूप का जो सही ज्ञान होना चाहिए, वह उनके पास नहीं।

इनमें भी लोग सब ताकत अपने हाथ में लेकर बाकी के समाज को सुख-सुविधाओं से वंचित रखते हैं।

यह तो स्पष्ट है कि समाजवाद के नाम से जो विषय चल रहा है तथा बहुत ही व्यापक और एक प्रकार से प्रभावी रूप से जिन कम्युनिस्ट देशों में इसका प्रसार होता दिख रहा है, उसमें व्यक्ति का और समाज का भी जैसा भला होना चाहिए, वैसा न होकर दूसरी ओर बुरा हाल है। यह बात अलग है कि देशों ने भौतिक दृष्टि से प्रगति कर ली होगी, लेकिन भौतिक प्रगति को समाजवादी पद्धति से जोड़ नहीं सकते। दुनिया के और भी देश हैं, जैसे अमरीका, उसने भी प्रगति की है। कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें अमरीका ने रूस से अधिक प्रगति की है। कुछ क्षेत्रों में रूस भी आगे निकल गया है। परंतु इन चीजों से विचारधारा के बारे में कोई निष्कर्ष निकालें तो वह गलत होगा। ये निष्कर्ष प्रचार की दृष्टि से निकाले जाते हैं।

पिछले दिनों एकाएक समाचार आया कि चीनी लोग एवरेस्ट पर चढ़ गए। कैसे चढ़ गए, इसका पता नहीं। वह पहले चढ़ रहे थे, इसकी भी खबर नहीं। फिर समाचार आया कि रात के एक बजे चढ़े। यह भी बताया गया कि उनकी यह विजय कम्युनिस्ट विचारधारा की विजय है। पर जानकार लोगों ने बताया कि इन समाचारों से ही पता लगता है कि ये गलत हैं। संभव भी हो तो विचारधारा के साथ तो इसको नहीं जोड़ा जा सकता। लेकिन लोग जोड़ते हैं। अभी अंतरिक्ष में यात्री को भेजा गया, फिर एक महिला को भेजा गया। उसके बारे में भी इसी प्रकार का विचार करते हैं। हमें वास्तविकता का गंभीरता से विचार करना चाहिए। इसके पीछे तर्क या वैज्ञानिक ढंग के साधन नहीं। ये आधुनिक ढंग की रूढ़ियां हैं। जैसे छींक आ गई और लाभ नहीं हुआ तो धारणा हो जाती है कि छींक आ जाने से ही काम बिगड़ा है। यद्यपि इसमें कोई कारण-कार्य संबंध जोड़ा नहीं जा सकता। अनेक बार ऐसे भी हुआ होगा, जब छींक आने पर भी काम हुआ होगा, परंतु उसको कौन ध्यान में रखता है। एक जगह समुद्र में एक मंदिर था। उसके पुजारी ने मंदिर में उन सज्जनों की सूची बनाकर टांगी हुई थी, जिनका समुद्र यात्रा से मंदिर दर्शनार्थ आने पर कुछ न बिगड़ा हो अर्थात् जो डूबे नहीं तथा सकुशल लौट आए थे। इसका मन पर प्रभाव पड़ता है। एक बार एक दार्शनिक ने पुजारी से पूछा, ''जो समुद्र यात्रा पर गए और डूब गए, उनका नाम नहीं लिखा। क्यों?'' वे नाम तो उसके पास नहीं थे। इस प्रकार कुछ को छिपा लिया जाता है और कुछ को प्रकट किया जाता है और फिर गलत तरीके से उनमें कारण-कर्म भाव ढूंढ़ लिया जाता है। वैसे ही आज भी बहुत सी चीजें होती हैं।

हिटलर पिछली बार रूस के खिलाफ लड़ा और रूस जीत गया। इससे पहले वह जापान से हार गया था। तो एकमेव कारण कि रूस में साम्यवाद के कारण यह विजय हुई, ऐसा बताया जाने लगा। परंतु यदि यही तर्क लगाया जाए तो इंग्लैंड और अमरीका में तो साम्यवाद नहीं था। वे कैसे जीत गए और अमरीका वाले कह सकते हैं कि पिछली लड़ाई में अमरीका के आने के बाद जो हिटलर लड़ा तो वह हारा। तो यह सब हुआ अमरीका के पूंजीवाद के कारण। वह यह कह सकता है, पर इसमें भी कोई बल नहीं।

इन चीजों को हटाकर देखें तो पता लगेगा कि जो तथाकथित समाजवादी विचारधाराएं हैं, उनमें सबसे बड़ी खराबी है कि व्यक्ति के स्वरूप का और समाज के स्वरूप का जो सही ज्ञान होना चाहिए, वह उनके पास नहीं। इनमें भी लोग सब ताकत अपने हाथ में लेकर बाकी के समाज को सुख-सुविधाओं से वंचित रखते हैं।

यह विचारधारा वहीं आकर खड़ी हो गई, जहां से इसने प्रारंभ किया था। व्यक्ति जितना गुलाम पूंजीवादी यूरोप में था, संभवतः उससे अधिक

गुलाम समाजवादी व्यवस्था में आज है। जितनी विषमताएं पूंजीवादी यूरोप में थीं, उससे अधिक विषमताएं समाजवादी यूरोप में हैं। विषमताओं का मापदंड बदल लिया गया है, लेकिन उससे अधिक विषमताएं लाई गई हैं। विषमताओं का रूप बदल गया है। जैसे किसी को रुपया मासिक मिले और किसी को दस हजार रुपए तो यह कितनी बड़ी विषमता है। यह विषमता कम होनी चाहिए। लेकिन यदि कोई दस हजार रुपए को यह रूप दे कि वेतन मिलेगा दो हजार शेष की बाकी चीजें मुफ्त, जैसे मकान, यातायात व्यय आदि। ये सब सरकार उसे मुफ्त देगी। नतीजा यही होगा कि विषमता शायद और बढ़ जाएगी। जब अंग्रेज यहां थे तो उनके वायसराय के एक्जीक्यूटिव के जो मेंबर थे, उनको साढ़े तीन या चार हजार तनख्वाह मिलती थी। इनकम टैक्स देने के बाद बाईस सौ-तेईस सौ रुपया बचता था। नई सरकार ने तनख्वाह को कम कर दिया। तनख्वाह दो हजार सात सौ पचास रुपए कर दी, लेकिन इनकम टैक्स माफ कर दिया। यदि आप देखेंगे कि खुश्चेव पर कितना खर्च होता है तो अनुमान लगेगा कि उसकी तनख्वाह तो बढ़ी नहीं है। रूस में आज भी आय का अनुपात कुछ के कहने के अनुसार एक और दौ सौ है। एक और अस्सी तो स्वीकार किया ही जाएगा।

वे शोषण समाप्त करने की बात कहते हैं। लेकिन आर्थिक क्षेत्र में शोषण समाप्त हुआ मान लिया जाए तो भी राजनीतिक दृष्टि से शोषण प्रारंभ कर दिया है कि मार्क्स ने जो अपने सारे निष्कर्ष निकाले थे तो उसमें 'सरप्लस वैल्यू' का सिद्धांत रखा था। उस अर्थव्यवस्था का आधार था जहां मंडी में मूल्य मांग और पूर्ति के संतुलन में तय होता है। फिर वास्तविक मूल्य क्या है, विनियम मूल्य क्या है। वह कितनी मात्रा में सही है। इन सबके पचड़े में मैं नहीं पड़ता। लेकिन कम्युनिस्ट देशों में 'मार्केट इकोनॉमी' नाम की चीज है ही नहीं। यह 'सरप्लस वैल्यू' मजदूर के पास जाती है, यह सच नहीं। यह आज राज्य के पास पहुंच जाती है और फिर कुछ व्यक्तियों के पास जाती है। आरंभ में शक्ति सुविधाएं कुछ हाथों में केंद्रित थीं। झगड़ा यहीं से प्रारंभ हुआ था कि शक्ति सुविधा कुछ हाथों में नहीं रहनी चाहिए, परंतु शक्ति कुछ ही हाथों में केंद्रित रही और बाकी के लोगों में अंतर नहीं आया, बल्कि जिन देशों में कम्युनिस्ट पद्धति नहीं, वहां अवश्य कुछ अंतर आया है।

गलती यह है कि व्यक्ति और समाज का वास्तविक संबंध क्या है, स्वरूप क्या है, इसको लोग समझ नहीं पाए। समाज लोगों को मिलाकर बना है, यह गलत है। व्यक्तियों का समूह समाज नहीं, समाज की अपनी एक सत्ता है, जीवमान सत्ता है उतनी ही, जितनी एक प्राणी की होती है। प्राणी उसका अंग जरूर है लेकिन यह एक निर्जीव अंग जैसा नहीं, जैसे कि मोटर के पुर्जे होते हैं। यह वैसा ही है जैसा एक पूरा पेड़ होता है और उस पेड़ का एक पत्ता। पत्तों को मिलाकर पेड़ नहीं बनता। कोई यह कहेगा क्या कि हाथ, पैर, नाक, कान मिलाकर व्यक्ति बन जाता है? पुर्जों को मिलाकर मोटर बनेगी, पर मनुष्य शरीर के लिए ऐसा नहीं। 19वीं सदी में यही लोग बोलते थे कि जैसी मशीन है, शरीर भी वैसा ही है, जरा जटिल है। परंतु मशीन तो पुर्जे मिलाने से तैयार हो जाती है, शरीर नहीं हो पाता। क्योंकि उसमें प्राण फूंकना जरा टेढ़ा काम है। अभी तक किसी विज्ञानवेत्ता ने इसमें सफलता नहीं पाई।

पंचतंत्र में एक कहानी है कि कुछ पढ़ने वालों में एक को प्राण फूंकने की विद्या आती थी। उसने रास्ते में हड्डियों को देखा तो जोड़-जोड़कर उसका ढांचा खड़ा कर दिया। वह व्याघ्र था। जब प्राण फूंकने लगा तो उसका दूसरा साथी जो व्यावहारिक था, उसे मना करने लगा कि यह जीवित हो जाएगा तो तुझे खा जाएगा। उसके न मानने पर साथी तो पेड़ पर चढ़ गया और इधर जैसे ही व्याघ्र में जान आई। उसने सबसे पहले इसी का शिकार किया। यह कहानी केवल इसलिए है कि विद्या के साथ व्यावहारिकता भी चाहिए। व्यावहारिकता ने उसकी जान बचा दी। लेकिन यह तो एक कहानी है। वस्तुतः कोई प्राण फूंक नहीं सकता।

यह तो सत्य है कि शरीर में एक प्राण है। वास्तव में तभी इसके अंग-प्रत्यंग शरीर के सुख-दुःख को अनुभव करते हैं और इसी नाते सब काम करते हैं। समाज भी एक प्राणवान चीज है। समाज में भी वह गुण है, जो व्यक्ति के अंदर है। मनोवैज्ञानिक तो इसको स्वीकार भी करने लगे हैं कि समाज का मस्तिष्क होता है, जिसे group mind नाम दिया गया है। क्योंकि व्यक्तिगत रूप से जो खून देखकर भी घबराएगा, वह भी राष्ट्र के लिए लड़ता है और फौरन उत्साह से लड़ने के लिए तैयार हो जाता है। जैसे व्यक्ति में भाव होते हैं, कर्म होते हैं, वैसे ही समाज की भावनाएं होती हैं, कर्म होते हैं। यह समाज के सभी व्यक्तियों के भावों या कर्मों का कुल जोड़ नहीं होता। इसके लिए गणित के अनुसार कैलकुलेशन का विचार नहीं किया जा सकता। यदि सबकी ताकत को जोड़ दिया जाए, जैसे राष्ट्रीय आय के लिए करते हैं कि प्रत्येक की आय का योग औसत निकाल लिया, वैसे समाज की शक्ति के लिए नहीं होगा।

समाज की एक सत्ता मानने के बाद समाज की शक्ति का अंकन इस प्रकार नहीं होगा। वह भिन्न वस्तु है। हम उसके एक अंग हैं, परंतु वैसे ही हैं जैसे शरीर का हाथ से संबंध होता है। हम उसके एक अवयव हैं, परंतु हमारी एक स्वतंत्र सत्ता भी है। एक प्रकार के लोग तो यह मानते हैं कि समाज एक सत्ता है और मनुष्य एक पुर्जा मात्र है। दूसरे मानते हैं कि व्यक्ति सत्ता है, समाज समूह मात्र है। दोनों गलत हैं। व्यक्ति की अपनी सत्ता है, समाज की भी उतनी ही प्राणवान सत्ता है। दोनों एक-दूसरे से संबंधित हैं। हाथ शरीर से संबंधित है, परंतु हाथ की अपनी विशेषता है। प्रत्येक जीवाणु की अपनी सत्ता है। वह शरीर की सत्ता से मिलकर काम करते हैं। ▪

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने उज्जैन में महाकाल कॉरिडोर का निरीक्षण किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा, संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने भूमि सुपोषण अभियान-चलो खेत की ओर का शुभारंभ किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कराहल में महिला स्व-सहायता समूह को योजनाओं का हितलाभ प्रदान किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा कूनो नेशनल पार्क में चीता मित्र सम्मेलन में शामिल हुए।

प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने पं. दीनदयाल जी की जंयती पर प्रदेश कार्यालय में पुष्पांजलि अर्पित की।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती पर मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने माल्यार्पण किया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने अमर शहीद भगतसिंह की जयंती पर प्रतिमा स्थल की साफ-सफाई कर माल्यार्पण किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने जबलपुर में अमर शहीद राजा शंकरशाह - कुंवर रघुनाथशाह की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया।

चीता मित्र
चीता मित्र